अध्याय 1

मसीह के सुसमाचार का पौलुस का आत्मकथा रूप में बचाव

(भाग 1)

पौलुस ने अपने पत्र का आरम्भ गलातिया की कलीसियाओं को संक्षिप्त अभिवादन के साथ किया (1:1–5)। उसने उनके लिए किसी भी प्रार्थना को छोड़ दिया और उनके लिए जो उस सुसमाचार से अलग किसी और सुसमाचार का प्रचार करते थे जिसका उसने प्रचार किया था, तुरन्त बाद कठोर डांट दर्ज की (1:6–10)। इस प्रकार से उसने अपने प्रेरित होने और पवित्र आत्मा की ओर से उस पर प्रकट किए गए सत्य सुसमाचार के बड़े बचाव का दावा किया (1:11–24)।

आरम्भिक अभिवादन (1:1–5)

1पौलुस की, जो न मनुष्यों की ओर से, और न मनुष्य के द्वारा, बरन यीशु मसीह और परमेश्वर पिता के द्वारा, जिसने उस को मरे हुओं में से जिलाया, प्रेरित है। 2और सारे भाइयों की ओर से, जो मेरे साथ हैं; गलतिया की कलीसियाओं के नाम। 3परमेश्वर पिता, और हमारे प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे। 4उसी ने अपने आप को हमारे पापों के लिए दे दिया, ताकि हमारे परमेश्वर और पिता की इच्छा के अनुसार हमें इस वर्तमान बुरे संसार से छुड़ाए। 5उस की स्तुति और बड़ाई युगानुयुग होती रहे। आमीन।

आयत 1. पौलुस ने आरम्भ अपनी पहचान लेखक **पौलुस ... प्रेरित** के रूप में करवाते हुए ठेठ पौलुसी तरीके से किया (देखें रोमियों 1:1; 1 कुरिन्थियों 1:1; 2 कुरिन्थियों 1:1; इफिसियों 1:1; कुलुस्सियों 1:1; 1 तीमुथियुस 1:1; 2 तीमुथियुस 1:1; तीतुस 1:1)। यह विवरण परिस्थिति के अनुकूल था क्योंकि गलातिया की कुछ कलीसियाएं पौलुस के प्रेरित होने की प्रामाणिकता पर संदेह कर रहीं थीं, जैसे कुरिन्थुस में बाद में अन्य कलीसियाओं ने किया (1 कुरिन्थियों 9; 2 कुरिन्थियों 10—13)। पौलुस को मालूम था कि उसकी प्रेरित होने की बात पर संदेह किया जा सकता है क्योंकि वह प्रभु की पृथ्वी की सेवकाई के दौरान व्यक्तिगत रूप में उसके साथ नहीं रहा था। परन्तु "जो मानो अधूरे दिनों का जन्मा" (1 कुरिन्थियों 15:8), उसे दमिश्क के मार्ग पर जी उठे प्रभु के तेज भरे दर्शन का अनुभव हुआ था (प्रेरितों 9:1–19; 22:6–16; 26:12–18)।[1] उसे अच्छी तरह से इस बात का पता था कि उसे सब लोगों में विशेषकर अन्यजातियों में उसकी जो उसने देखा और सुना था, गवाही देने के लिए बुलाया गया था।

पौलुस एक प्रामाणिक "प्रेरित" था जिसे ईश्वरीय रूप में यीशु मसीह का दूत ठहराया गया

था (देखें 1:11, 12, 15–17)। अन्य प्रेरितों की तरह उसे यीशु की ओर से जिसके पास "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार" है (मत्ती 28:18) उसका कमिशन मिला था। बाकियों की तरह उसे पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरणा और सामर्थ दी गई थी। सचमुच में वह "दूतों" में गिना जाता था जिन्हें "मेल मिलाप की सेवा" सौंपी गई थी (2 कुरिन्थियों 5:18–20)।

"पौलुस ... प्रेरित" के बीच कोष्ठक में **जो न मनुष्यों की ओर से, और न मनुष्य के द्वारा, बरन यीशु मसीह और परमेश्वर पिता के द्वारा** मिलता है। बड़े ज़ोर के साथ पौलुस ने इस बात की पुष्टि की कि प्रेरित के रूप में उसका बुलाया जाना किसी भी प्रकार से मनुष्य की इच्छा पर आधारित नहीं था। सकारात्मक विकल्प यह था कि उसका बुलाया जाना परमेश्वर की ओर से था; उसे यीशु मसीह की बुलाहट और परमेश्वर पिता की इच्छा के द्वारा प्रेरित होने के लिए नियुक्त किया गया था।

यह सच है कि दमिश्क के मार्ग पर प्रभु के दर्शन के बाद, पौलुस (शाऊल) को नगर में जाने और वहां से यह सुनने के लिए कि उसे क्या करना आवश्यक है का निर्देश दिया गया (प्रेरितों 9:3–6)। फिर भी मानवीय माध्यम हनन्याह जिसे उसको यह निर्देश देने के लिए इस्तेमाल किया गया, इस भूमिका को करने के लिए इतना अनिच्छुक था कि पहले तो उसने प्रभु के साथ बहस की कि क्या किया जाना चाहिए (प्रेरितों 9:10–14)। यकीनन मसीही लोगों के इस खतरनाक सताने वाले का सामना करने की हनन्याह की कोई इच्छा नहीं थी। परन्तु जब यह स्पष्ट हो गया कि यह परमेश्वर की योजना के अनुसार है, तो हनन्याह प्रभु की इच्छा के आगे समर्पण करते हुए पौलुस को बपतिस्मे के पानी तक ले गया (प्रेरितों 22:12–16)। उस अवसर पर हनन्याह ने कहा, "हमारे बापदादों के परमेश्वर ने तुझे ठहराया है" (प्रेरितों 22:14; देखें 1 कुरिन्थियों 1:1; 2 कुरिन्थियों 1:1; गलातियों 1:15–17)।

पौलुस ने "परमेश्वर पिता" की पहचान उसके रूप में करवाई **जिसने** [यीशु मसीह] **को मरे हुओं में से जिलाया**। मसीही संदेश में जी उठने से बढ़कर महत्वपूर्ण क्या बात है? बेशक यीशु ने अपने चेलों को पूरे मानवीय इतिहास की इस सबसे निर्णायक घटना की भविष्यवाणी बार बार की थी (मरकुस 8:31; 9:9, 31; 10:34), असल में उन्हें इसकी तब तक समझ नहीं आई थी जब तक पिन्तेकुस्त के दिन उन्हें पवित्र आत्मा के साथ भरपूर नहीं किया गया (प्रेरितों 2:22–24, 29–33; देखें यूहन्ना 7:39; 12:16; 14:26)। यीशु के जी उठने के गवाह बनना बेशक प्रेरितों की प्रमुख (यदि सबसे प्रमुख नहीं) भूमिका थी (प्रेरितों 1:8, 21–26; 2:22–24, 29–33; 3:14, 15; 5:30–32; 10:39–43)।

पौलुस के पत्रों में यीशु का जी उठना निर्विवाद प्रमाण के रूप में दिया गया है कि वह परमेश्वर का पुत्र है (रोमियों 1:4; कुलुस्सियों 1:18)। इसके अलावा यह गारंटी है कि मसीही लोग उसके साथ जी उठेंगे (रोमियों 8:11; 1 कुरिन्थियों 15:12–24; 1 थिस्सलुनीकियों 4:13–18)। पौलुस के लिए "क्रूस पर चढ़ाया हुआ मसीह" संदेश "परमेश्वर की सामर्थ और परमेश्वर का ज्ञान" था (1 कुरिन्थियों 1:23, 24)। उसने कुरिन्थियों को बताया था कि उसके पहली बार उनके पास आने के समय उसके मन में एक ही बात थी: "क्योंकि मैंने यह ठान लिया था कि तुम्हारे बीच यीशु मसीह वरण क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह को छोड़ और किसी बात को न जानूंगा" (1 कुरिन्थियों 2:2)। परन्तु प्रेरित का संदेश क्रूस पर ही खत्म नहीं हो

गया था। रोम में उसने मसीही लोगों को याद दिलाया कि उद्धार जी उठने में विश्वास पर निर्भर है। उसने लिखा, "यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे, और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा" (रोमियों 10:9)। अपने जवान आश्रित तीमुथियुस को अपने अंतिम निर्देशों में पौलुस ने इसे आवश्यक माना: "यीशु मसीह को स्मरण रख, जो दाऊद के वंश से हुआ, और मरे हुओं में से जी उठा; और यह मेरे सुसमाचार के अनुसार है। जिस के लिए मैं कुकर्मी की नाईं दुख उठाता हूं" (2 तीमुथियुस 2:8, 9क)।

आयत 2क. पौलुस ने सलाम में **सारे भाइयों** को भी शामिल किया जो उसके साथ थे। "भाइयों" (*adelphoi*), नये नियम में कई तरीकों से इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द है। (1) इसे किसी परिवार के लड़कों के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है, जैसे यीशु के भाई (मत्ती 13:55)। (2) कई बार यह शब्द यहूदी भाइयों यानी सामान्य सजाति कुल के द्वारा साथी इस्राएलियों के होने का संकेत देता है (रोमियों 9:1-5)।[2] (3) "भाइयों" साथी मसीहियों का भी संदेश दे सकता है चाहे वह सजाति यहूदी हों या अन्यजाति, पुरुष हों या स्त्री (देखें 3:26-29; इफिसियों 2:11-22)। यह अंतिम अर्थ नये नियम में सबसे आम है।

उन भाइयों की पहचान जो इस पत्र के लिखने के समय पौलुस के साथ थे पता नहीं है, क्योंकि लिखे जाने का समय और स्थान दोनों ही पक्के तौर पर नहीं बताया जा सकता। यदि यह पत्र पहली मिशनरी यात्रा के बाद लगभग 48-49 ई. में लिखा गया तो पौलुस के साथ जो भाई थे उनमें बरनबास और अंताकिया की कलीसिया से और भी शामिल थे (प्रेरितों 14:26-28)।

उन बहुत से प्रभावशाली गुणों में जो पौलुस में थे, उसमें अपने गिर्द कई पुरुषों तथा कुछ स्त्रियों को इकट्ठा करने की क्षमता थी जो सुसमाचार को फैलाने में उसके साथ सेवा करने को तैयार थे।[3] कुछ ने वचन की सेवकाई में उसके साथ सहयोग किया (उदाहरण के लिए, बरनबास और सीलास ने)। अन्यों को उसकी सेवकाई को जारी रखने के लिए जब उसे किसी खास इलाके में जाना होता था, पीछे छोड़ दिया गया (उदाहरण के लिए लूका फिलिप्पी में रहा[4])। कुछ ने उसके साथ सहयोगियों के रूप में काम किया (प्रेरितों 13:5; 24:23; 2 तीमुथियुस 4:11)। कुछ एक ने दूतों या हरकारों के रूप में सेवा की (इफिसियों 6:21; कुलुस्सियों 4:7), जबकि अन्य उस चंदे को लेकर जो पौलुस यहूदिया के निर्धनों के लिए इकट्ठा कर रहा था उसके साथ गए (प्रेरितों 20:4; 2 कुरिन्थियों 8:16-24)। यह भी सम्भावना है कि "प्रिय वैद्य" लूका ने उसकी कठिन मिशनरी यात्राओं के दौरान जब पौलुस को बूढ़ा होने के कारण जेल के जीवन की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था, उसके निजी डॉक्टर के रूप में कम से कम अंशकालीन सेवा की (कुलुस्सियों 4:14; फिलेमोन 24; 2 तीमुथियुस 4:11)।

आयत 2ख. पौलुस ने अपन पत्र **गलातिया की कलीसियाओं के नाम** सम्बोधित किया। दो मुख्य विचार उठते हैं कि यह कलीसियाएं कहां थी। "नॉर्थ गलेशियन थ्यौरी" उत्तर केन्द्रीय एशिया माइनर के सीमित इलाके में सजातीय गलातिया के प्रमुख नगरों में ध्यान दिलाती है। यह इलाका गलिक कबीलों द्वारा बसाया गया था जो गाउल के रोमी प्रदेश (आधुनिक फ्रांस) से आए थे। इस मामले में यह कलीसियाएं ऐसे नगरों में रही होंगी जैसे पेसियुस, तेवियुम और अंकिरा (आधुनिक अंकारा)। दूसरी ओर "साउथ गलेशियन थ्यौरी" अंताकिया, इकोनियुम, लुस्त्रा और

दिरबे की ओर इशारा करती है। इन नगरों में सबसे पहले सुसमाचार पौलुस और उसके साथियों द्वारा उन आरम्भिक मिशनरी यात्रा पर सुनाया गया था (प्रेरितों 13; 14)। "साउथ गलेशियन थ्यौरी" के लिए प्रमाण ठोस है, क्योंकि उत्तरी नगरों का बाइबल के वचन में कोई उल्लेख भी नहीं है। यदि पौलुस ने उत्तरी गलातिया में सुसमाचार सुना दिया होता, तो सम्भावना है कि इस तथ्य को उसके अपने लेखों में और/या प्रेरितों के काम में दर्ज पौलुस की यात्राओं के लूका के विवरण में उल्लेख किया होता। (और जानकारी के लिए, देखें *परिचय: प्राप्तकर्त्ता,* पृष्ठ 7–11।)

आयत 3. गलातियों की कलीसिया को सम्बोधित करते हुए पौलुस ने **परमेश्वर पिता, और हमारे प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे** कहकर सलाम भेजा। इन शब्दों में उसकी पत्रियों में पाया जाने वाला प्रचलित सलाम है (रोमियों 1:7; 1 कुरिन्थियों 1:3; 2 कुरिन्थियों 1:2; इफिसियों 1:2; फिलिप्पियों 1:2; 2 थिस्सलुनीकियों 1:2; फिलेमोन 3)।

पौलुस द्वारा इस्तेमाल किया गया "अनुग्रह" शब्द मसीही लोगों द्वारा यूनानी शब्द *chairein* का आम इस्तेमाल है जिसका मूल अर्थ है "आनन्द करना।" अन्यजातियों में अभिवादन के रूप में इसके परम्परागत रूप में इसका अर्थ था "नमस्कार" (देखें प्रेरितों 15:23; 23:26; याकूब 1:1)। दूसरी ओर "अनुग्रह" (*charis*) महत्व से भरपूर है। इसमें परमेश्वर का प्रेम व्यक्त होता है जो मनुष्य को खोए होने से बचा सकता है। यह तसल्ली देने वाला शब्द व्यक्ति के विचारों को आत्मिक क्षेत्र की महिमा में ले जाता है। यह ध्यान में परमेश्वर के उस भेद को लाता है जो मसीह के सुसमाचार के द्वरा प्रगट किया गया है।

"अनुग्रह" शब्द में पौलुस ने परम्परागत यहूदी अभिवादन "शांति" (*eirēnē*) को जोड़ा जो इब्रानी/इब्रानी शब्द जो (*shalom*) को दर्शाता है। इन दोनों अभिवादनों को जोड़े जाने को "पौलुसी और उत्तर-पौलुसी पत्रों में ... एक नई और विशेष उन्नति" कहा गया।[5] यह नहीं सोचना चाहिए कि "शांति" केवल परम्परागत यहूदी सलाम है, विशेषकर इस मिश्रण और संदर्भ में इस्तेमाल किए जाने पर। जब पौलुस के पत्र पढ़े जाते थे तो मसीही लोगों के मन में स्वाभाविक रूप में उस उद्धार के द्वारा जो मसीह में परमेश्वर की शांति होने की बात आती है। आखिर "अनुग्रह" और "शांति" का अभिवादन तो "परमेश्वर पिता और हमारे प्रभु यीशु मसीह की ओर से" निकला था। यहूदियों और अन्यजातियों के सम्बन्ध में पौलुस ने और कहीं पर लिखा है:

> पर अब तो मसीह यीशु में तुम जो पहिले दूर थे, मसीह के लोहू के द्वारा निकट हो गए हो। क्योंकि वही हमारा मेल है, जिस ने दोनों को एक कर लिया: और अलग करने वाली दीवार को जो बीच में थी, ढा दिया। और अपने शरीर में बैर अर्थात वह व्यवस्था जिस की आज्ञाएं विधियों की रीति पर थीं, मिटा दिया, कि दोनों से अपने में एक नया मनुष्य उत्पन्न करके मेल करा दे (इफिसियों 2:13–15; देखें गलातियों 3:28)।

आयत 4. यीशु को **हमारे परमेश्वर और पिता की इच्छा के अनुसार अपने आपको हमारे पापों के लिए दे** देने वाले के रूप में बताया गया है। परमेश्वर के प्रेम को मनुष्य के उद्धार को पूरा करने के लिए उसके अपने इकलौते पुत्र को देने से बढ़कर और कहीं स्पष्ट व्यक्त नहीं किया गया (यूहन्ना 3:16; रोमियों 5:8)। इस उदाहरण में जो दिखाया गया है वह मसीह का

प्रेम ही है, परन्तु पिता की इच्छा और पुत्र की तैयारी वचन में आपस में इतनी गुथी हुई है कि किसी वास्तविक अंतर को देख पाना सचमुच में असम्भव है।

यीशु ने ईश्वरीय प्रेम की परम अभिव्यक्ति के रूप में चाहे "अपने आपको दे दिया" (देखें 1 यूहन्ना 3:16), परन्तु उसे प्रार्थना में अपनी आने वाली मृत्यु के विरुद्ध पूरी सामर्थ से संघर्ष करना पड़ा और संताप उठाना पड़ा कि इसका कोई और तरीका निकल आए। क्योंकि कोई और तरीका नहीं था इसलिए उसने पिता की इच्छा को स्वीकार किया (मत्ती 26:36-46; लूका 22:39-46)। इब्रानियों के लेखक ने कहा, "पुत्र होने पर भी उसने दुख उठा उठाकर आज्ञा माननी थी" (इब्रानियों 5:8)। आत्मिक सतह पर यह और भी अधिक कठिन होगा, जिसमें "परमेश्वर का पवित्र जन" पाप बनने और मनुष्यजाति के पापों का कठोरतम दण्ड सहकर श्राप तक बन गया (मरकुस 1:24; 2 कुरिन्थियों 5:21; गलातियों 3:13)।

पौलुस ने कहा कि मसीह के बलिदान का खास उद्देश्य था ताकि **हमें इस वर्तमान बुरे संसार से छुड़ाए**। अनुवादित शब्द "छुड़ाए का यूनानी शब्द (*exaireō*)" और प्रेरितों के काम पुस्तक में अलग अलग रूपों में पांच बार मिलता है (प्रेरितों 7:10, 34; 12:11; 23:27; 26:17), "किसी बिल्कुल सही समय पर बचाने के नाटकीय कार्य को दर्शाता है।"[6]

"इस वर्तमान बुरे संसार" वाक्यांश से क्या अभिप्राय है? "संसार" का अनुवाद यूनानी शब्द (*aiōn*) से किया गया है जिसका इस्तेमाल समय की अवधि ("काल" या "युग") या भौतिक संसार के लिए हो सकता है। इसका इस्तेमाल चाहे इतिहास के विशेष काल की विशेषताओं को भी दर्शाता हो सकता है परन्तु किसी ऐसी अवधि में रहने वाले के संदर्भ में इसका इस्तेमाल कभी नहीं हुआ।[7] इस संदर्भ में "छुटकारा जिसकी पौलुस ने [बात की] भौतिक संसार से नहीं बल्कि उस बुराई से है जिसके यह कब्जे में है।"[8] यह अवधारणा यूहन्ना 17:15 में यीशु की प्रार्थना से मेल खाती है: "मैं यह विनती नहीं करता कि तू उन्हें जगत से उठा ले; यह कि तू उन्हें उस दुष्ट से [या केवल 'बुराई से'] बचाए रख।" यह "परीक्षा, पाप और कानूनी दण्ड से" छुड़ाना है।[9]

आयत 5. पौलुस ने अपने इस अभिवादन को संक्षिप्त प्रशंसा के साथ समाप्त किया, जो कि गलातियों के पत्र के लिए निराली है। उसने लिखा **उसकी स्तुति और बढ़ाई युगानयुग होती रहे। आमीन।** यह प्रशंसा उसे मसीही लोगों के लिए उसके सामान्य आभार के विकल्प के रूप में लिखी गई हो सकती है जिन्हें उसने सम्बोधन किया (देखें रोमियों 1:8; 1 कुरिन्थियों 1:4; फिलिप्पियों 1:3; कुलुस्सियों 1:3; 1 थिस्सलुनीकियों 1:2; 2 थिस्सलुनीकियों 1:3; फिलेमोन 4)। अन्य शब्दों में क्योंकि उसने गलातिया के भाइयों की कोई प्रशंसा नहीं की इसलिए उसने सीधे परमेश्वर की प्रशंसा कर दी। एक और सम्भावना यह है कि यह 1:4 में सुसमाचार की समीक्षा से प्रोत्साहित हुआ होगा।

आयत 5 में "उसकी" (*ho*) का सर्वनाम निकटतम पूर्वपद आयत 4 में "हमारे परमेश्वर और पिता" है। आयत 5 में "स्तुति और बढ़ाई" परमेश्वर पिता की गई प्रतीत होती है चाहे यह सम्भावित रूप में आयत 3 के अंत में पीछे "प्रभु यीशु मसीह" की ओर भी ले जा सकती है। "उसकी" का संक्षिप्त पूर्वपद चाहे जो भी हो, पिता की महिमा में पुत्र भी सहभागी है। यीशु ने हमारे पापों के लिए दुख सहा और मर गया इस कारण अब वह "महिमा और आदर का मुकुट पहने हुए" है (इब्रानियों 2:9)। पृथ्वी की अपनी सेवकाई के दौरान यीशु ने प्रार्थना की कि वह

महिमा जो उसने पृथ्वी के अपने मिशन को स्वीकार करने के लिए छोड़ा था, वह बहाल हो जाए: "अब हे पिता, तू अपने साथ मेरी महिमा उस महिमा से कर जो जगत की सृष्टि से पहले, मेरी तेरे साथ थी" (यूहन्ना 17:5)। "जगत की सृष्टि से पहले" पिता के साथ यीशु की यह महिमा कितने युगों तक थी?

आयत 4 में "इस वर्तमान बुरे संसार" के हवाले के बाद आयत 5 में "युगानयुग" (*eis tous aiōnas tōn aiōnōn*) (शब्द को रेखांकित करते हुए आयत 5 में दोबारा यूनानी शब्द *aiōn* ("युग") शब्द इस्तेमाल हुआ है। इस वाक्यांश का मूल अनुवाद "हर अनन्तहीन भावी युगों तक" का विचार देते हुए "युगों युगों तक" अनुवाद किया जा सकता है। गुणात्मक रूप में कहने पर यह विचार "आने वाले अद्वितीय रूप में सभी महिमामय युगों तक" है।

किसी और सुसमाचार के लिए पौलुस का विरोध (1:6–10)

किसी और सुसमाचार को सुनाने वालों की पौलुस की निंदा (1:6–9)

6मुझे आश्चर्य होता है, कि जिस ने तुम्हें मसीह के अनुग्रह से बुलाया उस से तुम इतनी जल्दी फिर कर और ही प्रकार के सुसमाचार की ओर झुकने लगे। 7परन्तु वही दूसरा सुसमाचार है ही नहीं: पर बात यह है, कि कितने ऐसे हैं, जो तुम्हें घबरा देते, और मसीह के सुसमाचार को बिगाड़ना चाहते हैं। 8परन्तु यदि हम, या स्वर्ग से कोई दूत भी उस सुसमाचार को छोड़ जो हम ने तुम को सुनाया है, कोई और सुसमाचार तुम्हें सुनाए, तो स्रापित हो। 9जैसा हम पहिले कह चुके हैं, वैसा ही मैं अब फिर कहता हूं, कि उस सुसमाचार को छोड़ जिसे तुम ने ग्रहण किया है, यदि कोई और सुसमाचार सुनाता है, तो स्रापित हो। अब मैं क्या मनुष्यों को मनाता हूं या परमेश्वर को? क्या मैं मनुष्यों को प्रसन्न करना चाहता हूं?

अपने पत्र के मुख्य भाग का आरम्भ करते हुए पौलुस ने मसीही लोगों को उन लोगों के विरुद्ध चेतावनी दी जो किसी और सुसमाचार का प्रचार कर रहे थे। उसने कहा कि असल में "कोई और सुसमाचार है ही नहीं!"

आयत 6. पौलुस अत्याधिक चकित था कि गलाती मसीही किस ओर जा रहे थे। **मुझे आश्चर्य होता है** यूनानी क्रिया शब्द *thaumazō* का अनुवाद है। अन्य संस्करणों में है "मैं अचंभित हूं" (KJV; NKJV), "मैं हैरान हूं" (NIV; NRSV) और "मैं स्तब्ध हूं" (CEV; NLT)। *Thaumazō* सकारात्मक महत्व का था या नकारात्मक महत्व का यह दिए गए संदर्भ पर निर्भर करता है। यहां पर यह निश्चित रूप में नकारात्मक है।

पौलुस गलातियों की ऐसी नासमझी से हक्का बक्का था। इस पत्र के लिखने से थोड़ी देर पहले, जब वह उनके साथ था, उसे (अपने संदेश के साथ) इन भाइयों के द्वारा गले लगाया गया था। 4:15 में उसने उनके बलिदानपूर्वक प्रेम के विषय में लिखा: "तो वह तुम्हारा आनन्द मनाना कहां गया? मैं तुम्हारा गवाह हूं, कि यदि हो सकता, तो तुम अपनी आंखों भी निकालकर मुझे दे देते।" फिर भी कुछ लोग उसके और शुद्ध समाचार के विरुद्ध हो गए थे। 3:1 में उसने पूछा, "हे

निर्बुद्धि गलतियो, किस ने तुम्हें मोह लिया है? तुम्हारी तो मानो आंखों के साम्हने यीशु मसीह क्रूस पर दिखाया गया!" उन्हें पवित्र आत्मा मिला था और परमेश्वर ने उनके बीच आश्चर्यकर्म किए थे (3:3, 5)। वे कैसे फिर सकते थे?

इतनी जल्दी (*houtōs tacheōs*) शब्द गलातियों के पत्र के लिखे जाने का समय पहले होने के प्रमाण को समर्थन देते हैं। बेशक यह वाक्यांश अपने आप में निर्णायक न हो पर "इतनी जल्दी" का अर्थ अधिक हो जाता है जब कोई पत्र के लिखे जाने का समय पहली मिशनरी यात्रा के तुरन्त बाद मानता है–जो कि गलातिया की मण्डलियों की स्थापना के अधिक देर बाद की बात नहीं है (प्रेरितों 13; 14)। इस प्रमाण में जोड़ने के लिए गलातियों की पुस्तक में तीन बार बरनबास का नाम आया है जो पहली यात्रा पर पौलुस के साथ था (2:1, 9, 13)। परन्तु दूसरी यात्रा में पौलुस के सहकर्मी सीलास का नाम पत्र में कहीं नहीं आता (पौलुस 15:40)। इन तथ्यों को पत्र के लिखे जाने के समय के पहले के और प्रमाण के रूप में माना जा सकता है। (और जानकारी के लिए, देखें *परिचय: आरम्भ का समय और स्थान,* पृष्ठ 11 और 12।)

पौलुस चकित था कि अपने मनपविर्तन के बाद इतनी जल्दी गलातिया के मसीही मसीह से **फिर** रहे थे। "फिर" का अनुवाद *metatithēmi* से किया गया है जिसका अर्थ है। "फिर जाना" या "बेदीन हो जाना।" निश्चय ही इन भाइयों का इरादा मसीह से फिर जाने का नहीं था, न ही उन्हें यह अहसास था कि वे ऐसा कर रहे हैं, परन्तु पौलुस ने उन्हें स्पष्ट किया कि मसीह में छुटकारे की परमेश्वर की योजना का भाग होने के लिए व्यवस्था के कामों की शर्त रखना विश्वासत्याग ही है (5:4)। व्यवस्था में वापस जाना एक स्थिति से दूसरी स्थिति में पूर्ण बदलाव था यानी उस अनुग्रह से जो मसीह में है गिर जाना और उस गुणों पर आधारित कामों के सिस्टम में जो व्यवस्था के अनुसार है वापस चले जाना (3:11, 12; देखें निर्गमन 19:5, 8; लैव्यव्यवस्था 18:4, 5)। व्यवस्था के अनुसार धार्मिकता सच थी जिसे अपने आप में धर्मी होने से कमाया जाता था (रोमियों 10:1–5; फिलिप्पियों 3:8, 9[10])।

गलातियों की पुस्तक में संदर्भ लगातार यहूदी मत की शिक्षा देने वालों की समस्या से सम्बन्धित है जो यह कल्पना नहीं कर सकते थे कि "अशुद्ध" अन्यजाति व्यवस्था की रीतियों और शर्तों को माने बिना मसीह में मिलने वाली धार्मिकता को सीधे प्राप्त कर सकते थे (देखें प्रेरितों 15:1)। गलातियों की पूरी पत्री इसी पृष्ठभूमि के विरुद्ध लिखी गई। ओ. पामर रॉबर्टसन का मानना था कि पौलुस इस पत्र में पुरानी और नई वाचाओं के बीच अंतर को स्थापित कर रहा था: "पूरी चर्चा में पौलुस का अंतिम उद्देश्य वर्तमान यहूदी शिक्षा देने वालों के कर्मकाण्डवाद से नई वाचा के अनुग्रह को अलग करना [था] (गलातियों 2:14–16; 3:1; 4:31—5:2)।"[11]

व्यवस्था को मानने की कोशिश करते हुए गलातिया के लोग उसे त्याग रहे थे जिसने उन्हें **मसीह के अनुग्रह में बुलाया था**। पूर्वसर्ग "*en*" NASB में जिसका अनुवाद "by" (के द्वारा) हुआ है, का अनुवाद "में" हो सकता है (ASV; NKJV)। परन्तु उद्धार के माध्यम के रूप में *en* अनुग्रह से अधिक मेल खाता है इसलिए "के द्वारा" सही है। मसीही व्यक्ति को परमेश्वर की इच्छा के अनुसार मसीह के अनुग्रह "के द्वारा" बुलाया गया है। इब्रानियों के लेखक ने मसीह की बुलाहट का वर्णन ऐसे ही शब्दों में मसीही युग के परमेश्वर के प्रधान याजक के रूप में मसीह की बुलाहट में किया: "यह आदर का पद कोई अपने आप से नहीं लेता, जब

तक कि हारून के समान परमेश्वर की ओर से ठहराया न जाए" (इब्रानियों 5:4)। पौलुस ने तीमुथियुस को लिखा कि परमेश्वर ने हमें "पवित्र बुलाहट से बुलाया और यह हमारे कामों के अनुसार नहीं; पर उसके उद्देश्य और उस अनुग्रह के अनुसार है जो मसीह में सनातन से हम पर हुआ है" (2 तीमुथियुस 1:9)। बुलाए जाने की सम्पूर्ण थियोलोजी पुराने और नये दोनों नियमों में मिलती है। समय के आरम्भ होने से पहले "उसके उद्देश्य और अनुग्रह के अनुसार" हमें संत यानी पवित्र लोग बनने के लिए बुलाया जाना एक ऐसी अवधारणा है जिससे हमारे मनों में भक्ति और भय भर जाना चाहिए।

गलातियों को चाहे "मसीह के अनुग्रह की ओर से बुलाया" गया था पर कुछ लोगों ने **और ही प्रकार के सुसमाचार** की ओर झुक (*eis heteron euangelion*) कर मसीह को छोड़ दिए। उपसर्ग *eis* का अर्थ "तक," "में" और या "के उद्देश्य" के लिए हो सकता है। इस संदर्भ में विचार किसी एक चीज़ के *लिए* किसी और को छोड़ने का है जैसे कोई आदमी किसी एक स्त्री *के लिए* छोड़ देता (या तलाक दे देता) है। गलातियों को यह अहसास नहीं होगा कि सुसमाचार में व्यवस्था की आज्ञा सूचक बातें मिलाने से एक बड़ा विनाशकारी चलन बन जाना था। फिर भी पौलुस ने उन्हें समझाया कि ऐसे कार्यों का अर्थ मसीह के उद्धार को कर्मकांडी सिस्टम में बदल देने से कम नहीं है जिसके द्वारा किसी का उद्धार नहीं होता (3:10–12)।

आयत 7. यह "और ही प्रकार का सुसमाचार" (1:6) **दूसरा सुसमाचार है ही नहीं** था। तकनीकी रूप में कहें तो "और ही प्रकार" के लिए यूनानी शब्द (*heteros*) का अर्थ किसी ऐसी चीज़ के लिए हो सकता है जो अलग या बेमेल हो। "दूसरा" (*allos*) का अर्थ आम तौर पर "अतिरिक्त" होता है। इन दोनों यूनानी शब्दों का इस्तेमाल कई बार दिखावटी शैली की विविधता के समानार्थी के रूप में किया जाता था।[12] शायद यहां पर पौलुस का इरादा उनके अर्थों में बड़े अंतर को दिखाने का नहीं था। मतलब यह है कि दोनों में से जिस भी शब्द का इस्तेमाल किया जाए सुसमाचार ("शुभ समाचार") को छोड़ जिसका प्रचार उसने गलातिया में आरम्भ में किया था कोई और शुभ समाचार "है ही नहीं।" चाहे मूल पवित्र शास्त्र में "रीयली" शब्द नहीं है परन्तु NASB में इसे शामिल करना इस वचन को अर्थ देता है।

आयत के शेष भाग में दुखद परिस्थिति दिखाई देती है: **पर बात यह है कि कितने ऐसे हैं जो तुम्हें घबरा देते, और मसीह के सुसमाचार को बिगाड़ना चाहते हैं।** "कितने" यहूदी मत की शिक्षा देने वाले पौलुस के विरोधियों का संकेत है। यह लोग वैसे ही थे जैसे लोगों का सामना यरूशलेम में किया था, जिन्हें उसने 2:4 में "झूठे भाइयों के कारण हुआ जो चोरी से घुस आए थे, कि उस स्वतंत्रता का जो मसीह यीशु में हमें मिलाती है, भेद लेकर हमें दास बनाएं" (देखें 4:17; 5:10; 6:12, 13)। ऐसे लोग यहूदी मत की शिक्षा देने वाले गलातियों को "घबरा" भी रहे थे। "घबरा देते" यूनानी शब्द *tarassō* से लिया गया है जिसका अर्थ है "अंदर खलबली मचाना, उत्तेजित करना, परेशान करना, बेचैन करना, उलझन में डालना।"[13] यह शब्द प्रेरितों 15:24 वाली यरूशलेम की सभा के बाद अन्यजाति भाइयों को मिलखे पत्र में मिलता है: "हमने सुना है कि हम में से कुछ ने वहां जाकर, तुम्हें अपनी बातों से घबरा दिया [*tarassō*]; और तुम्हारे मन उलट दिए हैं।"

अपने संदेश के द्वारा यहूदी मत की शिक्षा देने वाले "मसीह के सुसमाचार को बिगाड़

[रहे]" थे। "बिगाड़" के लिए पौलुस के शब्द (*metastrephō*) का अर्थ "बदलना" या "पलटना" हो सकता है। नये नियम में यह शब्द दो अन्य वचनों में मिलता है। उन वचनों में किसी चीज़ को आम तौर पर उसके बिल्कुल उलट में बदला जा रहा है। सप्तति अनुवाद (LXX) में योएल 2:31 को उद्धृत करते हुए पतरस ने प्रेरितों 2:20 में कहा कि "सूर्य अंधेरा और चांद लहू का *हो जाएगा*।" याकूब 4:9 कहता है, "तुम्हारी हंसी शोक में और तुम्हारा आनन्द उदासी में बदल जाएगा।" इन वचनों से "बिगाड़" के लिए यूनानी शब्द से सिखाया जाने वाला बड़ा बदलाव समझ में आता है।

मसीह में स्वतन्त्रता पाने वालों पर व्यवस्था की विधियां थोपना सचमुच में सुसमाचार का मूल बिगाड़ ही है। योएल 2:31 के शब्दों में वर्णित बदलाव के चरम की तरह, मसीही लोगों पर व्यवस्था को थोपना उन्हें "मसीह के तेजोमय सुसमाचार के प्रकाश" से उनकी निराशा के अंधेरे में अविश्वासियों के लिए जिनकी बुद्धि "इस संसार के ईश्वर ने अंधी कर दी है" में बदलने के जैसा है (2 कुरिन्थियों 4:4)।

इसे आसानी से समझा जा सकता है कि यहूदी मसीही, जिसकी व्यवस्था में गहरी आस्था थी और उसे अन्यजातियों के साथ किसी भी प्रकार के सम्बन्ध की मनाही थी, उन्हें तुच्छ समझने की परीक्षा में आसानी से पड़ सकता था। उसे भरोसा होगा कि वह "मैं अंधों का अगुआ, और अंधकार में पड़े हुओं की ज्योति, और बुद्धिहीनों को सिखाने वाला और बालकों का उपदेशक हूं" (रोमियों 2:19, 20)। अंत में चाहे वह ऐसा हो जो "व्यवस्थापक तो होना चाहते हैं, पर जो बातें कहते और जिन को दृढ़ता से बोलते हैं, उन को समझते भी नहीं" (1 तीमुथियुस 1:7)।

मसीह में विश्वास लाने पर यहूदी मत की शिक्षा देने वाले भाइयों को अविश्वासी नहीं माना जाना चाहिए। फिर भी इतने यहूदी विश्वासियों के अन्यजातियों को अपने बराबर मानने की बात स्वीकार न कर पाना पौलुस के समय की कलीसिया की सबसे बड़ी समस्याओं में से एक थी (देखें 2:11, 12; प्रेरितों 11:1–3)।

आयत 8. प्रेरित किसी भी कारण से असली सुसमाचार को बदल नहीं सकता था। पक्के इरादे के साथ उसने घोषणा कर दी, **परन्तु यदि हम, या स्वर्ग से कोई दूत भी उस सुसमाचार को छोड़ जो हम ने तुम को सुनाया है, कोई और सुसमाचार तुम्हें सुनाए, तो शापित हो!** कोयनि यूनानी में सशर्त वाक्यों ("यदि" वाले वाक्यांशों) की कई अलग अलग संरचनाएं हैं। क्रिया के संशयार्थ सूचक रूप के साथ यह शब्द *ean* और असम्भव सम्भावना का संकेत देता है। बहुवचन सर्वनाम "हम" का इस्तेमाल करके पौलुस अपने साथ साथ गलातिया में पहली बार मिशन में अपने साथी सहकर्मी बरनबास का नाम भी ले रहा था। यानी गलातियों के लिए किसी और सुसमाचार के प्रचार की बात सोचना भी अकल्पनीय था।[14] पौलुस का "स्वर्ग से कोई दूत" का हवाला 1 कुरिन्थियों 13:1 वाले "स्वर्गदूतों की बोलियां" की तरह ही अतिश्योक्ति का मामला होगा। प्रेरित ने कहा कि किसी और सुसमाचार को सुनाने के लिए स्वर्ग का ऐसा दूत भी इस शाप के अधीन है!

पौलुस का "परन्तु यदि" ज़ोरदार ढंग से निश्चित परिणाम का दावा करता है कि अगर ऐसा हो गया; यह किसी के ऊपर भी जो सुसमाचार के संदेश को बदलने की कोशिश करता है परमेश्वर के श्राप (*anathema*) को दृढ़ करता है। दण्ड की यह धमकी उद्धार दिलाने वाले

सुसमाचार के बड़े मोल पर बल देती है, जो समय के आरम्भ से परमेश्वर के मन में गुप्त भेद था (देखें इफिसियों 3:9)। यह संदेश खोए हुओं के उद्धार के लिए परमेश्वर की पहले से ठहराई हुई योजना था यानी सृष्टि में उसका मुख्य उद्देश्य जो उसके पुत्र में साकार होता है। यह प्रेम, अनुग्रह और दया का स्व-प्रकाशन है। किसी को "अनन्त जीवन के [इन] वचनों" के साथ जो विशेष रूप से मसीह में मिलते हैं, छेड़छाड़ नहीं करनी चाहिए (यूहन्ना 6:68)!

"को छोड़ जो हमने तुम को सुनाया है" वाक्यांश में "को छोड़" पूर्वसर्ग (*para*) का अनुवाद है। इस शब्द का अर्थ "के अतिरिक्त," "के अलावा," "के बजाय," "से अधिक," या "को छोड़", "के सिवाय।" इस संदर्भ में, पौलुस का अर्थ स्पष्ट है कि परमेश्वर के वचन में कोई कभी न "जोड़ें" या न "इसमें से निकाले।" यह चेतावनी नये नियम के साथ साथ पुराने नियम में भी मिलती है (व्यवस्थासार 4:2; 12:32; नीतिवचन 30:5, 6; प्रकाशितवाक्य 22:18, 19)। गलातियों के नाम पत्र की खास बात यह थी कि सुसमाचार में व्यवस्था की विधियों को मिलाने की मनाही है।

NASB आयत 8 का अंतिम भाग इस प्रकार है, "वह शापित हो!" क्रिया शब्द (*estō*) क्रिया होना (*eimi*) का अन्यपुरुष आज्ञार्थक है और अंग्रेज़ी या हिंदी में इसे सही सही बना पाना कठिन है। शायद इसका बेहतरीन अनुवाद "परमेश्वर करे कि वह शापित हो!" या "उसे शाप लगे!" होगा। यह केवल पौलुस की इच्छा नहीं थी।[15] बल्कि पौलुस स्वयं प्रभु की ओर से ठहराया हुआ दूत था (1:1), इसलिए जब उसने शाप की घोषणा कि तो इसमें स्वय परमेश्वर की घोषणा की पूरी ताकत थी।

आयत 9. पौलुस ने आयत 8 के संदेश को दोहराया: **जैसा हम पहले कह चुके हैं, वैसा ही मैं अब फिर कहता हूं कि उस सुसमाचार को छोड़ जिसे तुम ने ग्रहण किया है, यदि कोई और सुसमाचार सुनाता है, तो शापित हो!** यह दोहराना दिखाता है कि पौलुस सुसमाचार के किसी भी बदलाव को जिसका उसने और बरनबास ने इन कलीसियाओं में प्रचार किया था किसी भी प्रकार के बदलाव को कितनी गम्भीरता से देखता है। जब हम नये नियम में शक्तिशाली शब्दों की तलाश करते हैं तो कई आयतें, आयत 8 और 9 के जितनी ही कठोर मिल सकती हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि सांस्कृतिक विचार, सदियों से बदलते बदलते बदलना और हाल ही की धर्मशास्त्रीय सनकें पौलुस की बातों के बल और निश्चित होने को बदल नहीं सकतीं। सुसमाचार में बदलाव का अर्थ शाप होना है! इस शिक्षा को नकारने वाले सब लोगों के लिए विपत्ति का आना तय है।

पौलुस की इच्छा मनुष्यों को नहीं, परमेश्वर को प्रसन्न करने की (1:10)

[10]अब मैं क्या मनुष्यों को मनाता हूं या परमेश्वर को? क्या मैं मनुष्यों को प्रसन्न करना चाहता हूं? यदि मैं अब तक मनुष्यों को प्रसन्न करता रहता तो मसीह का दास न होता।

आयत 10. पौलुस को हर दिशा से यहूदी मत की शिक्षा देने वाले अपने विरोधियों का सामना करना पड़ता था। उसने पूछा, **अब मैं क्या मनुष्यों को मनाता हूं या परमेश्वर को? क्या मैं मनुष्यों को प्रसन्न करना चाहता हूं?** यहूदी मत की शिक्षा देने वालों ने पौलुस पर

व्यवस्था की आवश्यक शर्तों को विशेषकर उन बातों को जो अन्यजातियों के लिए अप्रिय हों, निकालकर अपने सुनने वालों को समझाने के लिए सुसमाचार को नया रूप दे दिया था। यहूदी मत की शिक्षा देने वालों को लगता था कि उनकी जो इस्राएल के प्राचीन विश्वास के योद्धा हैं, संगति में स्वीकार की जाने वाले इन शर्तों को मानना आवश्यक था।

यदि यहूदी मत की शिक्षा देने वालों के दिमाग को समझना हो तो यह ध्यान देना होगा कि इस्राएली लोगों को परमेश्वर की वाचा के विशेष लोग होने के लिए सब जातियों में से चुना गया था (निर्गमन 19:5, 6)। कुरनेलियुस के घराने के मन परिवर्तन के समय से ही अन्यजातियों का स्वीकार किया जाना यरूशलेम की कलीसिया के लिए चौंका देने वाला था (प्रेरितों 11:1-3)। इस घटना के साथ जुड़ी अलौकिक घटना होने के बावजूद, पतरस को अपनी सफ़ाई देनी पड़ी थी: "तो मैं कौन था जो परमेश्वर को रोक सकता" (प्रेरितों 11:17)। इसके अलावा पतरस की गवाही और इसके स्पष्ट महत्व को कलीसिया की स्वीकृति बेमन से ही हुई लगती है। क्योंकि "यह सुनकर वे चुप रहे [*hēsuchazō*[16]], और परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे, 'तब तो परमेश्वर ने अन्यजातियों को भी जीवन के लिये मन फिराव का दान दिया है' " (प्रेरितों 11:18)।

कलीसिया ने सैद्धांतिक रूप में अन्यजातियों में सुसमाचार के सुनाए जाने को स्वीकार कर लिया था पर उन्होंने यह कल्पना नहीं की थी कि यह मिशन कितना सफल होगा। इसके अलावा कुछ यहूदी मसीही अन्यजातियों के व्यवस्था की शर्तों को मानने के अलावा कलीसिया में उनकी बराबरी का विरोध करते रहे थे। ऐसा उन बहुत सी मण्डलियों में था जो पूरे रोमी साम्राज्य में पौलुस के साथ जुड़ी हुई थीं (2:11-14; 5:1-6; रोमियों 2:25-29; 3:19-31; फिलिप्पियों 3:1-3; कुलुस्सियों 2:8-17)। यहां तक कि यरूशलेम में भी जहां से प्रेरितों और प्राचीनों की सभा के आदेश जारी होते थे (प्रेरितों 15:22-29), यहूदी मसीही व्यवस्था के प्रति समर्पित थे और अगले सालों तक अन्यजातियों की संगति का विरोध करते रहे थे (प्रेरितों 21:20-26)।

पौलुस पर उन्हें ना पसंद खतने के विषय से दूर रहते हुए अन्यजातियों में समर्थन पाने की कोशिश करने का आरोप लग रहा था।[17] सच्चाई यह थी कि उसके विरोधी यहूदी मसीही सताव से बचने के लिए गैर मसीही यहूदियों से समर्थन पाना चाहते थे। यह 6:12 से स्पष्ट है जो कहता है, "जो लोग शारीरिक दिखावा चाहते हैं वे तुम्हारे खतना करवाने के लिये दबाव डालते हैं, केवल इसलिये कि वे मसीह के क्रूस के कारण सताए न जाएं" (6:12, 13 पर टिप्पणियां देखें)।

यहूदी सोच के अनुसार खतना पहले अब्राहम के साथ और फिर इस्राएल के लोगों के साथ भी अपने आप में "वाचा का चिह्न" था (उत्पत्ति 17:10, 11; लैव्यव्यवस्था 12:1-3; प्रेरितों 7:8)। औपचारिक मांस काटने के ऑपरेशन से कहीं बढ़कर यह मूसा की व्यवस्था के साथ सम्बन्ध को बताता था। इसलिए अधिकतर यहूदी मसीही उद्धार के लिए आवश्यक शर्त के रूप में देखते थे (प्रेरितों 15:1, 5)। बाद में गलातियों के नाम पत्री में पौलुस ने इस विचार का खण्डन किया (5:1-4)।

प्रेरित ने अपने ही प्रश्नों का उत्तर यह कहते हुए दिया, **यदि मैं अब तक मनुष्यों को प्रसन्न करता रहता तो मसीह का दास न होता।** अपनी पूरी सेवकाई में परमेश्वर की सेवा करने के पौलुस के लक्ष्य के कारण मसीह से और कलीसिया से वैर रखने वालों से पौलुस के कई विवाद हुए। यदि वह "मसीह का दास" न होता (देखें रोमियों 1:1; फिलिप्पियों 1:1), तो वह कई

सतावों और मुसीबतों से बच सकता था (देखें 2 कुरिन्थियों 11:23-28)। "दास" के लिए यूनानी शब्द *doulos* है जिसका मूल अर्थ "गुलाम" होता है। यह शब्द पौलुस के मसीह के प्रति उसकी पक्की निष्ठा को दिखाता है

पौलुस के उत्तर में "अब तक" (*eti*) शब्द संकेत देता है कि उसने अपने मनपरिवर्तन से पहले मनुष्यों को रिझाने की कोशिश की तो अब उसने ऐसा नहीं किया।[18] यह विचार पौलुस के मसीही बनने से पहले से सम्बन्धित अन्य वचनों से कैसे जुड़ा है?

कई अवसरों पर प्रेरित परमेश्वर के प्रति उसका विवेक शुद्ध था चाहे वह मसीही लोगों को सता ही रहा था (प्रेरितों 23:1; 26:9)। परन्तु कोई हैरान हो सकता है क्या उसका विवेक उस समय उसकी कुछ गतिविधियों पर संदेह करने लगा था। ऐसा प्रश्न पौलुस की स्वाभाविक तबीयत को शामिल करता है। चाहे उसके पक्के विश्वास और समर्पित जोश पर कोई तर्कसंगत संदेह नहीं किया जा सकता पर पौलुस के लेखों में कोमलता और करुणा की उसकी बड़ी क्षमता के लिए कल्पना करना भी मुश्किल नहीं है (4:19, 20; 1 थिस्सलुनीकियों 2:7, 8)। शायद इसी दौरान पौलुस दूसरों के दुखों को देखकर, विशेषकर उनके जो उसके जैसे पीड़ा और यंत्रणा में भी विश्वास में दृढ़ थे दुख सहने लगा था। ऐसा विशेषकर स्तिफनुस के पथराव किए जाने में हुआ हो सकता है (प्रेरितों 6:8—8:1), जिसके तर्क पौलुस के दिमाग में घूम रहे होंगे। हो सकता है कि उसकी इसी कशकमश दमिश्क के मार्ग पर पौलुस (जिसे शाऊल भी कहा जाता है) को जैसे यीशु के शब्दों का परिणाम हो: "पैने पर लात मारना तेरे लिये कठिन है" (प्रेरितों 26:14)।

बेशक पौलुस को इस विचार पर कोई संदेह नहीं था कि वह परमेश्वर की सेवा कर रहा है, पर शायद वह अपने समकालीनों के द्वारा की गई प्रशंसा से भी प्रोत्साहित था। अलग दिखने की इच्छा एक युवक के रूप में पौलुस के नये नियम के विवरण से मेल खाती है। वह एक प्रसिद्ध रब्बी (गमलीएल) का होनहार छात्र होने के साथ साथ एक अच्छे परिवार का स्वतन्त्र रोमी नागरिक भी था, जो अपनी उम्र के कई लोगों में उत्कृष्ठ था (1:14; प्रेरितों 22:3, 27, 28)। उसकी अपनी ही पहल पर उसे मसीही लोगों को ढूंढ़कर उन पर सताव करने के लिए प्रधान याजक से अधिकार पत्र प्राप्त हुए थे (प्रेरितों 9:1, 2)। शायद वह यहूदी धर्म में विश्वास के बड़े रक्षक के रूप में अपनी पहचान चाहता था।

पौलुस की ईश्वरीय बुलाहट और प्रारम्भिक सेवकाई (1:11-24)

1:11—2:21 के विवरण में पौलुस ने अपने प्रेरित होने का और उस सुसमाचार का जो उसने सुनाया था बचाव किया। उसका उद्देश्य यह साबित करना था कि गलातियों को जो संदेश उसने मूल में सुनाया था वह मनुष्यों की ओर से नहीं, बल्कि परमेश्वर की ओर से था। इस खण्ड के पहले भाग 1:11-24 में, पौलुस की ईश्वरीय बुलाहट और सेवकाई के उसके आरम्भिक वर्षों की बात है।

प्रकाशन के द्वारा प्राप्त हुआ सुसमाचार (1:11, 12)

[11]हे भाइयो, मैं तुम्हें बताए देता हूं कि जो सुसमाचार मैं ने सुनाया है, वह मनुष्य का नहीं। [12]क्योंकि वह मुझे मनुष्य की ओर से नहीं पहुंचा, और न मुझे सिखाया गया, पर

यीशु मसीह के प्रकाशन से मिला।

आयत 11. पौलुस ने इस नये खण्ड का आरम्भ अपने पत्र के परिचय देने वाले वाक्यांश **हे भाइयो, मैं तुम्हें बताए देता हूं** के साथ किया। NASB के *gar* ("इसलिए") के बजाय कई यूनानी हस्तलेखों में *de* ("और" या "परन्तु") है। उसी पठन के आधार पर NKJV में यह अनुवाद दिया जाता है, "परन्तु, हे भाइयो मैं तुम्हें बताए देता हूं।" "मैं बताए देता हूं" NASB के "मैं तुम्हें बता देता" के बजाय क्रिया शब्द *gnōrizō* का अधिक अक्षरश: अनुवाद "मैं बताता हूं" है। पत्र में "हे भाइयो" शब्द का इस्तेमाल आम तौर पर किसी नये खण्ड या उपखण्ड के आरम्भ का संकेत देने के लिए किया गया है (1:11; 3:15; 4:12, 31; 5:11, 13; 6:1, 18)।

प्रेरित अपने पाठकों पर प्रकट कर रहा था कि **जो सुसमाचार** उस **ने सुनाया** था वह **मनुष्य का नहीं** था। "का" पूर्वसर्ग *kata* का अक्षरश: अनुवाद है। NIV1984 में "मनुष्य का नहीं" वाक्यांश का अनुवाद क्रियाशील समान शब्द "मनुष्य की बनाई हुई किसी चीज़" के साथ किया गया है। यह अनुवाद विचार के सार को बताता है। पौलुस और उसके सहकर्मियों द्वारा सुनाया गया सुसमाचार ऐसा था जो मनुष्य की ओर से नहीं निकला था। यह मनुष्य की सोच के दायरे और स्तर से बिल्कुल दूर था।[19]

पौलुस का यह कहने का उद्देश्य केवल इतना था कि जो सुसमाचार उसने सुनाया था वह किसी मनुष्य की ओर से होने से मुक्त था। यह किसी भी प्रकार से अन्य प्रेरितों पर निर्भर (और इस कारण उनके द्वारा सुनाए गए संदेश से घटिया या कम भरोसे लायक) नहीं था।

आयत 12. अब इस सुसमाचार की कई सच्चाइयों की पुष्टि हो चुकी है। पहली बात, पौलुस के पास यह सुसमाचार **मनुष्य की ओर से नहीं पहुंचा** था। "पहुंचा" शब्द क्रिया शब्द *paralambanō* से निकला है जिसका अर्थ आम तौर पर मौखिक परम्परा को ग्रहण करने के अर्थ में होता है।[20] यह संदेश उस तक किसी मनुष्य के द्वारा नहीं पहुंचा था।

दूसरा, पौलुस को सुसमाचार **सिखाया** नहीं गया था। "सिखाया" क्रिया शब्द *didaskō* से लिया गया है जिसका आम तौर पर विधिवत शिक्षा (जैसे "कक्षा में या किसी गुरु के चरणों में"[21]) के साथ-साथ अविधिवत शिक्षा का संकेत दे सकता है। उसे मिली शिक्षा मानवीय सम्पर्क से सीखने की आम प्रक्रिया नहीं थी।

तीसरा, पौलुस को यह संदेश **यीशु मसीह के प्रकाशन से** मिला था। "प्रकाशन" (*apokalupsis*) शब्द ईश्वरीय प्रकाशन का संकेत देता है। उसे सुसमाचार परमेश्वर की प्रेरणा से दिए गए भविष्यवाणी के माध्यम के द्वारा मिला था। परमेश्वर की ओर से ऐसे संदेश पाने वालों के उदाहरण नये नियम के साथ-साथ और पुराने नियम में भी मिलते हैं।

"यीशु मसीह के" वाक्यांश यह संकेत देता है कि परमेश्वर के प्रकाशन का विषय वस्तु (या कर्म) यीशु था। एक और सम्भावित अनुवाद "यीशु मसीह की ओर से" है जो यह संकेत देता है कि वह प्रकाशन का स्रोत (या कर्त्ता) था। यह विकल्प पिछली पंक्तियों के साथ मज़बूत अंतर को बनाता है। NIV में "मुझे यह *किसी मनुष्य से* मिला न ही मुझे यह सिखाया गया, बल्कि मुझे यह *यीशु मसीह से* प्रकाशन के द्वारा प्राप्त हुआ" (देखें NCV; CEV; NLT)।

इस संदर्भ में पौलुस ईश्वरीय "प्रकाशन" किसे कह रहा था? क्या यह दमिश्क के मार्ग पर

दर्शन में उसे जी उठे प्रभु के दिखाई देने की बात थी (प्रेरितों 9:3-6) ? क्या यह बपतिस्मे के तुरन्त बाद हुआ जैसा कि हनन्याह के शब्दों से अनुमान लगाया जा सकता है "कि तू फिर दृष्टि पाए और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाए" (प्रेरितों 9:17) ? उसके थोड़ी देर बाद ही पौलुस "आराधनालयों में यीशु का प्रचार करने लगा कि वह परमेश्वर का पुत्र है" (प्रेरितों 9:20)। वचन यह भी कहता है कि "शाऊल और भी सामर्थी होता गया, और इस बात का प्रमाण दे-देकर कि मसीह यही है, दमिश्क के रहनेवाले यहूदियों का मुंह बन्द करता रहा" (प्रेरितों 9:22)।

"पवित्र आत्मा से परिपूर्ण" होने जैसी अभिव्यक्तियों (प्रेरितों 9:17) का अर्थ आवश्यक नहीं कि वचन में एक ही हो, विशेषकर लूका के लेखों में। इसलिए प्रेरितों 9:20 के सम्बन्ध में कई सवाल उठ सकते हैं। क्या पौलुस परमेश्वर की प्रेरणा से, यानी परमेश्वर की प्रेरणा से भविष्यवाणी करने लगा? क्या प्रेरितों 9:22 यह संकेत देता है कि उसका "और भी सामर्थी" होना आगे की प्रक्रिया का आरम्भ था जिसके द्वारा उसकी भविष्यवाणी करने की क्षमता बढ़ती गई? यदि ऐसा है तो क्या अरब में उसके रहने के दौरान उसकी यह योग्यता पूरी तरह से परिपक्वता तक पहुंच गई (1:17) ?

निश्चित रूप में ऐसे प्रश्नों का उत्तर दे पाना नामुमकिन है और इन से जुड़े अनुमान का कोई महत्व नहीं है। वचन यह संकेत देता है कि प्रभु पौलुस को विशेष परिस्थिति से निपटने का ढंग बताते हुए उसे विशेष जानकारी या निर्देश देते हुए उसे दिखाई देता रहा (प्रेरितों 18:9, 10; 23:11; 2 कुरिन्थियों 12:9; देखें प्रेरितों 16:9; 27:23, 24)।

पौलुस को सुसमाचार कब, कहां, कैसे या कितनी किस्तों में प्राप्त हुआ, इससे क्या फर्क पड़ता है? फर्क पड़ता है और वचन पूरी स्पष्टता के साथ यह बताता है कि उसे यह "यीशु मसीह के प्रकाशन से मिला" था। कोई इसे सुसमाचार के एक ही अचानक पूरे प्रकाशन के रूप में समझने की परीक्षा में पड़ सकता है। परन्तु यूनानी भाषा में अनिश्चित उपपद ("a" या "an") जैसी कोई बात नहीं है इस कारण इस व्याकरणीय बिन्दु पर केस बनाने का प्रयास नहीं किया जाना चाहिए। हमें शायद इस वाक्यांश का अनुवाद बिना उपपद के "यीशु मसीह के प्रकाशन से" करना चाहिए। अंग्रेज़ी में चाहे यह अटपटा लग सकता है, पर इससे उस मुख्य बात का पता चल जाता है जिस पर पौलुस ज़ोर दे रहा था कि उसे सुसमाचार का संदेश मनुष्य की ओर से नहीं बल्कि यीशु की ओर से ईश्वरीय प्रकाशन के द्वारा मिला।

सुसमाचार की बदलने वाली सामर्थः सताने वाले से प्रचारक बनाना (1:13-17)

[13]यहूदी मत में जो पहले मेरा चाल-चलन था उसके विषय तुम सुन चुके हो कि मैं परमेश्वर की कलीसिया को बहुत ही सताता और नष्ट करता था। [14]और अपने बहुत से जातिवालों से जो मेरी अवस्था के थे, यहूदी मत में अधिक बढ़ता जाता था और अपने बापदादों की परम्पराओं के लिये बहुत ही उत्साही था। [15]परन्तु परमेश्वर की, जिसने मेरी माता के गर्भ ही से मुझे ठहराया और अपने अनुग्रह से बुला लिया, [16]जब इच्छा हुई कि मुझ में अपने पुत्र को प्रगट करे कि मैं अन्यजातियों में उसका सुसमाचार सुनाऊं, तो न मैं ने मांस और लहू से सलाह ली, [17]और न यरूशलेम को उनके पास गया जो मुझ से पहले प्रेरित थे, पर तुरन्त अरब को चला गया और फिर वहां से दमिश्क को लौट आया।

सुसमाचार की बदलने वाली सामर्थ पौलुस के जीवन में दिखाई देती है कि वह कलीसिया के सताने वाले से सुसमाचार का सुनाने वाला बन गया।

आयत 13. यह और अगली आयत यहूदी मत में पौलुस के जीवन का सार है। यह खण्ड अनोखा है क्योंकि चाहे यह एक ऐसा जीवन दिखाता है जिसमें पौलुस स्वयं को पापियों के "सरदार" के रूप में दिखाने लगता है (1 तीमुथियुस 1:15; KJV), वहीं इसमें ऐसी बातें भी हैं जो अहंकार की विशेषता है। पौलुस की गवाही प्रेरितों में सबसे निराली है और इसने उसे उस सुसमाचार का जिसका वह प्रचार करता था जबर्दस्त गवाह बना दिया।

हर कोई जो मसीह के पास आता है उसे यह मानते हुए कि उसे क्षमा की आवश्यकता है और उसके जीवन में बड़े बदलाव की आवश्यकता है, एक पापी के रूप में आना आवश्यक है। इस बदलाव में उसका अपने आपको और अपने पापों को देखने का ढंग भी शामिल है। सबसे बढ़कर इसमें यह शामिल है कि वह मसीह-में-परमेश्वर को कैसे देखता है, जिसने अपने आपको नीचा करने, प्रेम और करूणा के लगभग अथाह कार्य में उन पापों को अपने ऊपर ले लिया, कि उन्हें गुलगुता के क्रूस पर उठा लिया।

पौलुस को अपने पापों की बुराई के अत्याधिक होने की समझ थी और इसी कारण उसकी गवाही इतनी मानने योग्य है: **यहूदी मत में जो पहले मेरा चाल-चलन था उसके विषय तुम सुन चुके हो।** वास्तव में हर किसी ने तरसुस के कुख्यात शाऊल के बारे में सुन रखा था और यह कि वह मसीही लोगों के साथ कितनी क्रूरता से पेश आता था। शाऊल की प्रसिद्धि के कारण हनन्याह ने शाऊल के मनपरिवर्तन में सहायता के लिए प्रभु की ओर से उसे निर्देश मिलने पर सवाल किया था: "हे प्रभु, मैंने इस मनुष्य के विषय में बहुतों से सुना है कि इसने यरूशलेम में तेरे पवित्र लोगों के साथ बड़ी बड़ी बुराइयां की हैं" (प्रेरितों 9:13)।

अपने "सबसे बड़ा पापी" वाले संदेश में (1 तीमुथियुस 1:12-16), पौलुस ने अपने ऊपर दया किए जाने के तीन कारण बताए: (1) अपनी अज्ञानता के कारण वह मसीह की देह को सताकर जो कुछ कर रहा था, (2) उसका अविश्वास कि यीशु ही मसीह है, और (3) संसार के सामने नमूना बनने की उसकी क्षमता कि "जो लोग [मसीह] पर अनन्त जीवन के लिए विश्वास करेंगे" उन पर परमेश्वर का अनुग्रह कितना अपार है (1 तीमुथियुस 1:16)। पौलुस ने यह नहीं कहा, "मैं पापियों में बड़ा था," बल्कि यह कि "मैं बड़ा ... हूं" (1 तीमुथियुस 1:15)।

अन्य प्रेरितों के विपरीत पौलुस दिन-ब-दिन यीशु के साथ नहीं चला था, मेज पर उसके साथ नहीं झुका था, न ही उसके मुख से उसने धन्यवचनों की सरल परन्तु गम्भीर बुद्धि की बातें सुनी थीं। उसने मूसा और एलिय्याह के साथ ऊंचे पहाड़ पर मसीह के विस्मयकारक प्रकाश को भी नहीं देखा था। कई प्रभावशाली घटनाएं उनके मनों पर इस बड़ी महान सच्चाई को उकेरने के लिए बनाई गई थीं कि वही परमेश्वर का पुत्र मसीह है। बेशक दमिश्क के मार्ग पर जी उठे और महिमा पाए प्रभु के साथ पौलुस के सामने से उसके मन पर तुलनीय प्रभाव पड़ा था।

पवित्र शास्त्र हो या मसीही विश्वास, प्रारम्भिक बाइबल से बाहरी रिकॉर्डों में क्या कोई ऐसा प्रमाण है कि किसी भी अन्य प्रेरित की सेवकाई ने संसार पर इतना गम्भीर असर डाला जितना प्रेरित पौलुस की सेवकाई ने? उस वचन में जिसे परमेश्वर ने पवित्र आत्मा के द्वारा अपने पवित्र लोगों को देना उचित समझा, कोई और मनुष्य (प्रभु को छोड़) इस "सबसे बड़े" पापी के जितनी

बेहद ऊर्जा और अथक समर्पण के पास-पास भी नहीं है। पौलुस का मसीही बनना आज भी संसार के लिए इस बात का प्रतीक है कि वास्तव में मनपरिवर्तन का अर्थ क्या है। यदि तरसुस के शाऊल का उद्धार प्रभु की ओर फिरने से हो सकता है, तो संसार का कोई भी व्यक्ति परमेश्वर के अनुग्रह की पहुंच से दूर नहीं है। 1 तीमुथियुस 1:16 में पौलुस के शब्दों का गहरा अर्थ यही है। सबसे बड़े अपराधी के सिवाय अनुग्रह का सबसे बढ़िया स्वाद और कौन बता सकता है?

पवित्र शास्त्र में अन्य कई विवरण भी पौलुस का "यहूदी मत में पहले का चलन" भी बताते हैं (देखें प्रेरितों 22:3-16; 26:4-18; रोमियों 11:1; 2 कुरिन्थियों 11:22; फिलिप्पियों 3:5-7)। उसके मसीही बनने से पूर्व "चाल चलन" (*anastrophē*) यानी उसके "आचरण," "व्यवहार," या "जीने के ढंग" के बारे में और बहुत कुछ कहा जा सकता है। उदाहरण के लिए पौलुस का जन्म किलिकिया के तरसुस में हुआ था, परन्तु रब्बी बनने का प्रशिक्षण उसे यरूशलेम में व्यवस्था के बड़े नामी विद्वान गमलीएल प्रथम की पाठशाला में हुआ था (प्रेरितों 22:3)।

प्रभु द्वारा उसे बुलाए जाने तक पौलुस कलीसिया का घोर विरोधी था। दमिश्क के मार्ग पर मसीह के दर्शन ने उसे यहूदी मत में मिलने वाले हर फायदे को छोड़ देने के लिए प्रेरित किया था। इससे सताने वाले से सताए जाने वाले में उसके कायापलट में बलिदान, दुख उठाना और हानि सहना स्वीकार करने का कारण बन गया। पौलुस अपने पाठकों को यह चुनौती देते हुए कि यदि जी उठे मसीह के साथ उसका यह सामना न हुआ होता तो इन बलिदानों को सहने के लिए उसका क्या उद्देश्य हो सकता था, उनकी सही समझ की ओर ध्यान दिला रहा था।

मैं ... सताता था यूनानी क्रिया शब्द का सही अनुवाद है, जो कि *diōkō* का अपूर्ण काल है। कई संस्करणों में इसका अनुवाद साधारण भूतकाल "सताता था" हुआ है। अपूर्णकाल निरन्तर या उस अवधि के दौरान किए जाने वाले कार्य को दिखाता है और इसका अनुवाद "सताता जा रहा" या "निरन्तर सता रहा था" के रूप में हो सकता है। निश्चय ही पौलुस का यहां पर यह बताने के लिए कि एक समय में उन्हें सताने के लिए जिन्हें वह नासरियों का कुपंथ मानता था कितना समय देता था, अपूर्णकाल का इस्तेमाल करने का कोई कारण था।

परमेश्वर की कलीसिया "चेलों," "भाइयों," "मसीह की कलीसियाएं," "पहलौठे की कलीसिया," "मसीह," और "मसीह की देह" के साथ परमेश्वर के लोगों के लिए नये नियम में पाए जाने वाले कई अन्य शब्दों में से एक है। इनमें से एक भी विशेषण में नाम नहीं है बल्कि वे केवल विवर्णात्मक शब्द हैं जो उनकी बात बताते हैं जिन्होंने ईमानदारी से सुसमाचार की आज्ञा मानकर यीशु की बुलाहट को स्वीकार किया है। ऐसे लोगों को वहां की स्थानीय तथा विश्वव्यापी कलीसिया के समूह अर्थात उसके चुने हुए लोगों की मण्डली (*ekklēsia*) में मिला लिया गया है।

पूर्वसर्गिक वाक्यांश **बहुत ही** (*kath' huperbolēn*) का अर्थ "बिल्कुल" या "बेहद" है। *Huperbolē* से अंग्रेज़ी भाषा का शब्द *hyperbole* (हाइपरबोल) निकला है जिसका अर्थ है "अत्यधिक अतिश्योक्ति।" परन्तु यह केवल इसका स्थानीय अर्थ है। निश्चित रूप में पौलुस के कहने का अर्थ अतिश्योक्ति नहीं था। यूनानी भाषा में संकेतार्थ वास्तव में "अत्यंत" या "उच्चतम दर्जे तक" है। अलग अलग अंग्रेज़ी संस्करणों में इस वाक्यांश का अनुवाद "हिंसापूर्वक" (NRSV), "कठोरतापूर्वक" (NIV), "कट्टर पंथी जुनून के साथ"

(फिलिप्स), और "बिना दया के" (GNT) है।

लूका जो कि उसका निकटतम सहयोगी और उसकी मिशनरी टीम का सदस्य था ने एक और विवरण दिया कि पौलुस मसीही लोगों के साथ क्या कर रहा था, उसी के शब्दों को उद्धृत करते हुए, "हर आराधनालय में मैं उन्हें ताड़ना दिला दिलाकर यीशु की निन्दा करवाता था, यहां तक कि क्रोध के मारे ऐसा पागल हो गया कि बाहर के नगरों में भी जाकर उन्हें सताता था" (प्रेरितों 26:11)। "क्रोध के मारे" शब्दों का अनुवाद यूनानी शब्द *emmainomai* से किया गया है जो उन दो शब्दों से सम्बद्ध है जिनका इस्तेमाल फेस्तुस ने प्रेरितों 26:24 में पौलुस को सम्बोधित करते हुए किया था: "हे पौलुस, तू पागल [*mania*] है!" "सनक" और "बावला" के लिए अंग्रेज़ी शब्दों *mania* (मेनिया) और *maniac* (मेनियाक) शब्दों के पीछे यही यूनानी शब्द हैं।

गलातियों 1:13 और प्रेरितों 26:11 में प्रयुक्त भाषा कलीसिया को नष्ट करने की पौलुस की सनक को दिखाते हैं। उसने माना कि वह उसे मिटाने के अपने प्रयास में कितना पागल था जिसे वह यीशु नासरी के पीछे हो लेने वाले बेदीन यहूदियों का विघटनकारी पंथ मानता था (देखें प्रेरितों 24:5)।

आयत 14. जीने के अपने पिछले ढंग पर ज़ोर देते हुए, प्रेरित ने अपूर्ण क्रिया शब्दों का इस्तेमाल जारी रखा जब उसने कहा, **और अपने बहुत से जातिवालों से जो मेरी अवस्था के थे, यहूदी मत में अधिक बढ़ता जाता था और अपने बापदादों की परम्पराओं के लिये बहुत ही उत्साही था।** उसके स्वभाव को उस उमंग के द्वारा दिखाया गया, और वह उसे जो उसने ठाना था पूरी शक्ति के साथ करना चाहता था।

पौलुस की बात से हमें हैरानी होती है कि गमलीएल प्रथम की पाठशाला में कितनी प्रतिस्पर्धा होती होगी। मिशनाह में संकेत है कि रब्बी लोग अपने छात्रों को उनकी योग्यता के अनुसार दर्जा देते थे।[22] शाऊल ने राजधानी नगर यरूशलेम के प्रधान याजक की ओर से अनुमति पत्र प्राप्त किए थे (प्रेरितों 9:1, 2), इसका अर्थ यह हुआ कि वह अपने समकालीनों में से श्रेष्ठ होगा। बेशक वह यहूदी हाकिमों में घमण्ड का जबकि उन यहूदियों के लिए जो इस विघटनकारी पथ में शामिल होने की हिम्मत करते थे, भय का कारण होगा। वह अपने हमउम्र लोगों में जिनके साथ वह अपने महान गुरु के चरणों में बैठते थे ईर्ष्या का कारण भी रहा होगा। प्रेरितों 5:33-39 में दिखाया गया गमलीएल "परमेश्वर के लिए उत्साही" इस युवक की हिंसा का समर्थन नहीं करता होगा। प्रेरितों 22:3 में यूनानी धर्मशास्त्र में पौलुस के ये अपने शब्द थे। उसका जुनून उस समय के आराधनालयों में क्रोधपूर्वक विनाश कर रहा था।

पौलुस के जलन से भरा उत्साही होने का फोक्स क्या था? निश्चय ही वह कट्टर धार्मिक-राजनैतिक जेलोतेसी दल का सदस्य नहीं था जो फलस्तीन पर से रोमी नियन्त्रण को उखाड़ फैंकना चाहता था। वचन इस तथ्य को दिखाता है कि पौलुस "यहूदी मत" (*Ioudaismos*) में पढ़ रहा था। नये नियम में यह शब्द केवल एक बार 1:13, 14 में मिलता है,[23] जो बताता है कि पौलुस यहूदियों में किस प्रकार तरक्की कर रहा था और कुख्यात हो रहा था। यहूदी मत में मूसा की व्यवस्था के अलावा और भी बहुत कुछ था यानी इसमें यहूदियों की "बाप-दादाओं की परम्पराएं" भी थीं। युवा शाऊल को इतनी प्रेरणा "परम्परा" (*paradosis*) के द्वारा की गई

व्यवस्था की व्याख्या से मिलती थी।

विद्वान उस "पाठशाला" की विधि पर असहमत हैं जिसमें शाऊल को यहूदी मत की शिक्षा दी गई थी। कइयों का विचार यह है कि यह शम्मै की कठोर पाठशाला के साथ मेल खाता था (देखें प्रेरितों 26:5), जबकि अन्यों का मानना है कि यह हिल्लेल की अधिक उदारवादी प्रवृतियों को मानता था। यह प्रसिद्ध रब्बी यहूदी मत की दो प्रमुख दिशाओं के संस्थापक थे जिनका छात्र के रूप में शाऊल के पहले और उसके बाद के समयों में कुछ समय तक बोल-बाला था।

इसका अर्थ यह हुआ कि समस्या व्यवस्था नहीं बल्कि इसकी व्याख्या की थी। यीशु और शाऊल ने एक ही इब्रानी बाइबल में से पढ़ा था परन्तु यीशु परमेश्वर के मन को जिसने इसे दिया था, समझता था और उसे इसके अनुग्रहकारी होने की पूरी समझ थी। उदाहरण के लिए यीशु ने सिखाया कि "सब्त का दिन मनुष्य के लिए बनाया गया है और न कि मनुष्य सब्त के दिन के लिए" (मरकुस 2:27)। इसके विपरीत व्यवस्था को हू-ब-हू मनवाने वाले सब्त के दिन किसी को चंगाई देने वाले व्यक्ति को दण्ड देने या उसकी हत्या करने से भी नहीं कतराते (मरकुस 3:1-6; यूहन्ना 5:1-18)। इन उत्साही विद्वानों के मनों में, व्यवस्था की अधिकारिक व्याख्या को व्यवस्था से भी अधिक वरीयता दी जाती थी। इस प्राथमिकता को मोदिन के रब्बी एलियेज़र की कही मानी जाने वाली बात से समझाया जाता है, जो पौलुस के समय के बाद हुआ: "यदि कोई आदमी ... व्यवस्था में ऐसे अर्थ बताता है जो *हलाकाह* के अनुसार न हों, तो व्यवस्था का ज्ञान और भले कार्य उसके चाहे जैसे भी हों, उसका आने वाले संसार में कोई भाग नहीं है।"[24] यह बात "पुरनियों की परम्परा" (देखें मत्ती 15:2) या "पूर्वजों की परम्पराओं" पर झगड़ा करने वाले या उनकी अनदेखी करने वाले लोगों को गलत ठहराती है।

जब तक कोशिश उचित है तब तक "बनता जाता" (*prokoptō*) शब्द का सकारात्मक तात्पर्य हो सकता है। लिखा है कि जब यीशु बारह वर्ष का हुआ तो वह "बुद्धि और डील-डौल में और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया [*prokoptō*]" (लूका 2:52)। पौलुस ने तीमुथियुस को समझाया कि "सावधान रह ... , ताकि हर कोई तेरी तरक्की [*prokopē*] देख सके" (1 तीमुथियुस 4:15; NIV)। यीशु और तीमुथियुस दोनों की तरक्की परमेश्वर के वचन की सच्चाई पर आधारित थी, जबकि पौलुस का उत्साह मनुष्य की परम्परा पर केन्द्रित था। इसलिए उसके यहूदी मत में "बढ़ता जाता" कहने में नकारात्मक संकेत है।

पौलुस, जो उस समय तरसुस का युवा शाऊल था, को अपने समय के धर्मशास्त्रियों के द्वारा यह विश्वास दिलाया गया था कि उसे "यीशु नासरी के नाम के विरोध में बहुत कुछ करना चाहिए" (प्रेरितों 26:9), परन्तु वह शायद इससे बढ़कर गलत नहीं हो सकता था। वह उस सच्चाई को जो यीशु में व्यक्त हुई थी (यूहन्ना 14:6), नष्ट करने पर इतना तुला हुआ था। उसने अच्छे विवेक और उत्साही विश्वास के साथ काम किया (जो कि अनुकरणीय गुण हैं), परन्तु उसका विवेक और विश्वास दोनों गलत थे। विद्वानों (शास्त्रियों और फरीसियों) और धार्मिक-राजनेताओं (सदूकियों) की साठ-गांठ के द्वारा ही, जो सब के सब परमेश्वर की परम सच्चाई से अंधे थे, यीशु को दोषी ठहराकर क्रूस पर दिया गया।

आयत 15. इस आयत का आरम्भ **परन्तु** के साथ होता है जिसका अनुवाद नये नियम के सबसे सामान्य संयोजनों में से एक *de* से किया गया है। इसका अनुवाद "और" भी हो

सकता है। कुछ संदर्भों में इस शब्द का अनुवाद न करना ही बेहतर है। संयोजक शब्द "और" (*kai*) जहां पर वाक्य के बहाव को एक ही दिशा में ले जाना जारी रखता है, वहीं "परन्तु" (*de*) किसी ऐसे तत्व को ले आता है जो उस बहाव को रोक देता है या उलट ही देता है। परन्तु संयोजक शब्द *de* एक कमज़ोर विरोधवाची है। जब हम इस वाक्य के संदर्भ पर विचार करते हैं तो हम चकित होते हैं कि पौलुस ने अधिक मज़बूत विरोधसूचक (*alla,* "परन्तु") का इस्तेमाल नहीं किया। आखिर 1:13, 14 (यहूदी मत में अपने जीने के ढंग को बताने) से 1:15, 16 (अपने मनपरिवर्तन की बात बताने) में बदलाव केवल पौलुस के पुराने जीवन के सम्बन्ध में सुधार को ही नहीं बल्कि उसके जीवन में पूर्ण विराम और उलटाव को दिखाता है।

आयत 15 में पौलुस एक ऐसी बात पर चर्चा करने के लिए आगे बढ़ा जो पहले से तय की गई थी: **परमेश्वर ... ने मेरी माता के गर्भ ही से मुझे ठहराया।** ये शब्द उन्हीं शब्दों को याद दिलाते हैं जो परमेश्वर ने यिर्मयाह नबी को कहे थे: "गर्भ में रचने से पहले ही मैं ने तुझ पर चित्त लगाया, और उत्पन्न होने से पहले ही मैं ने तुझे अभिषेक किया; मैं ने तुझे जातियों का भविष्यद्वक्ता ठहराया" (यिर्मयाह 1:5)। निश्चय ही पौलुस को दमिश्क के मार्ग पर मसीह का दर्शन मिलने से पहले परमेश्वर की ओर से अपने चुने जाने की जानकारी नहीं थी। बाद में जब प्रभु ने हनन्याह को नगर के अंदर पौलुस के पास भेजा, तो उसने कहा, "तू चला जा; क्योंकि वह तो अन्यजातियों और राजाओं, और इस्राएलियों के सामने मेरा नाम प्रगट करने के लिये मेरा चुना हुआ पात्र[25] है" (प्रेरितों 9:15)।

"परमेश्वर ... ने [पौलुस को विशेष सेवकाई के लिए] ठहराया।" "ठहराया" का अनुवाद यूनानी क्रिया शब्द *aphorizō* से किया गया है जिससे "क्षितिज" के लिए अंग्रेज़ी शब्द "horizon" लिया गया है। क्षितिज पृथ्वी (भूमि या समुद्र) को आकाश से अलग करने वाली दिखाई देने वाली विशेष स्पष्ट रेखा को कहा जाता है। इसी यूनानी शब्द का इस्तेमाल प्रेरितों 13:2 में किया गया है जहां पर लूका ने सीरिया के अंताकिया के मसीही लोगों के लिए पवित्र आत्मा के निर्देश को लिखा: "मेरे लिए बरनबास और शाऊल को उस काम के लिए अलग करो जिसके लिए मैंने उन्हें बुलाया है" (प्रेरितों 13:2)। क्रिया शब्द (*horizō*) का अर्थ "नामित" या "नियुक्त" करना है; परन्तु पूर्वसर्ग (*apo,* "के अलावा") के साथ उपसर्ग लगने पर यह *aphorizō* बन जाता है और अलगाव के विचार को गहरा देता है।

दमिश्क के मार्ग पर मसीह के दर्शन के अलावा (प्रेरितों 9:3–8; 26:12–18), प्रेरितों 13:2 की घटनाओं ने पौलुस के मन पर अन्यजाति मिशन के लिए उसकी बुलाहट के परमेश्वर की ओर से होने पर छाप कर दी होगी। यह भी हो सकता है कि गलातियों 1:15 में *aphorizō* शब्द का पौलुस का इस्तेमाल उस अवसर पर जब उसने स्वयं आत्मा के शब्द सुने थे, उसके दिमाग में रहा हो: "मेरे लिए बरनबास और शाऊल को अलग करो [*aphorizō*]।" वचन यह स्पष्ट नहीं करता है कि यह संदेश आकाश से सुनाई देने वाली आवाज के रूप में आया या नबियों में से किसी के मुंह से जो वहां पर इकट्ठा थे। यह जैसे भी व्यक्त किया गया, लूका ने प्रेरितों 13:4 में अपने विवरण को यह कहते हुए जारी रखा, "अत: वे पवित्र आत्मा के भेजे हुए सिलूकिया को गए; और वहां से जहाज पर चढ़कर साइप्रस को चले।" पौलुस ने पवित्र आत्मा की अगुवाई को मानकर परमेश्वर की इच्छा के आगे समर्पण कर दिया (देखें प्रेरितों 16:6–10;

18:9–11; 20:22, 23; 21:10–14; 27:21–26)।

अपनी माता के गर्भ से ही ठहराए होने के कारण पौलुस ने कहा कि परमेश्वर ने उसे **अपने अनुग्रह से बुला लिया** (1:6 पर टिप्पणियां देखें)। इस सेवकाई के लिए पौलुस का परमेश्वर की पसन्द होना उसके लिए हैरानी का कारण रहा होगा, जो ईश्वरीय अनुग्रह के समझ से बाहर होने का नाप है। रोमियों 1:5 में उसने कहा कि उसे "अनुग्रह और प्रेरिताई मिली[26] कि उसके नाम के कारण सब जातियों के लोग विश्वास करके उसकी मानें।" पौलुस को मिला अनुग्रह का दान उसकी प्रेरिताई ही थी। उन सब करिश्माई आत्मिक दानों में से जो परमेश्वर ने अपनी नवजात कलीसिया को तेजी से बढ़ने और सेवकाई में उन्नति को आसान बनाने के लिए दिए थे, कोई भी दान प्रेरिताई से बढ़कर नहीं था (1 कुरिन्थियों 12:27–31; इफिसियों 4:7, 8, 11–13)।

फिर भी पौलुस के कहने का अर्थ इससे कहीं बढ़कर होगा। कहीं और उसने कहा है:

> और मैं, अपने प्रभु मसीह यीशु का, जिस ने मुझे सामर्थ दी है [*endunamoō*], धन्यवाद करता हूं; कि उस ने मुझे विश्वासयोग्य समझकर अपनी सेवा के लिए ठहराया [*diakonia*]। मैं तो पहिले निन्दा करने वाला, और सताने वाला, और अन्धेर करने वाला था; तौभी मुझ पर दया हुई, क्योंकि मैं ने अविश्वास की दशा में बिन समझे बूझे, ये काम किए थे। और हमारे प्रभु का अनुग्रह उस विश्वास और प्रेम के साथ जो मसीह यीशु में है, बहुतायत से हुआ (1 तीमुथियुस 1:12–14)।

प्रभु ने पौलुस को ग्रहण कर लिया है (उसके उसके इतने हिंसात्मक रूप में सताने के बाद) और उसे उद्धार का दान दे दिया, यह विशुद्ध रूप में अनुग्रह था। उसे परमेश्वर का अनुग्रह मनुष्यों में बेमिसाल रूप में से मिला। यह अनुग्रह उद्धार की केवल अनार्जित कृपा ही नहीं बल्कि अपने प्रिय प्रभु की सेवा करने का सौभाग्य भी था। इससे बढ़कर यह उसके लिए दुख उठाने और मर जाने का अनुग्रह भी था (देखें रोमियों 8:16–18; फिलिप्पियों 3:8–10)।

प्रेरित के रूप में उसके रुतबे को साबित करने के लिए परमेश्वर द्वारा पौलुस का पिछला चुना जाना अत्याधिक महत्वपूर्ण था। उसके विरोधियों ने यह तर्क देना था कि वह मसीह का असल प्रेरित बनने के लिए योग्य होने के लिए बहुत देर के बाद आया था। आखिर सभी प्रेरित "यूहन्ना के बपतिस्मा से लेकर उसके उठाए जाने तक" यानी यीशु की पृथ्वी पर पूरी सेवकाई के चश्मदीद थे (प्रेरितों 1:21)। पौलुस ने यह मानने से हिचक नहीं की कि यीशु ने उसे "मानो अधूरे दिनों का जन्मा" के रूप में दर्शन दिया था (1 कुरिन्थियों 15:8)। परन्तु उसकी गवाही यीशु के पृथ्वी पर के जीवन पर नहीं बल्कि जी उठे और महिमा पाए मसीह पर केन्द्रित थी। इस कारण उसकी गवाही निराली और उन बारहों के संदेश का पूरक थी (देखें प्रेरितों 22:14, 15)। बेशक पौलुस को प्रेरिताई उन बारहों की प्रेरिताई के बाद मिली परन्तु परमेश्वर ने इस सेवकाई के लिए उसे "[अपनी] माता के गर्भ से ठहराया" हुआ था। एक अर्थ में उसकी प्रेरिताई असल में उन बारहों की प्रेरिताई से पहले की थी।

आयत 16क. पौलुस ने कहा कि परमेश्वर की बुलाहट का उद्देश्य यह था **कि मैं अन्यजातियों में उसका सुसमाचार सुनाऊं**। उसका कमिशन खास था और अन्य प्रेरितों के काम का पूरक होने के लिए था (2:8, 9)। पौलुस ने बार-बार मसीह के द्वारा अन्यजातियों

के उद्धार की परमेश्वर की योजना के विषय में लिखा। उसने इसे "उस भेद का प्रबन्ध" कहा "जो परमेश्वर में आदि से गुप्त था" (इफिसियों 3:9)। इसे उसने इन शब्दों में भी व्यक्त किया:

> ... मसीह यीशु में सुसमाचार के द्वारा अन्यजातीय लोग मीरास में साझी, और एक ही देह के और प्रतिज्ञा के भागी हैं। और मैं परमेश्वर के अनुग्रह के उस दान के अनुसार, जो उसकी सामर्थ के प्रभाव के अनुसार मुझे दिया गया, उस सुसमाचार का सेवक बना (इफिसियों 3:6, 7)।

पौलुस पर, शायद किसी भी अन्य प्रेरित से बढ़कर इस भेद को स्पष्टता से प्रकट किया गया था। पतरस की तरह हम पौलुस के अपने यहूदी भाइयों के दबाव में आने की कल्पना नहीं कर सकते, "यहां तक कि बरनबास भी उनके कपट में पड़ गया" (2:11–13)। पतरस ने पिन्तेकुस्त वाले दिन प्रचार किया था कि क्षमा और पवित्र आत्मा के दान की प्रतिज्ञा केवल यहूदियों के लिए ही नहीं बल्कि अन्यजातियों के लिए ("सब दूर दूर के लोगों के लिए"; प्रेरितों 2:39) भी थी। परन्तु पतरस को भी इस बात की पूरी समझ नहीं थी कि वह क्या कह रहा है। कुरनेलियुस के घर में जाकर उनके बीच प्रचार करने के लिए सबसे पहले अन्यजाति परिवर्तितों को समझाने के लिए पतरस को आश्चर्यकर्म के दर्शन की आवश्यकता पड़ी (प्रेरितों 10:9–20)। इसके बाद जब वह यरूशलेम में वापस आया तो "खतना किए हुए लोग उससे वाद विवाद करने लगे" (प्रेरितों 11:2), तो दिलेरी की मिसाल के रूप में जो सफाई उसने दी उसके सामने कोई टिक नहीं पाया। अलौकिक घटना के बावजूद जो वहां हुई थी, पतरस ने पूछा, "मैं कौन था जो परमेश्वर को रोक सकता?" (प्रेरितों 11:17)।

ऐसा लगता है कि यह समझ पाने वाला कि संसार में परमेश्वर का उद्देश्य अब केवल यहूदियों तक सीमित नहीं है, पहला व्यक्ति पौलुस ही था (3:7, 28, 29; 6:15; रोमियों 9:3–8; इफिसियों 2:11–22; फिलिप्पियों 3:2, 3)। वास्तव में परमेश्वर ने "सब जातियों" वाली एक बड़ी विश्व कलीसिया की कल्पना वैसे ही की थी जैसे प्रभु ने आरम्भ में बारह चेलों को सुसमाचार सुनाने का कमीशन दिया था (मत्ती 28:19, 20; देखें मरकुस 16:15, 16)। यह देखने योग्य है कि बारहों (इस समय केवल सात) ही वहां थे और उन्होंने ये शब्द सुने थे परन्तु पौलुस वहां नहीं था। इसके बावजूद उनके सही अर्थ को समझने वाला पौलुस ही लगता है। पौलुस के बुलाए जाने का विशेष कारण यह था "कि [वह] अन्यजातियों में उसका सुसमाचार [सुनाए]" (देखें 2:7, 8; प्रेरितों 26:16–18; रोमियों 11:13, 14)।

पौलुस की सेवकाई के विलक्षण दायरे में इस पत्री में अन्यजातियों (*ethnos*) के उसके दस उद्धरण हैं (1:16; 2:2, 8, 9, 12, 14, 15; 3:8 [दो बार[27]], 14), जिनमें से एक उत्पत्ति 12:3 का है। 2:3 और 3:28 में "अन्यजातियों" के दो अतिरिक्त हवाले "यूनानियों" (*Hellēn*, हेलेन) के अर्थ में किए गए थे।

पौलुस ने यह भी कहा कि परमेश्वर की "इच्छा हुई" (1:16) कि उसमें **अपने पुत्र को प्रकट करे**। अन्यजातियों के विशेष प्रेरित के रूप में उसे वह प्रकाशन मिला जो उससे आगे बढ़कर था जो इस बात में अन्यों के ऊपर प्रगट किया गया था। यह याद रखा जाना चाहिए कि जो सुसमाचार पौलुस को मिला वह उसे "प्रकाशन" के द्वारा दिया गया था जो कि पूरी तरह से

मनुष्य से मुक्त था (1:12)। इसलिए यह हैरानी की बात नहीं है कि इस सुसमाचार के प्रकाशन के कुछ भाग कम आरम्भ में, सी के द्वारा प्रचार किए जाने थे।

पौलुस मसीह का प्रचार करने के योग्य कैसे हो सकता था जबकि वह यीशु की पृथ्वी की सेवकाई का गवाह नहीं था? "मसीह का प्रचार" बल्कि "क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह" का (1 कुरिन्थियों 1:23; 2:2) प्रचार करना, क्रूस पर चढ़ाए जाने की प्रक्रिया के ढंग को बताने से कहीं बढ़कर है। इसमें क्रूस पर चढ़ाए जाने का गहरा अर्थ, सम्भावित लाभ और दायित्व शामिल थे। अन्य बातों के साथ उन्हें उस गहरे महत्व को समझने की आवश्यकता थी कि पानी के बपतिस्मे में उन्हें उसकी आज्ञा मानने का क्या था (रोमियों 6:1-20; कुलुस्सियों 2:8-17)। उन्हें वह सब जानना भी आवश्यक था जो उसने बताया था कि मसीही लोगों को उसमें कैसे रहना आवश्यक है। पौलुस ने इस प्रक्रिया को "मसीह की शिक्षा [पाना]" कहा (इफिसियों 4:20)।[28]

"मसीह का प्रचार" करने का अर्थ है कि चेले बनाने से सम्बन्धित यीशु द्वारा अपने प्रेरितों को दी गई बातों में से वे सब बातें मानना सिखाना जिससे "उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में बपतिस्मा" देकर "उन्हें वे सब बातें मानना सिखाना जिनकी [यीशु] ने आज्ञा दी" है (मत्ती 28:19, 20)।[29] यदि मसीह का प्रचार बिल्कुल वैसे ही किया जाता है जैसे पूरी तरह से अधिकृत प्रतिनिधियों (प्रेरितों) ने किया था तो जो "मसीह की शिक्षा" का संदेश सुनते हैं, उन्होंने चेले बनने की प्रक्रिया वफ़ादारी से आरम्भ कर दी है। इसका अर्थ यह हुआ कि यह प्रक्रिया समर्पित, आज्ञाकारी जीवन में जिसकी पहचान चेलों के रूप में है, चलती रहती है।

यह मनुष्य की नहीं बल्कि परमेश्वर की इच्छा के कारण हुआ कि पौलुस को प्रेरित की सेवकाई मिली। उसने कहा कि परमेश्वर की इच्छा हुई कि वह अपने पुत्र को **मुझ में** (*en emoi*) प्रकट करे। पौलुस परमेश्वर के प्रकाशन का केवल जरिया था, यानी परमेश्वर का मुखपत्र था। जो प्रकाशन परमेश्वर से मिला उसने उसे एक मानवीय कारक के रूप में प्रस्तुत किया।

मसीह को केवल उस संदेश के द्वारा ही नहीं जो पौलुस ने सुनाया था बल्कि उसके जीवन के द्वारा भी व्यक्त किया गया था क्योंकि इसमें उसकी महिमा दिखाई गई थी। (कुलुस्सियों 1:27 "मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है" की बात करता है।) पौलुस ने मूसा के द्वारा दी गई वाचा की घटती महिमा और अतुलनीय रूप में प्रेरितों के द्वारा प्रकट की गई नई वाचा में स्पष्ट अंतर किया। 2 कुरिन्थियों 3:18 में उसने लिखा, "परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रकट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश कर के बदलते जाते हैं" (NIV)। 2 कुरिन्थियों 3 चाहे वह संदर्भ है जिसमें पौलुस मुख्य रूप में नई वाचा के प्रकट करने वाले (प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं) की बात कर रहा था, परन्तु बड़ा बदलाव उसी की सेवकाई के द्वारा आया। पौलुस केवल मौखिक संदेश के प्रकाशन की ही नहीं बल्कि परमेश्वर की प्रेरणा पाए प्रकट करने वालों में प्रभावी होते रहने वाले बदलाव की भी बात कर रहा होगा। इस बदलाव ने उन्हें उनके अपने जीवनों के द्वारा मसीह को और भी अच्छी तरह से दिखाने योग्य बना दिया।

आयत 16ख. उसे मसीह का प्रचार करने के लिए परमेश्वर द्वारा चुने जाने का वर्णन करने के बाद पौलुस ने लिखा **न मैं ने मांस और लहू से सलाह ली।** यूनानी धर्मशास्त्र में अनुवादित

शब्द "तुरन्त" [NASB-अनुवादक] (*eutheōs*) से वाक्यांश का आरम्भ होता है।[30] इस कारण इसका अनुवाद हो सकता है, "तुरन्त मैंने लहू और मांस से सलाह [या 'बातचीत'] नहीं ली।" यह वाक्य पौलुस के मनपरिवर्तन के बाद की सिलसिलेवार घटनाओं के सम्बन्ध में प्रेरितों 9:19ख, 20 में लूका के विवरण का स्मरण कराता है: "वह कई दिन उन चेलों के साथ रहा जो दमिश्क में थे। और वह तुरन्त [*eutheōs*] आराधनालयों में यीशु का प्रचार करने लगा कि वह परमेश्वर का पुत्र है।" "तुरन्त" शब्द हमारे इस बात को बेहतर समझने के लिए एक महत्वपूर्ण संकेत हो सकता है कि पौलुस को परमेश्वर की प्रेरणा कैसे थी और उसे सुसमाचार कैसे प्राप्त हुआ। कोई हैरान हुए बिना नहीं रह सकता कि यदि लूका जो कि पौलुस का निकटतम सहकर्मी था और जिसने प्रेरितों के काम के विवरण को लिखा वह गलातियों के पत्र से परिचित था या नहीं।

जहां तक "सलाह" (*prosanatithēmi*) या "बातचीत" (NKJV; NRSV) शब्द की बात है, किसी के मन में स्वास्थ्य की समस्या पर डॉक्टर की सलाह लेने या टैक्स की सलाह के लिए लेखाकार यानी अकाउंटेंट की सलाह लेने का विचार आ सकता है। GNT में इसी अर्थ को पूरा किया गया है: "मैं परामर्श के लिए किसी के पास नहीं गया।" LB में पौलुस को यह भी कहते हुए दिखाया गया है, "मैं एकदम किसी के पास नहीं गया कि मैं किसी और से बात करूं।" साफ़ है कि सुसमाचार पौलुस को "प्रकाशन" के द्वारा दिया गया था (1:11, 12) । पौलुस इसके लिए किसी मनुष्य का ऋणी नहीं था, बल्कि उसने सीधे इसे प्रभु से पाया था।

"पाप और लहू" वाक्यांश वचन में इतना आम है कि इस पर थोड़ी टिप्पणी करना आवश्यक है। यह "मनुष्यजाति," "मनुष्य" या "मनुष्य सा" के जैसा है। मत्ती 16:16 में पतरस के अंगीकार के बाद कि यीशु "जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है" यीशु ने यह कहते हुए कि "मांस और लहू ने नहीं, मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है यह बात तुझ पर प्रकट की है" (मत्ती 16:17) उसे आशीष दी। मनुष्य (प्राकृतिक शारीरिक प्राणी) और परमेश्वर (जो आत्मा है) के बीच स्पष्ट अंतर है। इसी प्रकार से पौलुस ने उस बदलाव की बात करते हुए जिसमें से मनुष्य के लिए भौतिक सृष्टि के प्राकृतिक संसार में से आत्मिक संसार में जाने के लिए गुज़रना आवश्यक है, कहा कि "मांस और लहू परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं हो सकते, और न नाशवान अविनाशी का अधिकारी हो सकता है" (1 कुरिन्थियों 15:50; देखें फिलिप्पियों 3:20, 21)। फिर से तात्पर्य यह है कि जहां तक उस सुसमाचार की बात है जिसका प्रचार पौलुस करता था वह किसी मनुष्य का देनदार नहीं था। उसने इसे प्रभु से पाया था।

आयत 17. प्रेरित ने आगे कहा, **और न मैं यरूशलेम को उनके पास गया जो मुझ से पहले प्रेरित थे।** इस वाक्य के पहले भाग का संदर्भ पौलुस के मनपरिवर्तन के तुरन्त बाद की घटनाओं के सिलसिले को जारी रखता है। इसे एक सामान्य वाक्य के रूप में देने के इरादे से नहीं दिया गया, क्योंकि इसके बाद वह कई बार यरूशलेम में गया था। इस पत्री में और प्रेरितों के काम में दोनों जगह यह स्पष्ट है कि उसने अपने आपको पहले ही से "आराधनालयों में यीशु का प्रचार" यह कहते हुए करने के लिए तैयार कर लिया था कि "वह परमेश्वर का पुत्र है" (प्रेरितों 9:20)। लूका के अनुसार यह उसके मनपरिवर्तन के "तुरन्त" बाद की बात है और यह प्रचार दमिश्क में किया गया था। जैसे कि आराधनालयों में पौलुस के प्रभु की घोषणा करने

के बाद होने वाले बार-बार आने वाले उदाहरण की भूमिका हो, लूका ने लिखा कि "यहूदियों ने मिलकर उसे मार डालने का षड्यन्त्र रचा" और वह बड़ी मुश्किल से जान बचाकर भागा (प्रेरितों 9:23-25)। इन आयतों के बाद लूका ने यरूशलेम के चेलों के साथ मिलने के पौलुस के आरम्भिक प्रयास और उन कठिनाइयों के बारे में बताया जो उसके सामने आईं क्योंकि किसी ने विश्वास नहीं किया कि वह सचमुच में चेला है (प्रेरितों 9:26)। पौलुस के गलातियों की पुस्तक में यरूशलेम में पहली बार जाने का अपना संस्करण देते समय इस तथ्य को ध्यान में नहीं रखा गया था, परन्तु उसने हमें वह अतिरिक्त जानकारी दी जो लूका ने नहीं दी। गलातियों की पुस्तक में, पौलुस ने हमें बताया कि वह अरब में चला गया था, वह दमिश्क में लौट आया, अपने मनपरिवर्तन के तीन साल बाद पहली बार वहां आया और पहली बार उसके आने का उद्देश्य पतरस के साथ जान-पहचान करना था (1:17, 18)।

इन दोनों विवरणों के बीच कोई विरोधाभास नहीं है बल्कि दोनों को मिलाने पर और भी दिलचस्प मिश्रण बन जाता है। घटनाओं को सिलसिलेवार बता पाना कठिन है। जो लोग अधिक उदारवादी हैं वे उनमें तालमेल बिठाने के प्रयास में आने वाली समस्याओं के कारण एक या दूसरे संस्करण में छूट दे देते हैं। माना कि सचमुच में कुछ बड़ी वास्तविक समस्याएं हैं खासकर जब हम प्रेरितों के काम में बताई गई पौलुस की यरूशलेम में जाने की बाद की बातों की समीक्षा करते हैं और उन्हें गलातियों 2 में लिखी पौलुस की बातों से मिलाने की कोशिश करते हैं। अन्ताकिया में पतरस के साथ उसके कठिन समय को जानना भी चुनौती भरा है, जो ऐसी घटना है जिसे प्रेरितों के काम में छोड़ दिया गया है।

इस प्रकार की समस्याओं पर बात करने के समय यह समझना आवश्यक हो जाता है कि कोई भी विवरण अपने आप में पूर्ण नहीं होता। प्रेरितों के काम में अपने विवरण में लिखने का लूका का अपना विशेष उद्देश्य था, और पौलुस का अपनी प्रेरिताई के एक ही विशिष्ट पहलू पर ध्यान लगाते हुए (जैसे कि, इसकी प्रामाणिकता के बचाव पर) एक अलग ही उद्देश्य था। जो बात एक लेखक के लिए उचित हो सकती है, हो सकता है कि वही बात दूसरे के तर्क के लिए बेतुकी हो। विशेष रूप में यह बात अफ़सोसनाक है कि बाइबल के विद्वान का अपने स्वयं की समझ पर इतना भरोसा हो कि जब भी उसके सामने कठिनाइयां आएं वह परमेश्वर की प्रेरणा पाए लेखकों के हाथ न सौंपने की हिम्मत करके परमेश्वर के वचन पर ही सवाल करे। बेशक हम इन दोनों विवरणों को मिलाने में शामिल हर समस्या का समाधान करने की योग्यता होने का दावा करने की बात नहीं मानेंगे परन्तु हमारा इरादा उपलब्ध प्रमाण की सावधानीपूर्वक जांच करने का ही होगा। तभी हम इस मान्यता में आगे बढ़ सकते हैं कि यदि कोई कठिन समस्या आती है तो यह उन बातों का सरल विवरण देने की परमेश्वर की अयोग्यता के बजाय जो उसे लगा कि हम पर प्रकट करने चाहिए, हमारी अज्ञानता से ही निकलेंगे।

आयत 17 के अनुसार, यरूशलेम में जाने के बजाय पौलुस **अरब को चला गया और फिर वहां से दमिश्क को लौट आया**। यह विवरण प्रेरितों के काम के लूका के विवरण से कैसे मेल खाते हैं? दमिश्क के मार्ग में जी उठे प्रभु का दर्शन पाकर अंधा होने के बाद पौलुस (शाऊल) को हाथ पकड़कर नगर में पहुंचाया गया था। इस अवस्था में उसने तीन दिन बिना कुछ खाए या पीए बिताए थे। हनन्याह को उसे उसकी दृष्टि लौटाने और मसीह में बपतिस्मा देने के लिए भेजा

गया था (प्रेरितों 9:8-18; 22:11-16)। "और वह [पौलुस] तुरन्त आराधनालयों में यीशु का प्रचार करने लगा कि वह परमेश्वर का पुत्र है" (प्रेरितों 9:20)। उसने "इस बात का प्रमाण दे देकर कि मसीह यही है दमिश्क के रहने वाले यहूदियों का मुंह बंद" कर दिया (प्रेरितों 9:22)। इस दौरान वह अरब में चला गया परन्तु दमिश्क में लौट गया। पौलुस के वहां कुछ देर प्रचार करने के बाद, अविश्वासी यहूदियों ने उसकी हत्या का षड्यन्त्र रचा। वह दीवार में एक छेद में से, टोकरे में शहरपनाह पर से लटकाकर उतारे जाकर बच गया और उसके बाद यरूशलेम में चला गया (प्रेरितों 9:23-26; 2 कुरिन्थियों 11:32, 33)।

यह बात पर कि पौलुस "अरब को चला गया" विद्वानों द्वारा बहुत अनुमान लगाए गए हैं। सबसे आम विचारों में से एक यह है कि पौलुस सीनै पहाड़ की ओर दक्षिण में चला गया, जिसे अरब का भाग माना जाता था (देखें 4:25) और वहां पर उसे मूसा और एलिय्याह के प्रकाश जैसा कोई अनुभव मिला (निर्गमन 33:17-23; 1 राजाओं 19:9-14)। यह एक विचार दिलचस्प है, विशेषकर पतरस, याकूब और यूहन्ना को रूपांतर पर्वत पर महिमा पाए हुए मसीह के साथ-साथ मूसा और एलिय्याह के दिखाई देने को ध्यान में रखते हुए (मत्ती 17:1-3; मरकुस 9:2-4; लूका 9:28-31)। आखिर पौलुस को जो जातियों का महान प्रेरित था, इतना प्रभावशाली अनुभव देने से इनकार किया जाना चाहिए था, जितना पतरस को मिला? परन्तु ऐसी घटना का उद्देश्य क्या रहा होगा था? क्या पौलुस ने दमिश्क के मार्ग पर जी उठे और महिमा पाए हुए मसीह को नहीं देखा? क्या पौलुस को पहले से ही अपने मनपरिवर्तन के "तुरन्त" बाद प्रभु का प्रचार करने के लिए सुसमाचार की पर्याप्त रूप में रौशनी और आज्ञा नहीं दी गई थी? (देखें प्रेरितों 9:20.) दमिश्क के मार्ग पर पाए जाने वाले अनुभव से बढ़कर उसे और शक्तिशाली प्रकाश क्या दिया जा सकता था?

पुराने नियम में जहां "अरब" का उल्लेख छह बार मिलता है वहीं इसके निवासियों ("अरबों" या "अरबियों") के लिए दस और बार मिलता है। नये नियम में "अरब" केवल गलातियों 1:17 में यहां और दोबारा 4:25 में मिलता है। प्रेरितों 2:11 में इसके निवासियों का उल्लेख एक बार हुआ है जिसमें पवित्र आत्मा के बहाये जाने की गवाही देने के लिए अरबी लोग पिन्तेकुस्त के दिन यरूशलेम में थे। अरब के इन हवालों से यह विचार उत्पन्न हुआ है कि अरबियों को पिन्तेकुस्त के दिन यरूशलेम में बपतिस्मा दिया गया होगा, इसलिए प्रेरित अरब में अपने जाने के समय इन मसीही लोगों के साथ ठहरा हो सकता है। यह संरचना दिलचस्प और दिखने में अच्छी तो लगती है परन्तु यह केवल अनुमान ही है क्योंकि वचन में इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता।

भौगोलिक अर्थ में अरब (जिसका अर्थ "रेगिस्तान" या "जंगल") एक बड़ा मैदान है, जिसमें अधिकतर रेगिस्तान है, लगभग दस लाख वर्ग मील तक फैला है।[31] अरब प्रायद्वीप पृथ्वी का सबसे बड़ा प्रायद्वीप है, रेगिस्तान का यह इलाका मोटे तौर पर एक तिहाई है जो महाद्वीपीय संयुक्त राज्य जितना बड़ा है। परन्तु प्राचीन समयों में "अरब" में लाल समुद्र, फारस की खाड़ी, और फरात नदी के बीच इलाके का पूरा या उसके कई भाग शामिल हो सकते हैं।[32] इसे अरब पेतरिया (सीनै सहित सउदी अरब का उत्तर पश्चिमी भाग), अरब डेज़र्टा (सीरिया और मैसोपटामिया के बीच का उत्तरी भाग) और अरब फेलिक्स (प्रायद्वीप का मुख्य भाग) नामक

तीन भागों में बांटा जाता था।[33]

1:17 में पौलुस ने जब "अरब" शब्द का इस्तेमाल किया तो उसने उत्तर की ओर पेत्रा से दमिश्क की ओर तक के इलाके तक फैले नबाती राज्य की बात की होगी। नबाती राज्य "अरितास राजा" (2 कुरिन्थियों 11:32, 33) के अधीन था जो अरब पेत्रिया पर इसके इतिहास के सबसे शानदार काल, लगभग 9 ई.पू. से 40 ई. में शासन करता था।[34] इसलिए पौलुस केवल दमिश्क के दक्षिण और पूर्व में गया होगा, जहां आस पास के कई नगर थे। इस सम्भावना को समर्थन इस तथ्य से मिलता है कि बाद में वह यरूशलेम जाने से पहले दमिश्क में लौट रहा था।

पौलुस द्वारा बताया गया सुसमाचार दूसरों पर निर्भर नहीं (1:18-24)

[18]फिर तीन वर्ष के बाद मैं कैफा से भेंट करने के लिये यरूशलेम गया, और उसके पास पंद्रह दिन तक रहा। [19]परन्तु प्रभु के भाई याकूब को छोड़ और प्रेरितों में से किसी से न मिला। [20]जो बातें मैं तुम्हें लिखता हूं, देखो, परमेश्वर को उपस्थित जानकर कहता हूं कि वे झूठी नहीं। [21]इसके बाद मैं सीरिया और किलिकिया के प्रान्तों में आया। [22]पर यहूदिया की कलीसियाओं ने जो मसीह में थीं, मेरा मुंह कभी नहीं देखा था। [23]परन्तु यही सुना करती थीं कि जो हमें पहले सताता था, वह अब उसी विश्वास का सुसमाचार सुनाता है जिसे पहले नष्ट करता था। [24]और मेरे विषय में परमेश्वर की महिमा करती थीं।

आयत 18. 1:13-17 में मसीह के प्रति अपने मनपरिवर्तन का संकेत देने के बाद पौलुस ने लिखा, **फिर तीन वर्ष के बाद मैं कैफा से भेंट करने के लिये यरूशलेम गया।** इस वाक्य के पहले भाग के सम्बन्ध में सवाल है कि "किसके तीन वर्ष बाद?" प्रेरितों के काम वाले विवरण से लगेगा कि यह पौलुस के दमिश्क से टोकरे में बचने से सम्बन्ध को दिखाता है, जिसमें यह लूका के "जब बहुत दिन बीत गए" और यहूदियों के पौलुस की हत्या करने के षड्यन्त्र से मेल खाता हुआ लगेगा (प्रेरितों 9:23)। परन्तु लूका ने पौलुस के अरब में जाने की बात भी नहीं की, और प्रेरितों के काम में उसके विवरण से पाठक को यह लगता है कि पौलुस सीधे यरूशलेम में चला गया। पौलुस के संस्करण के अनुसार, ऐसा नहीं हुआ था, क्योंकि गलातियों 1:17 में उसने लिखा कि वह "अरब को चला गया" और फिर "वहां से दमिश्क को लौट आया।"

इस तथ्य से एक और समस्या जुड़ी है कि अरितास राजा के अधीन हाकिम "ने [पौलुस] को पकड़ने को दमिश्कियों के नगर पर पहरा बिठा रखा था," परन्तु प्रेरित को "टोकरे में खिड़की से होकर शहरपनाह पर से उतारा गया और उसके हाथ से बच निकला" (2 कुरिन्थियों 11:32, 33)। बेशक हमें यह समझना आवश्यक है कि लूका द्वारा बताई गई यह वही घटना है जिसमें दमिश्क में मसीही लोगों ने "पौलुस को टोकरे में बैठाया और शहरपनाह से लटकाकर उतार दिया" था (प्रेरितों 9:25)। 2 कुरिन्थियों में पौलुस को अरितास राजा के स्थानीय हाकिम से खतरे की बात कही गई है परन्तु प्रेरितों 9 में उसके विरुद्ध साज़िश यहूदी लोग रच रहे थे। स्पष्टतया यह अधिकारी यहूदियों की विनती और उनकी सहमति से ही ऐसा कर रहा था। यही पैटर्न प्रेरितों के काम में पौलुस की मिशनरी यात्राओं के प्रयासों में लूका के विवरण में बार-बार मिलता है।

जहां तक "तीन वर्ष के बाद" वाक्यांश की बात है, तीन पूरे साल (36 महीने) बिल्कुल नहीं होंगे; क्योंकि यहूदी गणना के अनुसार, यह समय एक पूरा साल और उससे पहले के साल के अंतिम भाग और अगले साल के आरम्भिक भाग से बढ़कर नहीं होगा। यह दोनों विवरणों के मेल खाने में कोई रुकावट खड़ी करता नहीं लगता। "तीन वर्ष के बाद" पौलुस के मनपरिवर्तन के बाद उसके अरब में जाने सहित समय को पीछे और यरूशलेम में पहली बार जाने को जिसमें वह "कैफ़ा से भेंट" करना चाहता था (1:18) आगे देखता है। ऊपर दी गई बातों को ध्यान में रखते हुए घटनाओं के इस क्रम का सुझाव दिया जाता है:

1. मसीह में पौलुस का मनपरिवर्तन दमिश्क में हुआ (प्रेरितों 9:10–19क; 22:12–16)।
2. "तुरंत" वह दमिश्क के आराधनालयों में मसीह का प्रचार करने लगा (प्रेरितों 9:19ख–22)।
3. वह नबाते अरब में गया, अधिक सम्भावना यही है कि उस इलाके में भी सुसमाचार सुनाया गया (1:17)।
4. वह दमिश्क में लौट आया (1:17), और उसका प्रचार इतना सफ़ल था कि वहां के विरोध करने वाले यहूदी अविश्वासियों ने उसके विरुद्ध षड्यन्त्र रचा (प्रेरितों 9:23–25)। स्पष्टतया इस बात ने स्थानीय अधिकारियों को उसे गिरफ्तार करके उसकी हत्या करने के लिए उक्साया (2 कुरिन्थियों 11:32, 33)।
5. वह पतरस से परिचित होने के लिए यरूशलेम में लौट गया; अपने मनपरिवर्तन के बाद उसका यह पहली बार वहां पर जाना था (प्रेरितों 9:26, 27)। पंद्रह दिनों तक वह पतरस के साथ रहा (1:18, 19)।[35]
6. यरूशलेम में यहूदियों की शत्रुता के खतरे के कारण भाइयों ने उसे किलिकिया के तरसुस में भेज दिया जहां वह कई साल रहा (प्रेरितों 9:28–30; 22:17–21)। इस दौरान की उसकी गतिविधियों के बारे में पवित्र शास्त्र खामोश है।

हम नहीं जानते कि अरब से लौटने और यरूशलेम में जाने से पहले पौलुस कितनी देर तक दमिश्क में रहा। गलातियों के पत्र में घटनाओं का हिसाब लेना पौलुस के उद्देश्य से मेल खाता हुआ नहीं लगता। वह इस बात पर ज़ोर दे रहा था कि जो सुसमाचार उसने सुनाया था वह किसी मनुष्य पर खासकर, किसी अन्य प्रेरित पर निर्भर नहीं था।[36] उसने दृढ़ता से कहा कि उसे यह सुसमाचार प्रकाशन के द्वारा सीधे परमेश्वर की ओर से मिला है (1:11, 12, 16; देखें 2:6–9)।[37]

यरूशलेम में पौलुस **पन्द्रह दिन तक** पतरस के साथ रहा। "पतरस" अरामी नाम "कैफ़ा" (यूहन्ना 1:42) का यूनानी समानार्थक शब्द है। दोनों नामों का अर्थ "चट्टान" है।

इस दो हफ्ते के दौरान पतरस ने उसे उन कई अद्‌भुत बातों और कामों के बारे में बताया होगा जो उन्होंने उन तीन सालों के दौरान जब वे यीशु के साथ चलते फिरते थे, देखे थे।[38] वे निरन्तर उसके साथ रहे थे यानी जब यीशु "[उनके] साथ आता जाता रहा–अर्थात यूहन्ना के बपतिस्मा से लेकर उसके [उनके] पास उठाए जाने तक" (प्रेरितों 1:21, 22)। हो न हो पतरस मसीही लोगों के इस पूर्व सताने वाले के अपने मुंह से तरसुस में लड़कपन के उसके दिन,

प्रतिष्ठित रब्बी गमलीएल से सीखने के दौरान से छात्र होने का समय और उसे जिसे वह नासरियों का कुपंथ मानता था (देखें प्रेरितों 22:3-5; 26:9-11) उखाड़ फैंकने के उसके उत्साही प्रयास की बातें सुनना चाह रहा होगा। पौलुस की शिक्षा के विलक्षण पहलुओं के साथ-साथ, पौलुस के मनपरिवर्तन से जुड़ी अद्भुत घटनाओं में पतरस की दिलचस्पी होगी। उसकी शिक्षा के कारण ही मसीह का सुसमाचार अंत में जातियों के विशाल संसार तक पहुंचना था, जो अब तक, इस्राएल के एकमात्र सच्चे परमेश्वर के बारे में बहुत कम या कुछ नहीं जानते थे।

वास्तव में आज सुसमाचार के कितने छात्र मसीह के कार्यों के इन दो महान शूरवीरों की इस पहली महत्वपूर्ण मुलाकात पर हैरान होंगे और उन्हें बातचीत करते हुए सुनने की ललक रखते होंगे? परमेश्वर ने केवल अपने खुद के भले कारणों से उन्हें हम पर प्रकट न करना चुना। फिर भी यह स्पष्ट है कि सुसमाचार के पतरस के प्रचार में यीशु की पृथ्वी की सेवकाई की अधिकतर बातें होती होंगी,[39] जबकि पौलुस के विलक्षण प्रचार में ऊंचा किए गए मसीह पर अधिक ज़ोर दिया जाता होगा। यह अवलोकन पौलुस के बपतिस्मे के थोड़ा पहले दमिश्क के मार्ग पर उसके अनुभव के महत्व के सम्बन्ध में, हनन्याह की बात से मेल खाता है जो उसने उससे कही थी कि "तू उसकी ओर से सब मनुष्यों के सामने उन बातों का गवाह होगा जो तू ने देखी और सुनी हैं" (प्रेरितों 22:15)। इसके अलावा पौलुस की गवाही की कुछ बातें भविष्य के दर्शनों से मेल खाएंगी, जिनमें से अधिकतर प्रेरितों के काम और पौलुस के पत्रों में दर्ज हैं (प्रेरितों 18:9, 10; 27:23, 24; देखें 2 कुरिन्थियों 12:1-4)। ये घटनाएं विशेष रूप से पौलुस द्वारा सुनाए गए सुसमाचार का भाग थीं। चाहे उसने ऐसी बातें पतरस से की होंगी, परन्तु इन घटनाओं को पतरस का सुसमाचार नहीं बल्कि प्रभु की पृथ्वी की सेवकाई के दौरान पतरस के यीशु के साथ तीन साल चलना कहा जा सकता है।

स्पष्टतया पौलुस ने पतरस से अधिक पूर्ण रूप में अन्यजातियों को सुसमाचार समझाया जो अंताकिया में इन दोनों के बीच बाद में होने वाली कष्टदायक मुलाकात का कारण हो सकता है (2:11-14)। परन्तु यह सब पतरस के लिए उस अवसर के अपने कार्यों के लिए बहाना नहीं था। इन दोनों की बेशक सुलह हो गई थी क्योंकि बाद में पतरस ने पौलुस की प्रेरिताई की प्रेरणा की पुष्टि की। हो सकता है कि पतरस को पौलुस की शिक्षा को समझने में अभी भी कुछ कठिनाई होती हो। उसने कहा कि पौलुस की लिखी बातों "में कुछ ऐसी बातें हैं जिन्हें समझना कठिन है, और अनपढ़ और चंचल लोग उनके अर्थों को ... खींच" देते हैं (2 पतरस 3:15, 16)।

जो भी हो इन दो प्रमुख प्रेरितों के बीच पंद्रह दिनों की इस संगति में उन्होंने जो किया और जो चर्चा की, उससे दिलचस्प सवाल खड़े होते हैं जिन का हमें अनन्तकाल के इस ओर तो कोई पक्का जवाब नहीं मिलेगा। परन्तु हम यकीन से कह सकते हैं कि ये दोनों काम करने वाले लोग थे और हो सकता है कि उन्होंने एक दूसरे से बातचीत करने के बजाय खोए हुओं में सुसमाचार सुनाने में अधिक समय बिताया हो (प्रेरितों 9:28, 29)।

दोनों प्रेरितों के बीच मतभेद चौंकाने वाले हैं। पतरस अपने सरल, उतावले और करिश्माई स्वभाव के लिए रूखे स्वभाव वाले मछुआरे के रूप में जाना जाता था। उसके उलट पौलुस अपने दृढ़ विश्वास और उत्साह के लिए प्रसिद्ध जुनूनी रब्बी विद्वान था। पतरस एक साधारण गलीली यहूदी था जिसकी अन्यजातियों में स्वीकृति किसी आश्चर्यकर्म के दर्शन के द्वारा ही होनी

आवश्यक थी। पौलुस रोमी नागरिक होने के साथ-साथ दुनिया भर में फैले यहूदियों में कुलीन यहूदी था। यूनानी संस्कृति का जानकार होने की बात ने उसे अन्यजातियों के मिशन के लिए बिल्कुल उपयुक्त बना दिया।

इस पहली मुलाकात में और प्रेरित नहीं थे (1:19 पर टिप्पणियां देखें)। पौलुस ही पतरस से मुलाकात कर उसे जानना चाहता था। निर्विवाद रूप में वह बारहों का अगुआ था। पतरस को बुलाए जाने में पौलुस का कार्य पौलुस द्वारा परमेश्वर के उद्देश्य के साथ-साथ उसके सामान्य ढंग से भी मेल खाता हुआ प्रतीत होता है। फिलिप्पी में (प्रेरितों 16:35-39) और यरूशलेम में (प्रेरितों 22:24-29) पौलुस ने यही नीति अपनाई थी। बाद के उदाहरण में उसने अपने बचाव में अपनी रोमी नागरिकता का इस्तेमाल किया था। ऐसा करके उसने एक के बाद एक उच्च अधिकारियों तक पहुंचना शुरू किया था जो उसके रोमी साम्राज्य के सर्वोच्च शासक सम्राट नीरो के सामने उसकी पेशी में खत्म होना था।[40]

आयत 19. यरूशलेम में पतरस के साथ अपनी मुलाकात की बात करने के बाद पौलुस ने लिखा, **परन्तु प्रभु के भाई याकूब को छोड़ और प्रेरितों में से किसी से न मिला।** यह आयत कई सवाल खड़े करती है: (1) याकूब के सम्बन्ध में "को छोड़" का क्या अर्थ है? (2) इस संदर्भ में "प्रेरितों" का क्या अर्थ है? (3) यह बात प्रेरितों 9:27 में लूका की रिपोर्ट से कैसे मेल खाती है कि बरनबास पौलुस को "प्रेरितों" (बहुवचन) के पास लेकर आया?

इन प्रश्नों का उत्तर देना आरम्भ करने के लिए आइए "प्रभु के भाई याकूब" की भूमिका पर विचार करते हैं। प्रेरितों के काम और गलातियों के नाम पत्र दोनों इस बात का संकेत देते हैं कि यरूशलेम की कलीसिया में याकूब की बड़ी प्रतिष्ठा और सम्मान था। जब पतरस आश्चर्यकर्म के द्वारा जेल से छूटा था तो उसने मसीही लोगों को "याकूब और दूसरे भाइयों को ये बात बता" देने के लिए मरियम के घर में इकट्ठा होने का निर्देश दिया था (प्रेरितों 12:17)। यरूशलेम की सभा में कलीसिया के अगुओं ने अन्यजातियों को उसके राज्य में स्वीकार किए जाने की परमेश्वर की योजना के सम्बन्ध में याकूब की बातों को ध्यान से सुना था और उसके निर्णय को माना था कि अन्यजाति मसीहियों को क्या-क्या करना आवश्यक होना चाहिए (प्रेरितों 15:13-29)। दूसरी मिशनरी यात्रा के बाद पौलुस यरूशलेम में "याकूब और सब प्राचीनों" से मिला (प्रेरितों 21:17, 18) था। पौलुस ने "याकूब और कैफ़ा और यूहन्ना" के बारे में लिखा कि वे यरूशलेम की कलीसिया के "खम्भे समझे जाते हैं" और इन लोगों ने उसे और बरनबास को "संगति का दाहिना हाथ दिया" था (2:9) कि "[वे] अन्यजातियों के पास जाएं।" "याकूब की ओर से कुछ लोगों के आने" पर पतरस की शंका ने उस "खतना किए हुए लोगों के डर [*phobeō*] के मारे" (2:12) अंताकिया में अन्यजाति भाइयों के साथ खाना बंद करने का कदम उठवाया था।

"को छोड़" का अर्थ। यरूशलेम में पौलुस का प्रभाव निर्विवाद है, परन्तु यह विचार कि वह एक प्रेरित था मुख्य रूप में दो लघु यूनानी शब्दों *ei mē* के अनुवाद पर टिका है। NASB में इस वाक्यांश का अनुवाद "अलावा" हुआ है परन्तु अन्य सम्भावनाओं में "यदि नहीं," "मगर" या "परन्तु बल्कि" शामिल हैं। यूनानी नये नियम में यह वाक्यांश कई बार मिलता है। तीन बार तो केवल गलातियों में ही मिलता है (1:7, 19; 6:14); इनमें से केवल एक बार संदर्भ में इसका अर्थ "को छोड़" (6:14) करने की आवश्यकता है। शेष दो में, 1:7 वाली घटना में इसका अर्थ

"परन्तु," "बल्कि बजाय इसके" या "परन्तु केवल" (एक ही श्रेणी से न जुड़े होने के बल्कि किसी दूसरे के अर्थ में) समझना आवश्यक है। 1:19 का अनुवाद कुछ भी हो सकता है, जो दूसरे प्रमाण पर निर्भर है कि याकूब को इस प्रश्न वाले समूह का भाग ("याकूब को छोड़ प्रेरितों में से किसी भी और") माना जाए या न ("अन्य प्रेरित में से किसी भी नहीं, बल्कि केवल याकूब")।[41] संदर्भ अपने आप में किसी भी विकल्प की अनुमति देता है इस लिए हमें अन्य विचारों पर ध्यान देना आवश्यक है।

"प्रेरितों" का अर्थ। जैसा कि पहले कहा गया है कि यरूशलेम में प्रेरितों और प्राचीनों की सभा का निर्णय याकूब की बातों के आधार पर लिया गया लगता है। लगता है कि भाइयों ने इस प्रश्न के उत्तर के लिए कि अन्यजातियों के लिए खतना और व्यवस्था को मानना आवश्यक होना चाहिए या नहीं उसकी सलाह पर भरोसा किया (प्रेरितों 15:13-22)। इस इकट्ठ के रिकॉर्ड में याकूब को कहीं पर भी विशेष रूप से "प्रेरित" या "प्राचीन" नहीं कहा गया है। बेशक हो सकता है कि पतरस की तरह वह केवल प्राचीन हो या प्राचीन और प्रेरित दोनों (1 पतरस 5:1); परन्तु निर्णायक प्रश्न यह है कि क्या वचन में कोई निर्णायक प्रमाण है कि याकूब प्रेरित था?[42]

यीशु ने बारह को चुना था कि उसकी पृथ्वी की सेवकाई के गवाहों के रूप में वे "उसके साथ साथ रहें" (मरकुस 3:13, 14)। इन लोगों को जिन्हें पहले "चेले" कहा गया था उसने "प्रेरित" भी कहा (लूका 6:12, 13)। उनके नाम मत्ती 10:2-4; मरकुस 3:16-19; लूका 6:13-16; और प्रेरितों 1:13 में दिए गए हैं। इन दोनों सूचियों में से किसी में भी "याकूब" के नाम वाले किसी व्यक्ति का उल्लेख नहीं है जो कि प्रभु का भाई था। प्रेरित उसकी गवाही देने के लिए योग्य थे, जैसा यीशु ने उन्हें बताया था, क्योंकि वे "आरंभ से" उसके साथ रहे थे (यूहन्ना 15:27)। इन्हीं बारह को उसने आत्मा की प्रतिज्ञा दी थी, जिसने उन्हें "सब सत्य का मार्ग" बताना था (यूहन्ना 16:13), यानी उन्हें जिनके पांव उसने अपने पकड़वाए जाने की रात धोए थे (यूहन्ना 13:1-5)। प्रभु का भाई याकूब (मत्ती 13:55; मरकुस 6:3) उनमें नहीं था। वास्तव में सच्चाई यह है कि यीशु की पृथ्वी की सेवकाई के दौरान बहुत देर तक उसके भाइयों ने उस पर विश्वास ही नहीं किया था (यूहन्ना 7:1-5)। कई बार उन्हें लगता था कि वह सरक गया है (मरकुस 3:20, 21)! जब यहूदा इस्करियोती अपने पद से गिर गया और उसकी जगह किसी दूसरे का चुनाव किया जाना था, तो पतरस ने घोषणा की,

> इसलिये जितने दिन तक प्रभु यीशु हमारे साथ आता जाता रहा-अर्थात् यूहन्ना के बपतिस्मा से लेकर उसके हमारे पास से उठाए जाने तक-जो लोग बराबर हमारे साथ रहे, उचित है कि उनमें से एक व्यक्ति हमारे साथ उसके जी उठने का गवाह हो जाए (प्रेरितों 1:21, 22)।

प्रेरितों ने चिट्ठियां डाली और उन ग्यारह में मिलाए जाने के लिए मत्तियाह को चुना गया (प्रेरितों 1:25, 26)।

यह दिखाना कि याकूब उन बारहों में से नहीं था किसी भी प्रकार से प्रभु के भाई को अपमानित करने के लिए नहीं है। यह पढ़ना संतोषजनक है कि 120 के लगभग चेलों में से जो यरूशलेम में इकट्ठा हुए थे, पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा की बाट जोहने वालों के बीच "यीशु की

माता मरियम और उसके भाई" भी थे (प्रेरितों 1:12-14)। यह भी सच है कि जब पौलुस ने यीशु के जी उठने के बाद के दर्शनों को गिनवाया तो उसने इस बात का उल्लेख किया कि "वह याकूब को दिखाई दिया तब सब प्रेरितों को दिखाई दिया" (1 कुरिन्थियों 15:7)। मत्तियाह के मामले को छोड़ दें तो बारह के महत्वपूर्ण और सांकेतिक अंक को पूरा करने के लिए किसी भी और उत्तराधिकारी का नाम नहीं है जिसने कलीसिया के नींव के पत्थरों का काम किया (देखें इफिसियों 2:19, 20; प्रकाशितवाक्य 21:10-14)।

बारह के अलावा कई पुरुषों को "प्रेरित" कहा जाता था, जिनमें सबसे अधिक स्पष्ट बरनबास का नाम आता है। वह बारह में से नहीं था परन्तु लूका ने प्रेरितों 14:14 में उसे पौलुस के साथ प्रेरित बताया। कुछ लोग अलग अलग उद्देश्यों के लिए भेजे हुए होने के कारण कलीसियाओं के "प्रेरित" थे। उदाहरण के लिए मण्डलियां पौलुस के साथ जाने और यहूदिया के निर्धन पवित्र लोगों को राहत पहुंचाने के लिए, पुरुषों का चयन किया करती थीं (2 कुरिन्थियों 8:16-23)। बेशक "कलीसियाओं के प्रतिनिधियों" (NIV) या "कलीसियाओं के दूतों" (NASB) जैसे अनुवादों के साथ 2 कुरिन्थियों 8:23 के जैसे मामलों में अंग्रेज़ी संस्करणों में कई बार अस्पष्ट होता है परन्तु मूल धर्मशास्त्र में *apostolos* है। अंग्रेज़ी में इस शब्द का लिप्यतंरण "अपोस्टल" के रूप में किया गया है और यह वही शब्द है जिसका इस्तेमाल बारह के लिए किया जाता है।

Apostolos शब्द इन सभी मामलों में उपयुक्त है क्योंकि इसका बुनियादी संकेत किसी विशेष मिशन पर "भेजा गया" के लिए है। (यहूदा की मृत्यु के बाद) ग्यारह को यीशु द्वारा भेजा गया था जिसे परम्परागत रूप में "द ग्रेट कमीशन" कहा जाता है (मत्ती 28:18-20)। लातीनी भाषा से लिए गए शब्द का अंतिम भाग "कमीशन" बेशक "मिशन" (लातीनी क्रिया शब्द *miseo* जिसका अर्थ "भेजना" है) से लिया गया है। कहते हैं कि *apostolos* (अपोस्टोलोस) का शायद सबसे बढ़िया अनुवाद "मिशनरी" होगा, जो ऐसा शब्द है कि इसे आम तौर पर किसी विदेशी या दूर देश की धरती पर मसीह का सुसमाचार सुनाने के लिए भेजे गए व्यक्ति के रूप में समझा जाता है।

नये नियम में आने वाले "प्रेरित" के लिए "अपोस्टल" शब्दों के परिवार में ये तीन मुख्य शब्द आते हैं: संज्ञा शब्द (*apostolos*) जिसका अर्थ "प्रेरित" (*apostlē*) या "भेजा हुआ"; "संज्ञा शब्द" *apostolē* जिसका अर्थ "प्रेरिताई" (*apostleship*) या "मिशन"; और क्रिया शब्द *apostellō* जिसका अर्थ "बाहर भेजना" है। इन तीनों शब्दों में पाई जाने वाली अवधारणा किसी विशेष उद्देश्य के लिए भेजे जाने की है। यीशु को भी एक बार "प्रेरित और महायाजक यीशु पर जिसे हम अंगीकार करते हैं" कहा गया (इब्रानियों 3:1), और यह ध्यान देने वाली बात है कि उसने कितनी बार अपने भेजे हुए होने की बात की (मत्ती 10:40; 15:24; लूका 4:18, 43; यूहन्ना 3:17; 5:36, 37; 6:29; 7:28, 29; 8:42; 9:4; 17:18; 20:21)।

बारह का मिशन सारे संसार को यीशु में उद्धार के सुसमाचार का प्रचार करना था (मत्ती 28:18-20)। पौलुस अन्यजातियों के लिए मसीह का विशेष प्रेरित था (रोमियों 11:13)। चाहे वह मूल बारह में से नहीं था पर फिर भी पतरस से जो बारह में प्रमुख था (2:6-10) किसी प्रकार कम नहीं था। बरनबास और शाऊल को अंताकिया के भविष्यवक्ताओं और शिक्षकों

के द्वारा भेजा गया था; पवित्र आत्मा ने कहा था, "मेरे लिये बरनबास और शाऊल को उस काम के लिये अलग करो जिसके लिये मैं ने उन्हें बुलाया है" (प्रेरितों 13:1-4)। पौलुस और बरनबास के साथ साथ बारहों को ही यानी सब को "मिशनरी" या "दूत" कहना उचित हो सकता है। "कलीसियाओं के प्रेरितों" की ज़िम्मेदारी यरूशलेम के निर्धन पवित्र लोगों के पास इन मण्डलियों के योगदान या चंदे को पहुंचाने की थी। उनकी सेवकाई का सम्बन्ध संदेश के बजाय धन से अधिक था इसलिए 2 कुरिन्थियों 8:23 का हिन्दी और NASB का "दूतों" वाला अनुवाद उस संदर्भ के लिए थोड़ा अनुपयुक्त लगता है।

"प्रेरित" शब्द के बुनियादी अर्थ के प्रकाश में याकूब को किस अर्थ में प्रेरित कहा जा सकता है? ऊपर विचार किए गए मामलों में किसी विशेष उद्देश्य का काम करने के इरादे से भेजा जाना शामिल था। बारह को करिश्माई शक्तियों की विशाल पहुंच के साथ दान पाए होने के कारण वे पूरी तरह से मसीह के सशक्त राजदूत थे। इन दानों ने चिह्नों का काम किया, जिनका उद्देश्य संदेश देने वालों और संदेश दोनों की प्रामाणिकता और अधिकार की पुष्टि करना था (मरकुस 16:15-20; 1 कुरिन्थियों 14:18, 19, 22; 2 कुरिन्थियों 12:12; इब्रानियों 2:4)।

"प्रेरित" शब्द केवल रूतबे का नहीं बल्कि सबसे बढ़कर और सबसे अव्वल काम का संकेत देता है। यह विचार प्रभु के भाई याकूब के किसी भी प्रकार का प्रेरित होने, विशेषकर उन बारहों में से होने के विरोध को शांत करने के लिए किसी भी अन्य विचार से सही लगता है। उसे किसके द्वारा और कहां भेजा गया था? नये नियम में याकूब के बारे में जितना कहा गया है उससे यही लगता है कि वह यरूशलेम का पक्का निवासी होगा। बाइबल में कोई प्रमाण नहीं मिलता कि प्रभु द्वारा हो या प्रेरितों द्वारा या यरूशलेम की कलीसिया द्वारा उसे किसी अन्य मिशन पर कभी भेजा गया हो। प्रमाण इस सम्भावना का अधिक संकेत देता है कि याकूब एक प्राचीन था जिसकी सेवकाई स्थानीय कलीसिया के साथ की थी। मुख्यतया यही विचार इस निष्कर्ष तक पहुंचाता है कि यरूशलेम में पतरस के पास पौलुस के जाने के संदर्भ में गलातियों 1:19 को इस प्रकार पढ़ा जाए, "परन्तु मैं प्रेरितों में से किसी और से नहीं मिला केवल [*ei mē*] प्रभु के भाई याकूब से।"

पौलुस के लिए बिना किसी प्रेरित से मिले यरूशलेम में दो सप्ताह रहना कैसे सम्भव हुआ? हो सकता है कि ऐसा प्रेरितों (मिशनरियों) के रूप में उनकी सामान्य गतिविधि के कारण हुआ हो। आम तौर पर वे उद्धार के संदेश को बाहर फैलाने में या जहां भी अवसर मिले वहां कलीसियाओं को मज़बूत करने या ज़रूरत के मुताबिक जहां भी "खुला द्वार" मिले वहां व्यस्त रहते होंगे (देखें प्रेरितों 14:27; 1 कुरिन्थियों 16:9; 2 कुरिन्थियों 2:12; कुलुस्सियों 4:3)। बेशक यह सभी हवाले पौलुस से सम्बन्धित हैं परन्तु मसीही लहर के आरम्भ में, यूहन्ना और पतरस सामरिया के इलाके में घूमते थे (प्रेरितों 8:14)। इसके अलावा पतरस लुद्दा (प्रेरितों 9:32), याफ़ा (प्रेरितों 9:36), कैसरिया (प्रेरितों 10:24) और अंताकिया तक भी गया था (गलातियों 2:11)। बाइबल के वचन में यूहन्ना प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में पतमुस के टापू में फिर से मिलता है (प्रकाशितवाक्य 1:9)।

बाइबल के बाहर की कई प्राचीन परम्पराएं कई प्रेरितों को भूमध्य सागर के संसार तथा इसके भी पार के अलग अलग भागों से जोड़ती हैं। प्रेरिताई का काम ही ऐसा था कि ये लोग ग्रेट कमीशन को पूरा करते हुए, पास या दूर के देशों में मसीह का प्रचार करते कई बार अपने

साथ अपनी पत्नियों को भी ले जाते थे (1 कुरिन्थियों 9:5)। परन्तु जहां तक वचन संकेत देता है, याकूब यरूशलेम में ही रहा।

प्राचीन होने के नाते याकूब का काम जहां वह रहता था वहां के स्थानीय झुण्ड की रखवाली करने से मेल खाता है (देखें 1 पतरस 5:1-3)। बेशक कोई पक्का प्रमाण नहीं मिलता कि वह एक प्राचीन था परन्तु उपलब्ध प्रमाण यरूशलेम में उसके रहने की ओर संकेत करता है जहां स्पष्ट रूप में उसे कलीसिया का अगुआ माना जाता था। इसलिए यह प्रमाण याकूब के प्रेरित होने के बजाय उसके प्राचीन होने का पक्ष करता है।

गलातियों 1:19 और प्रेरितों 9:27 को मिलाना। यदि पौलुस यरूशलेम में सब प्रेरितों में से केवल पतरस से ही मिला तो यह प्रेरितों 9:27 के साथ कैसे मेल खा सकता है जहां पर लूका ने लिखा कि "बरनबास [पौलुस को] अपने साथ *प्रेरितों के पास ले*" गया? (ज़ोर दिया गया।) एक विचार यह है कि पतरस प्रेरितों के समूह का प्रतिनिधि होता था जिसमें पौलुस के यरूशलेम में जाने के समय अन्य प्रेरित सुसमाचार सुनाने के लिए नगर से बाहर गए हुए थे। यदि ऐसा है तो "प्रेरितों" शब्द का इस्तेमाल "सामान्य रूप में बहुवचन" रूप में इस्तेमाल किया गया।[43] डेविड जे. विलियम्स का कहना है कि भाषा में यह अंतर दो लेखकों के अलग अलग उद्देश्यों के कारण आया। "[प्रेरितों के काम में] लूका के लिए यह दिखाना महत्वपूर्ण था कि पौलुस को प्रेरितों द्वारा स्वीकार कर लिया गया था, जबकि गलातियों में पौलुस के लिए उनसे अपनी स्वतन्त्रता पर ज़ोर देना महत्वपूर्ण था।"[44]

एक और सम्भावना यह है कि लूका ने बारहों से व्यापक अर्थ में "प्रेरितों" शब्द का इस्तेमाल किया। जे. डब्ल्यू. मैक्गार्वे ने यह तर्क देते हुए कि यह मान लेना गलत है कि लूका के कहने का अर्थ "सभी प्रेरित" या "उनमें से अधिकतर" या यह कि "यह शब्द बारहों को छोड़कर और किसी पर लागू नहीं होता।" उसने दावा किया कि "याकूब, चाहे उन बारहों में से एक नहीं था, पर उसे प्रेरित इसी अर्थ में माना जाए।"[45] यदि यह सही है तो लूका के बहुवचन शब्द "प्रेरितों" के इस्तेमाल में पतरस और याकूब भी होंगे। बेशक हमने यह तर्क दिया है कि याकूब को प्रेरित नहीं माना जाता था।

आयत 20. अपने आत्मकथा रूप में बचाव को जारी रखते हुए पौलुस ने यह टिप्पणी जोड़ दी: **जो बातें मैं तुम्हें लिखता हूं, देखो, परमेश्वर को उपस्थित जानकर कहता हूं कि वे झूठी नहीं।** यह शब्द इतने अक्कखड़ हैं कि वे विचार के बहाव को रोक देते हैं। इसी कारण कई अंग्रेजी अनुवादों (NASB सहित) में इन शब्दों को कोष्ठकों में रखा गया है।

आयत 20 का अंतिम भाग एक शपथ है। NIV की तरह NASB में पौलुस की घोषणा के प्रभाव को "मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूं" शब्दों के साथ कोमल बनाया गया है। इस अनुवाद का पौलुस की वाक्य रचना की त्रुटि को सरल बनाने के प्रयास को छोड़ मूल धर्मशास्त्र में कोई आधार नहीं है। मूल में यूनानी भाषा में है, "देखो, परमेश्वर के सामने मैं झूठ नहीं बोल रहा हूं।" यदि "देखो" (*idou*) को हटा दिया जाए, तो शब्दों का अर्थ अच्छा बन जाएगा। परन्तु "देखो" शब्द का क्रिया के रूप में कोई अर्थ नहीं रहा इस कारण इसका अर्थ केवल उस पर ध्यान दिलाने के लिए डाला गया जो वक्ता या लेखक कहना चाहता था। एक और विकल्प "कि" (*hoti*) शब्द का अनुवाद किए बिना छोड़ देना है जैसा कि KJV के अनुवाद में है, "देखो, परमेश्वर के

सामने, मैं झूठ नहीं बोलता।"

"परमेश्वर को उपस्थित जानकर" सचमुच में शपथ का एक तरीका है जिससे आम खाई जाने वाली शपथ ("बॉय गॉड") के साथ तुलना की जा सकती है। बेशक हम पौलुस पर किसी प्रकार की अपवित्र शपथ खाने जैसा आरोप नहीं लगा रहे हैं।[46] इसके बजाय शब्द शपथ पर ध्यान दिलाने के लिए एक संजीदा दावा था कि जीवित परमेश्वर न केवल उसकी बातों का बल्कि उसके विचारों और उसके मन के इरादों का भी गवाह था। यदि वह बात जिसका वह यहां पर इतनी मज़बूती से दावा कर रहा था सच नहीं थी, तो वह संसार के न्यायी के सामने दोषी था!

पौलुस यहां पर अपनी बात के सच होने को बताने के लिए इतनी मज़बूती से अपने आप को दिखाने के लिए विवश क्यों था? ऐसा लगेगा जैसे उसके शत्रु गलातियो के मसीही लोगों को विश्वास दिलाने के अपने प्रयास में सफल हो गए थे कि पौलुस उस सुसमाचार में जो उसने सिखाया था, मिलावट कर रहा था। उन्होंने दलील दी होगी कि पौलुस अपने पाठकों को यह आश्वासन दिलाते हुए उन्हें खतना करवाने या मूसा की वाचा के कठोर नियमों का पालन करने की आवश्यकता नहीं है, अपने सुनने वालों को महत्वपूर्ण आज्ञाओं को नज़रअंदाज करने के लिए प्रोत्साहित कर रहा था।

इसके अलावा हो सकता है कि पौलुस ने इस आयत की कठोर भाषा का इस्तेमाल इसलिए किया क्योंकि वह गलातियों को पत्र के रूप में सम्बोधित कर रहा था। उसके समय के लोगों का आम तौर पर यह मानना था कि ज़बानी कही गई बात लिखी हुई बात से अधिक विश्वसनीय होती है। बेशक जो लोग पुराने नियम के धर्मशास्त्र के लेखों को जानते और उन्हें मानते थे वे इस नियम का मज़बूत अपवाद थे।[47] ज़बानी कही गई बात से आम तौर पर लिखी गई बात का अधिक वज़न होता था क्योंकि नकली और गलत शिक्षाएं आम थीं।

लिखित दस्तावेजों को तब तक संदिग्ध माना जा सकता था जब तक वे प्रामाणिकता के किसी चिह्न या मोहर के साथ न हों। मिट्टी या मोम की मोहरों पर चित्रलिपियां, प्रतीक या नाम उकेरने के लिए मुद्रिका का इस्तेमाल आम बात थी। छाप या मोहर से स्वामित्व, प्रामाणिकता या सौंपे गए अधिकार का संकेत मिलता था। यह शाही आदेशों और मंजूर किए गए समझौतों को आधिकारिक बना देता था।[48] मसीह के पहले चौथी सहस्राब्दी पुरानी पुरातत्विक खोजों से पता चलता है कि पूर्व में मेसोपोटामिया से लेकर पश्चिम में रोम तक पूरे सभ्य संसार में इन प्रथाओं को मान्यता दी जाती थी।

अप्रामाणिक लिखित गवाही के बजाय जीवित गवाही पर भरोसा करने की प्राचीन लोगों की प्रवृति एक और कारण है: जीवित गवाह से सवाल पूछा जा सकता था और उसकी विश्वसनीयता को इस बात से परखा जा सकता था कि उसने दबाव में आत्मविश्वास को कितना बनाए रखा। उसकी तुलना में लिखी हुई बात तब तक खामोश रहती जब तक किसी प्रकार के प्रमाण के साथ न हो (6:11 पर टिप्पणियां देखें)।

पौलुस सच बोल रहा था, पर वह यरूशलेम में "पन्द्रह दिन" से अधिक क्यों नहीं रहा था (1:18)? यरूशलेम के भाइयों को तरसुस के पुराने शाऊल का व्यक्तिगत इतिहास और उन्हें सताने के लिए उसके जनून (यरूशलेम में ही नहीं, बल्कि बाहरी नगरों में भी) की जानकारी कैसे हुई यह कोई भेद नहीं है कि उन्होंने उसका स्वागत क्यों नहीं किया। उन्हें मालूम होगा कि

उसकी पहल के कारण ही प्रधान याजक के पास जाकर "उस ने दमिश्क के आराधनालयों के नाम पर इस अभिप्राय की चिट्ठियां मांगीं कि क्या पुरुष क्या स्त्री, जिन्हें वह इस पंथ पर पाए उन्हें बांधकर यरूशलेम ले आए" (प्रेरितों 9:1, 2)। एक व्यक्ति जो खासकर "इस पंथ" का यानी हनन्याह नामक आदमी था जिसे प्रभु ने शाऊल को उसके बुलाए जाने के बारे में बताने को भेजा था। इस व्यक्ति ने प्रभु से बात की थी कि शाऊल कितना खतरनाक हो सकता है (प्रेरितों 9:10–16)।

मसीही बनने के बाद पौलुस ने दमिश्क के आराधनालयों में प्रभावशाली काम किया (प्रेरितों 9:18–22)। उसने अरब को जाने से पहले वहां पर कुछ देर तक प्रचार किया। बाद में वह दमिश्क को लौट गया जहां उसने सुसमाचार बांटना जारी रखा (गलातियों 1:17)। पौलुस उस नगर में अपनी हत्या किए जाने के षड्यन्त्रण से बच गया (प्रेरितों 9:23–25) और फिर वहां से पतरस के साथ परिचित होने के लिए यरूशलेम आ गया (गलातियों 1:18)। जॉन मैक्रे ने सुझाव दिया है कि पौलुस के मनपरिवर्तन से यरूशलेम में उसके पहली बार जाने का समय लगभग ई. 34 से 37 ई. है।[49]

दमिश्क और यरूशलेम एक दूसरे से थोड़ी दूरी पर ही है इस कारण यह तर्कसंगत लगता है कि दोनों बड़े नगरों में काफ़ी सम्पर्क होगा और खासकर उनके आराधनालयों के बीच। इसलिए यह अचरज की बात है कि यरूशलेम के भाइयों को उत्तर में दमिश्क में होने वाली घटनाओं की कम या बिल्कुल जानकारी नहीं थी। असल में भाई इन घटनाओं से इतना अनजान थे कि यरूशलेम में पौलुस को अपने मनपरिवर्तन के बाद पहली बार जाने पर वहां के चेलों के साथ मिलने में बड़ी दिक्कत पेश आई (प्रेरितों 9:26)।

लगता है कि जो कुछ हो रहा था उस सब की जानकारी केवल बरनबास को ही थी। उसे जरूरत लगी और वह बिना हिचक इससे निपटने के लिए आगे बढ़ा (प्रेरितों 9:27)। बरनबास के लिए यह कोई नया काम नहीं था (देखें प्रेरितों 4:32–37; 11:19–26) और इन कार्यों से अंत में यरूशलेम की कलीसिया में पूर्ण विश्वास जग गया। इस विशेष संकट में जबकि दूसरे सब लोग झिझक रहे थे, बरनबास पौलुस को पकड़कर "प्रेरितों" के पास ले गया। बरनबास को ये बातें कैसे मालूम थीं, खासकर तब जब दूसरे लोग अपनी अज्ञानता के कारण डर रहे थे? क्या बरनबास ने जब उसे किसी ने चेतावनी दी कि शाऊल नगर में लौट आया है, केवल आगे बढ़कर शाऊल से निडर होकर उसके इरादे और उद्देश्यों के बारे में पूछ लिया था? क्या बरनबास ऐसा व्यक्ति था जो उस संसार में जिसमें वह रहता था उसके सम्पर्क में रहता था और उसे पहले से पता था कि दमिश्क में क्या चल रहा है? शायद हमें इसका पता कभी न चले, परन्तु एक बात पक्की है कि यरूशलेम की कलीसिया को बरनबास में बड़ा विश्वास था यानी उन्हें मालूम था कि वे उस पर भरोसा कर सकते हैं। परिणाम यह हुआ कि पौलुस "उनके साथ यरूशलेम में आता-जाता रहा और निधड़क होकर प्रभु के नाम से प्रचार करता था" (प्रेरितों 9:28, 29)।

यहूदियों के राजधानी नगर में यहां यह कभी नहीं होता। पौलुस "यूनानी भाषा बोलने वाले यहूदियों के साथ बातें करता और बहस करता था"[50] जबकि "वे उसे मार डालने का यत्न कर रहे थे" (प्रेरितों 9:29)। गमलीएल के छात्र और रोमी नागरिक होने के नाते पौलुस को केवल यहूदी धर्म और संस्कृति की शिक्षा ही नहीं मिली थी बल्कि (कुछ हद तक) उसने यूनानी

साहित्य और कविता की शिक्षा भी ली थी। उसने प्रेरितों 17:28 में उनके कुछ कवियों को उद्धृत किया और तीतुस 1:12 में उनके एक नबी की बात करके यूनानी साहित्य से अपनी पहचान को दिखाया था।

यही कारण है कि अविश्वासी यहूदी खास तौर पर पौलुस से घृणा करते थे। पौलुस उस विशेष मिशन के लिए जिसके लिए उसे बुलाया गया था परमेश्वर की ओर से और शिक्षा के रूप में ही पूरी तरह से तैयार नहीं था बल्कि वह उन्हीं में से भी था। उसका उत्साही गुस्सा उसे नष्ट करने के लिए पूरी तरह से लगा हुआ था जिसे वे नासरियों का कुपंथ मानते थे जो उनके पूर्वजों के विश्वास को दूषित कर रहा था। परन्तु अब उन्होंने शाऊल को नासरियों में से एक के रूप में देखा जो व्यवस्था को नष्ट करने पर और उनकी भेड़ों को चुराने और उन्हें नासरत के उस झूठे मसीहा के पीछे चलने की शिक्षा दे रहा था।[51] बाहर से विरोध बुरा होता है, परन्तु किसी भी विरोध को भीतर के विरोध जितना बुरा और खतरनाक नहीं माना जाता।

यरूशलेम के भाइयों को जब पौलुस के विरुद्ध यहूदियों की घृणा की और इस बात की समझ आई कि वह कितने खतरे में है तो "भाई उसे कैसरिया ले आए, और तरसुस को भेज दिया" (प्रेरितों 9:30)। प्रेरितों के काम में लूका ने जिस ढंग से अपने विवरण को जारी रखा उससे यह लगता है कि उनका क्रोध मुख्यता (यदि विशेष रूप में नहीं) पौलुस पर केन्द्रित था न कि यरूशलेम के हर मसीही पर। इसके अलावा यहूदिया हो या फलस्तीन, उसने कहीं पर भी इस दौरान कलीसिया के विरुद्ध होने वाले किसी सताव की बात नहीं लिखी। पौलुस को ले जाए जाने से "सारे यहूदिया, और गलील, और सामरिया में कलीसिया को चैन मिला, और उसकी उन्नति होती गई; और वह प्रभु के भय और पवित्र आत्मा की शान्ति में चलती और बढ़ती गई"[52] (प्रेरितों 9:31)।

आयत 21. आयत 20 की प्रारम्भिक टिप्पणी के बाद पौलुस ने अपने स्वयं की कहानी का सार दिया: **इसके बाद में सीरिया और किलिकिया के प्रान्तों में आया।** लगता है कि उसने इन क्षेत्रों का नाम उलटे क्रम में लिया है क्योंकि प्रेरितों 9:30 में लूका ने लिखा है कि भाई उसे कैसरिया में ले गए और समुद्र के रास्ते तरसुस को भेज दिया जो कि किलकिया में था। बाद में प्रेरितों 11:25, 26 में बरनबास पौलुस को ढूंढ़कर सीरिया के अंताकिया में वहां काम करने के लिए वापस लाने के लिए गया। परन्तु क्रम को इस तथ्य से समझाया जा सकता है कि सीरिया और पूर्वी किलिकिया उस समय एक प्रांत के रूप में जुडे हुए थे (देखें प्रेरितों 15:23, 41)।[53] सीरिया दोनों इलाकों में प्रमुख था इसलिए उसका नाम पहले लिया गया।

प्रेरितों 9:28-30 में लूका विवरण का सुर गलातियों 1:21 में पौलुस के विवरण के सुर से भिन्न है। पौलुस ने न तो भाइयों द्वारा उसे भेजे जाने के कारण की परिस्थितियों के बारे में और न उस पर लटके व्यक्तिगत खतरे के बारे में कुछ कहा। यह बाद में यरूशलेम को जाते हुए उसके कैसरिया आने की घटना से मेल खाता है। जिसमें नबी भी उसकी सुरक्षा के प्रति चिंतित थे। जब उन्होंने उससे वहां न जाने का आग्रह किया तो उसका उत्तर केवल इतना था: "तुम क्या करते हो कि रो-रोकर मेरा दिल तोड़ते हो? मैं तो प्रभु यीशु के नाम के लिये यरूशलेम में न केवल बांधे जाने ही के लिये वरन् मरने के लिये भी तैयार हूं" (प्रेरितों 21:8-13)।

पौलुस ने यरूशलेम में होने वाले विरोध पर जोर नहीं दिया जिस कारण उसे तरसुस में जाना

पड़ा था। उसके संदेश के लिए यह इतना महत्वपूर्ण नहीं होगा। यरूशलेम में उसका समय मसीह और उसमें उद्धार का प्रचार करने के लिए उसके लिए केवल एक और अवसर था। पौलुस यहां पतरस से मुलाकात करने के लिए आया था और उसका यह उद्देश्य पूरा हो गया। यहां जिस बात पर जोर दिया जा रहा है वह यह है कि अपनी प्रेरिताई के खरे होने और उसके अधिकार का प्रमाण देने के लिए वह किसी भी प्रेरित सहित किसी मनुष्य पर निर्भर नहीं था।

आयत 22. इसी थीम को आगे बढ़ाते हुए पौलुस ने कहा, **पर यहूदिया की कलीसियाओं ने जो मसीह में थीं, मेरा मुंह कभी नहीं देखा था।** निश्चय ही उसने यहूदिया की मण्डलियों से अपनी प्रेरिताई के अधिकार को निकाला नहीं था, क्योंकि ये मसीही उसे केवल उसकी प्रसिद्धि से जानते थे। यूनानी धर्मशास्त्र में मूल में कहा गया है कि वह "चेहरे से अनजान" था; NIV वह उनके लिए "व्यक्तिगत रूप में अनजान" था। पौलुस के यहूदिया के भाइयों के पास से गुजर जाने पर उन्होंने उसे नहीं पहचानना था।

"यहूदिया की कलीसियाओं" वाक्यांश में "यहूदिया" का क्या अर्थ है ? क्या यह यरूशलेम के आस पास के इलाके के सम्बन्ध में है या इसका एक व्यापक संकेत है ? एफ़. एफ़. ब्रूस का विचार था कि जब गलातियों का पत्र लिखा गया तो "यहूदिया के रोमी प्रांत में यहूदिया (तंग अर्थ में) और सामरिया (जैसा कि इसमें 44 ई. में हेरोदेस अग्रिप्पा की मृत्यु के बाद किया था) के साथ साथ गलील भी शामिल था; इसका अर्थ यह हुआ कि 'यहूदिया' का अर्थ यहां पूरा फलस्तीन हो सकता है।"[54]

यदि यह अर्थ सही है तो "यहूदिया की कलीसियाओं" प्रेरितों 9:31 वाले "सारे यहूदिया, और गलील, और सामरिया में कलीसिया" वाक्यांश जैसा ही होगा। ये मण्डलियां उस सताव से स्थापित हुई थीं जो स्तिफनुस के पथराव के बाद कलीसिया पर हुआ था। शाऊल मसीही लोगों को पकड़ने की तलाश में था जिस कारण बहुत से लोग यहूदिया और सामरिया में भाग गए थे। ये भाई जहां जहां "तितर बितर" हुए वहां-वहां वे "सुसमाचार सुनाते हुए फिरे" (प्रेरितों 8:1-4)। जो उनके संदेश पर विश्वास करते और बपतिस्मा लेते उन्हें मसीह द्वारा अपनी कलीसिया में मिला लिया जाता। ये वे लोग थे जो "मसीह में" रहते थे (देखें 3:26-28; 1 कुरिन्थियों 1:2; इफिसियों 1:1; फिलिप्पियों 1:1; कुलुस्सियों 1:2; 1 थिस्सलुनीकियों 1:1; 2 थिस्सलुनीकियों 1:1)।

आयत 23. पौलुस ने अपनी आगे की बात का यह अपवाद दिया: **परन्तु यही सुना करती थीं कि जो हमें पहले सताता था, वह अब उसी विश्वास का सुसमाचार सुनाता है जिसे पहले नष्ट करता था।** उन खबरों की समीक्षा जो पौलुस ने सुनी थीं ये बातें शब्द यहूदिया की कलीसियाओं में उसके बारे में फैल रही थीं।[55] पौलुस के यरूशलेम के थोड़ी देर के प्रवास के बाद खबरें फैल रही होंगी, जहां पर वह पन्द्रह दिनों के दौरान थोड़े से मसीही लोगों से मिला था (1:18, 19; प्रेरितों 9:26-30)। वे उत्तर में दमिश्क से भी आई हो सकती हैं (प्रेरितों 9:19-22)।

यहूदिया के अधिकतर मसीही चाहे वे पौलुस को व्यक्तिगत रूप से नहीं जानते थे परन्तु उन्होंने इस खुशखबरी को सुन रखा था कि वह परमेश्वर के लोगों के विरुद्ध अपने जघन्य अपराधों से मन फिरा कर मसीही बन गया था। क्रिया शब्द "सताता" (*diōkō*) और "नष्ट

करता" (*portheō*) 1:13 से दोहराए गए हैं, जहां पर पौलुस ने कहा कि वह "परमेश्वर की कलीसिया को बहुत ही *सताता* और *नष्ट करता* था।" परन्तु आयत 13 में उसके विरोध की बात "कलीसिया" को आयत 23 में "विश्वास" के रूप में दिखाया गया है। इन दोनों अवधारणाओं का निकट सम्बन्ध है क्योंकि "कलीसिया" "विश्वास" (सुसमाचार संदेश) पर बनी है। पौलुस मसीहियत को मिटा देना चाहता था जिसे वह परम्परागत यहूदी धर्म के लिए खतरा मानता था। मज़े की बात है कि अब वह उसी सुसमाचार का प्रचार कर रहा था जिसे किसी समय वह नष्ट करने पर तुला हुआ था।

आयत 24. सताने वाले के प्रचारक बनने की बात सुनकर यहूदिया की कलीसियाएं **परमेश्वर की महिमा करती थीं।** बेशक यह कहने में पौलुस का इरादा यहूदी मत की शिक्षा देने वालों को डांटना था। यहूदिया के यहूदी मसीही उसके मनपरिवर्तन और सेवकाई पर आनन्दित थे जबकि यहूदी मत की शिक्षा देने वाले जो गलातिया की मण्डलियों में घुस आए थे उसकी प्रेरिताई की उपेक्षा कर रहे और उसके संदेश पर संदेह कर रहे थे। यहूदिया के मसीहियों ने पौलुस के जीवन में परमेश्वर के अनुग्रह के असर के लिए धन्यवादी होकर सही ढंग से उत्तर दिया था।

अध्याय की यह अंतिम आयत तरसुस में काम करने के लिए पौलुस के यहूदिया से जाने की लूका की सकारात्मतक रिपोर्ट से मेल खाती है: "इस प्रकार सारे यहूदिया, और गलील, और सामरिया में कलीसिया को चैन मिला, और उसकी उन्नति होती गई; और वह प्रभु के भय और पवित्र आत्मा की शान्ति में चलती और बढ़ती गई" (प्रेरितों 9:31)।

प्रासंगिकता

परिचयों का महत्व (1:1-5)

परमेश्वर के वचन के छात्रों को नये नियम के प्रेरितों के तथा भविष्यवाणी के लेखों के परिचयों को कभी भी हल्का नहीं जानना चाहिए। आरम्भिक टिप्पणियों में परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए लेखक ने कई बार उस मुख्य विषय या विषयों को छुआ जो वह शेष पुस्तक में बताना चाहता था। बार-बार, ये वे आवश्यक सच्चाइयां थी जिनका पता तो था परन्तु वे मसीही विश्वास के लिए महत्वपूर्ण थीं। गलातियों के परिचय (1:1-5) में पौलुस ने प्रेरिताई के अपने अधिकार, परमेश्वर के अनुग्रह और शांति और यीशु मसीह के बलिदान और जी उठने को साबित किया।

पुनरुत्थान में आशा (1:1)

इस संसार में हम दुख और मृत्यु से घिरे रहते हैं। सांसारिक दृष्टिकोण से यदि इस जीवन को देखा जाए तो यह आंसुओं की तराई ही लगेगी। परन्तु हमें अंत के दिन में पुनरुत्थान की बड़ी आशा है। विश्वास और अनुभव दोनों से यह जानते हुए कि यह संसार हमारा ठिकाना नहीं है हम अपनी मृत्यु का सामना करते हुए भी आशा को थामे रख सकते हैं। फिलिप्पियों 3:20, 21 में पौलुस ने यह प्रोत्साहन दिया है:

> पर हमारी नागरिकता स्वर्ग में है; जिसमें से हम उद्धारकर्त्ता प्रभु यीशु मसीह के आने की राह बड़ी उत्सुकता से देख रहे हैं, जो उस कार्य के अनुसार जिसके द्वारा वह सब वस्तुओं

को अपने वश में कर सकता है, हमारी दीन-हीन देह का रूप बदलकर, अपनी महिमामय देह में बदल देगा (NKJV)।

मसीह ने अपने आपको दे दिया (1:4)

परमेश्वर के मन पर विचार करते हुए हमें अपनी सीमाओं को ध्यान में रखना आवश्यक है (यशायाह 55:8, 9); हमें अपने आपको अनुमान के निष्फल क्षेत्रों में भटकने नहीं देना चाहिए। फिर भी पवित्र शास्त्र की ओर से हमें वचन पर मनन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, और परमेश्वर उन्हें प्रतिफल देगा जो दीनता और ईमानदारी से उसकी इच्छा को समझने की कोशिश करते हैं (यहोशू 1:8; भजन 1:1-3; 119:15, 46-48)।

हमें गतसमनी में प्रार्थना करते हुए अपने प्रभु के चेहरे से टपकती उन बूंदों को देखने का प्रयास करना चाहिए (लूका 22:44)।[56] हमें इस तथ्य पर भी ध्यान देना चाहिए कि उसका आत्मा पिता के साथ एक था, फिर भी "वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया" (1 पतरस 2:24)। ऐसा करने से, हो सकता है कि हमें कुछ समझ आ जाए कि "बलिदान" शब्द के अर्थ का सार क्या है और यह भी कि परमेश्वर का भेद क्या है। अपने स्वभाव ही से पूर्णतया पवित्र होने के कारण यीशु को पाप से घृणा थी जो कि वह बनने वाला था (इब्रानियों 1:9)। इसके साथ ही परमेश्वर के साथ अपनी पूर्ण आत्मिक एकता में उसने परमेश्वर की इच्छा को पूरा करना चाहा और ऐसा करके उसे पूरा किया (यूहन्ना 4:34)।

परमेश्वर ने उससे और जो कुछ भी मांगा वह उसे स्वेच्छा से पूरा कर सकता था और असल में वह खुद यही करना चाहता था; परन्तु उसकी पवित्रता पाप बनने के विचार से ही झिझक जाती होगी। उसे अपने देहधारी होने से पहले से ही पता होगा कि उसे, जो कि जीवन का कर्त्ता है, शैतान के सपुर्द कर दिया जाएगा, जो कि मृत्यु का दाता और अब तक का सबसे अपवित्र जीव है। निश्चय ही वहीं पर, प्रार्थना में संघर्ष करते हुए, हमारे प्रभु ने पिता की इच्छा को पूरा करते हुए और किसी ऐसी चीज़ के सामने समर्पण करते हुए जो पूरी तरह से उसके वजूद की आत्मिक बनावट के बिल्कुल उलट था, पूर्ण रूप में आज्ञा मानना सीखा। हमें उसकी इतनी बड़ी पवित्रता के सहभागी होने के लिए ऐसी आज्ञाकारिता, पाप से ऐसी घृणा, ऐसा प्रेमपूर्वक बलिदान करना सीखना चाहिए!

सब ने "पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं" (रोमियों 3:23)। इस समझ पर आधारित, पाप में गिरे हुए मनुष्य को उस उद्धार को स्वीकार करने के लिए जिसकी पेशकश यीशु छुटकारा दिलाने वाली अपनी मृत्यु के द्वारा करता है पहला कदम उठाना आवश्यक है। इब्रानियों के लेखक ने लिखा है, "क्योंकि [परमेश्वर] के लिए सब कुछ है, और जिसके द्वारा सब कुछ है, उसे यही अच्छा लगा कि जब वह बहुत से पुत्रों को महिमा में पहुंचाए, तो उनके उद्धार के कर्ता को दुख उठाने के द्वारा सिद्ध करे" (इब्रानियों 2:10)। जो संताप यीशु ने गतसमनी में सहा, वह परमेश्वर की इच्छा में था, उस मंशा को पाने का एकमात्र तरीका था जिसके लिए उसे पृथ्वी पर के मिशन के लिए भेजा गया था (1 तीमुथियुस 1:15)। उसने जो कि छुड़ाने वाला है, हमारे पापों की पूरी कीमत अदा कर दी (1 पतरस 1:17-21)। वह परमेश्वर का वह मेमना था जिसने हमारे पाप उठा लिए (यूहन्ना 1:29)। परमेश्वर ने उसे "जो पाप से अज्ञात

था, उसी को हमारे लिए पाप ठहराया, कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं" (2 कुरिन्थियों 5:21)। "परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल-मिलाप कर लिया और उनके अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया" (2 कुरिन्थियों 5:19)। हमारा धर्मी ठहराया जाना "उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है" होता है (रोमियों 3:24)।[57]

"इस वर्तमान बुरे संसार" (1:4)

1:4 में "इस वर्तमान बुरे संसार" का उल्लेख मात्र ही केवल "बीते युगों" का नहीं बल्कि जैसा कि पवित्र शास्त्र कहता है "आने वाले युग" या "आने वाले संसार" के लिए भी है। कलीसिया के हमारे एक पंसदीदा भजन में हम गाते हैं, "हे परमेश्वर, बीते युगों में हमारी सहायता, आने वाले वर्षों के लिए हमारी आशा।"[58] हम इस गीत को उस वाचा पर ध्यान करते हुए जो उसने मसीह में हमारे साथ बांधी और आने वाले युग के लिए हमारी आशा और उसमें मिलने वाली महिमा के साथ-साथ अपने व्यक्तिगत अनुभवों के सम्बन्ध में गाते हैं। परन्तु हम अपने समय से पहले के और उसके बाद होने वाले अपने लोगों के साथ परमेश्वर की वाचा के सम्बन्ध पर भी ध्यान कर सकते हैं।

बिना किसी संदेह के हम एक दुष्ट संसार में रहते हैं। केवल प्रतिदिन के समाचारों की झलक ही देख लें, मनोरंजन उद्योग में पाई जाने वाली नैतिक भ्रष्टता और बच्चों और बूढ़ों सब को बिगाड़ने वाले टैलिविज़न और इंटरनैट पर अश्लील और हिंसक कार्यक्रमों और फिल्मों को ही देख लें।

शायद हमें हमारे मनों पर छाए रहने वाले बुरे इरादों और उनमें से कइयों का सामना करते हुए हम कितने असफल हो जाने पर विचार करते हुए अपने स्वयं के जीवनों के अंदर भी झांकना चाहिए। शैतान सचमुच में जीवित है और इस पृथ्वी पर भला चंगा है। असल में यदि हम यह समझ जाएं कि हम "इस जगत के सरदार" का सामना करने में कितने असुरक्षित हैं[59] तो हम ईश्वरीय अनुग्रह की प्रतिज्ञा को पा सकते हैं: "यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है" (1 यूहन्ना 1:9)। यह जानना कितना दलेर करने वाला है कि परमेश्वर का अनुग्रह अपनी संतान पर हर समय उपलब्ध रहता है!

स्वर्ग की हमारी आशा के साथ-साथ यह अंतर हमें ऊंचा उठाता और विजयी भाव से "इस बुरे संसार" में भी सामर्थ देता है। यह विजयी जीवन हमारे किसी गुण के कारण नहीं जिसे हम पा सकते हैं (इफिसियों 2:8, 9; तीतुस 3:4-7), बल्कि उसके कारण मिलता है जो कुछ परमेश्वर ने मसीह में हमारे लिए किया है। हमें "हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रगट होने की बाट जोहते" हुए उम्मीद भरा जीवन जीने के लिए बुलाया जाता है (1 कुरिन्थियों 1:7; देखें फिलिप्पियों 1:6; 1 थिस्सलुनीकियों 5:23)। जैसा कि पतरस ने लिखा, हमें "परमेश्वर के उस दिन की बाट किस रीति से जोहना चाहिए और उसके जल्द आने के लिए कैसे यत्न करना चाहिए: जिस के कारण आकाश आग से पिघल जाएंगे, और आकाश के गण बहुत ही तप्त होकर गल जाएंगे।" और तो और "उसकी प्रतिज्ञा के अनुसार हम नए आकाश और नई पृथ्वी की आस देखते हैं जिनमें

धार्मिकता वास करेगी'' (2 पतरस 3:12, 13)।

हमारे मसीही चलन के लिए भविष्य के संसार के प्रति ध्यान आवश्यक है। यदि हम विश्वास करते हैं कि अपने बहुत से आकर्षणों के साथ हमारा यह संसार जलकर नष्ट होने वाला है तो हम इसे बड़े निवेश के अयोग्य मानेंगे। इसके विपरीत ''एक अविनाशी और निर्मल, और अजर मीरास के लिए जो तुम्हारे लिए स्वर्ग में रखी है'' (1 पतरस 1:4), एक शानदार अच्छे निवेश जैसा लगता है, कीमत चाहे जो भी हो। आइए हम स्वर्ग में अपना घर होने का लक्ष्य बना लें।

''उसकी स्तुति और बड़ाई होती रहे'' (1:5)

परमेश्वर पिता के सम्बन्ध में, 1:5 में पौलुस ने लिखा, ''उसकी स्तुति और बड़ाई युगानुयुग होती रहे। आमीन।'' मसीह और परमेश्वर के राज्य में अपनी और अपनी सेवकाई के लिए निरा मनुष्य स्तुति और महिमा का दावा करने का क्या साहस करेगा? कोई भी इसके योग्य नहीं है, ''इसलिए कि सबने पाप किया है'' (रोमियों 3:23)। मनुष्य को धर्मी केवल परमेश्वर के अनुग्रह से दिखाए गए मसीह के बलिदान से ही बनाया जा सकता है (रोमियों 3:24-26)।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक परमेश्वर और मसीह को सारी महिमा के योग्य बताती है। अध्याय 4 में परमेश्वर पिता को स्वर्ग में विराजमान सर्वशक्तिमान के रूप में दिखाया गया है। सिंहासन के आसपास के लोग उसकी स्तुति करते हुए यह कहते हैं, ''हे हमारे प्रभु, और परमेश्वर, तू ही महिमा, और आदर, और सामर्थ के योग्य है; क्योंकि तू ही ने सब वस्तुएं सृजीं और वे तेरी ही इच्छा से थीं, और सृजी गईं'' (प्रकाशितवाक्य 4:11)।

प्रकाशितवाक्य 5 में यीशु को भी सारी महिमा के योग्य होने के रूप में उसकी जय जयकार की गई है। स्वर्गीय जीवों में यह सवाल खड़ा होता है कि सात मोहरों को खोलने के परमेश्वर के भेद की पुस्तक को खोलने के योग्य कौन है। केवल एक ही मिलता है जिसका नाम ''मानो एक बध किया हुआ मेम्ना'' है (प्रकाशितवाक्य 5:6)। वहां पर, एक नये गीत के साथ एक स्वर्गीय कोरस गाया जाता है:

> कि तू इस पुस्तक के लेने, और उसकी मुहरें खोलने के योग्य है; क्योंकि तू ने वध होकर अपने लोहू से हर एक कुल, और भाषा, और लोग, और जाति में से परमेश्वर के लिए लोगों को मोल लिया है (प्रकाशितवाक्य 5:9)।

''मेमना'' यीशु है, जो कि मसीह है, जिससे स्वर्गीय दूतों की एक बड़ी सेना और अन्य स्वर्गीय जीव यह पुकार करते हैं:

> वध किया हुआ मेम्ना ही सामर्थ, और धन, और ज्ञान, और शक्ति, और आदर, और महिमा, और धन्यवाद के योग्य है (प्रकाशितवाक्य 5:12)।

यहां पर, पिता और पुत्र दोनों का आदर किया जाता है:

> फिर मैंने स्वर्ग में, और पृथ्वी पर, और पृथ्वी के नीचे, और समुद्र की सब सृजी हुई वस्तुओं को, और सब कुछ को जो उनमें हैं, यह कहते सुना,

> कि जो सिंहासन पर बैठा है, उसका, और मेम्ने का धन्यवाद, और आदर, और
> महिमा, और राज्य, युगानुयुग होती रहे।
>
> और चारों प्राणियों ने आमीन कहा, और प्राचीनों ने गिरकर दण्डवत किया (प्रकाशितवाक्य 5:13, 14)।

निश्चय ही यदि हम उस दर्शन को जो यूहन्ना ने देखा, देख पाते तो हम ऐसी किसी भी प्रवृति को खत्म कर देते जो उस महिमा को जो सदा के लिए और विशेष रूप में हमारे बहुमूल्य और प्रभु यीशु मसीह की है, अपने आपको बड़ा बनाने की इच्छा कर सकते। आखिर उसने हमारे लिए अपना जीवन दिया ताकि हम उसकी महिमा में उसके भागीदार हो सकें। अपने घमण्डी कुरिन्थुस के भाइयों को लिखते हुए पौलुस ने यिर्मयाह नबी को उद्धृत दिया, "जो घमण्ड करे वह प्रभु में घमण्ड करे" (1 कुरिन्थियों 1:31; देखें यिर्मयाह 9:24)। काश परमेश्वर की संतान गलातियों 1:5 में पौलुस की संक्षिप्त प्रार्थना के अंत में विनम्र और समर्पित होकर "आमीन" कहने में संजीदगी से सहमत हो जाएं। सचमुच में ऐसा ही हो!

"आश्चर्य होता है" (1:6)

हम कई बार एक गीत गाते हैं जिसमें कहा गया है, "मैं यीशु नासरी की उपस्थिति में चकित होता हूं।"[60] कोई भी जो इस परमेश्वर-मनुष्य को जान लेगा वह सचमुच में चकित ही होगा। यीशु की महिमा संसार से पहले पिता के साथ थी, और उसी के द्वारा संसार को सृजा गया। पवित्र आत्मा और एक भक्त युवा यहूदी कुंवारी के माध्यम से वह देहधारी हुआ। यह सब बड़ी ही विनम्र परिस्थितियों में भूमध्य सागर के पूर्वी तट पर एक गुमनाम से देश में हुआ। यीशु अपने सांसारिक पिता के बढ़ई के काम को करते हुए बड़ा हुआ। फिर वह सदाचार और उस समझ को सिखाने के एक अभियान में लग गया जो तुलनात्मक रूप में आस-पास के संसार के धर्मशास्त्रियों से बढ़कर थी। एक ऐसा शिक्षक बनकर जो वैसा ही करता था जैसा वह सिखाता था उसने अपनी शिक्षा को साख दी इससे उसे करीब से जानने वालों पर अमिट प्रभाव पड़ा। उन्होंने गवाही दी कि वह मर गया था और असल में फिर से जी उठा। यह गवाही आज तक लोगों के दिलों और मनों पर छाई हुई है। इसकी सामर्थ संसार भर के लोगों को विश्वास के अपने दायरे में खींचकर उनके जीवनों को बदल डालती है।

पौलुस नासरत के इस यीशु को जानता था। उसने उसे देखा और उसकी आवाज को सुना था (प्रेरितों 9:4-6; 22:7, 8; 1 कुरिन्थियों 9:1)। केवल दमिश्क के मार्ग पर उस भव्य दर्शन में ही नहीं बल्कि उसके बाद के अवसरों पर भी (प्रेरितों 18:9, 10)। उसके लिए यीशु उस ज़मीन से जिस पर वह चलता था या जेल की दीवारों से जो रोमी साम्राज्य के मार्गों के साथ उसके अथक दौरों को रोकती थीं, बढ़कर वास्तविक और संतोषजनक था। ये दीवारें भी उस शुभ समाचार को जिसका उसने प्रचार किया था बढ़ने से रोक नहीं सकीं (2 तीमुथियुस 2:9)।

पौलुस यीशु मसीह पर तो चकित था ही, वह गलातिया के मसीही लोगों पर भी "आश्चर्य" करता था (1:6)। परन्तु उसका यह बाद वाला आश्चर्य नकारात्मक कारणों से था। (1) उन्होंने मसीह के अद्‌भुत अनुग्रह को छोड़ दिया था। (2) उन्होंने इतनी जल्दी छोड़ दिया। (3) उन्होंने व्यवस्था को मानने के व्यर्थ सुसमाचार के लिए छोड़ दिया था। प्रेरित की बातें मसीही लोगों को

इस संसार की किसी भी पेशकश के बदले में मसीह के अनमोल खज़ाने की सौदेबाज़ी न करने की चेतावनी देती हैं।

गलातियों की पुस्तक को लागू करने में सावधानी (1:6)

गलातियों की पुस्तक को बेशक हम पौलुस के "मसीही स्वतन्त्रता का घोषणा-पत्र" कह सकते हैं,[61] पर हमें इसकी शिक्षा को आज्ञा मानने की परमेश्वर की मांगों के प्रति ढीले रवैये को बढ़ाने में नहीं जोड़ना चाहिए। इसके अलावा हमें अपने भाइयों पर कर्मकाण्डी या प्रेमहीनता का आरोप लगाने के लिए इसकी शिक्षा का उपयोग नहीं करना चाहिए। हम कभी भी ईसेजेसिस (पवित्र शास्त्र में अपने ही विचार को पढ़ना) बनने के लिए एक्सेजेसिस (पवित्र शास्त्र का सही अर्थ निकालने की प्रक्रिया) की अनुमति कभी न दें।

परमेश्वर को मनाता हूं या मनुष्यों को ? (1:10)

1:10 में पौलुस ने कहा, "यदि मैं अब तक मनुष्यों को प्रसन्न करता रहता तो मसीह का दास न होता।" ये शब्द चाहे आज से दो हज़ार साल पहले के करीब लिखे गए थे, परन्तु इनमें आज मसीह का सुसमाचार सुनाने वाले हर व्यक्ति को ध्यान देना चाहिए क्योंकि वे जितने उस समय सच थे उतने ही आज भी सच हैं। सुसमाचार का कोई भी प्रचारक या सिखाने वाला जिसका उद्देश्य वही बातें करना है जो उसके सुनने वाले चाहते हैं, वह परमेश्वर की इच्छा नहीं बल्कि अपनी ही इच्छा पूरी करना चाहता है और निश्चय ही वह इसका जवाबदेह होगा। सबसे पहले तो उसे परमेश्वर की सेवा की आड़ में अपनी सेवा करने के भ्रष्ट उद्देश्य के लिए जवाब देना होगा। फिर उसे जवाब देना होगा कि कहीं उसने इसे नरम करके जिससे किसी को ठोकर न लगे या उसकी प्रसिद्धि कम न हो, संदेश को बिगाड़ तो नहीं दिया (2 तीमुथियुस 4:3, 4)। जिस प्रकार से हम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते (मत्ती 6:24), वैसे ही हम अपनी और प्रभु यीशु मसीह दोनों की इकट्ठे सेवा नहीं कर सकते। यदि हम मसीह के "दास" हैं तो हमारी निष्ठा उसी के साथ होनी चाहिए और हम ऐसी किसी भी चीज़ को जो उसके प्रति हमारे समर्पण में रुकावट बनती हो, छोड़ देंगे।

परमेश्वर की ओर से प्रकाशन (1:12)

"प्रकाशन" में परमेश्वर का किसी मानवीय माध्यम को संदेश (या कई बार दर्शन) देना शामिल होता है। फिर जब वह मानवीय माध्यम अपना मुंह खोलकर परमेश्वर के उस संदेश को आगे सौंपता है तो उसे परमेश्वर का प्रवकता या "भविष्यवक्ता" कहा जाता है और जो कुछ वह कहता है उसे "भविष्यवाणी" कहा जाता है।[62] भविष्यवाणी में हमेशा भविष्य के प्रकाशन नहीं होते। ये अज्ञात भूतकाल के बारे में परमेश्वर की प्रेरणा से दिए गए वचन हो सकते हैं। उदाहरण के लिए परमेश्वर ने सृष्टि के बारे में कुछ तथ्य मूसा पर प्रकट किए जिन्हें उसने उत्पत्ति की पुस्तक में लिख दिया। भविष्यवाणी किसी अज्ञात या नामालूम से सम्बन्धित भी हो सकती है। इसे सामरी स्त्री के साथ यीशु की मुलाकात से समझाया जाता है। उसने उस स्त्री को केवल उसके घटिया अतीत को ही नहीं बल्कि उसके वर्तमान जीवन में पाए जाने वाले पाप को भी प्रकट करके, स्तब्ध

कर दिया। उसका दर्द भरा जवाब था, "हे प्रभु, मुझे लगता है कि तू भविष्यवक्ता है" (यूहन्ना 4:16–19)। "भविष्यवाणी" के लिए यूनानी शब्द (*prophēteuō*) का अर्थ आवश्यक नहीं कि "समय से पहले बोलना" हो, बल्कि "के लिए बोलना" है। भविष्यवक्ता केवल परमेश्वर का या परमेश्वर के लिए मुखपत्र के रूप में काम करता था।

परम्परा (1:14)

"परम्परा" (*paradosis*) शब्द का अर्थ आवश्यक नहीं कि बुरा ही हो। इसका अर्थ केवल "सपुर्द की गई कोई चीज़" है। यह तो परम्परा का स्रोत है जो इसके महत्व को तय करता है।

पौलुस ने थिस्सलुनीकियों को "जो जो बातें तुम ने क्या वचन, क्या पत्री के द्वारा हम से सीखी हैं, उन्हें थामे रहो" (2 थिस्सलुनीकियों 2:15; देखें 3:6) बताने के समय इसी शब्द का इस्तेमाल किया था। प्रेरित और उसके सहकर्मियों ने इन नए मसीहियों को विश्वास में मज़बूत बनाने के लिए *ईश्वरीय* परम्पराएं सौंपी थीं। इसी प्रकार से कुरिन्थियों को पौलुस ने लिखा, "हे भाइयो, मैं तुम्हें सराहता हूं, कि सब बातों में तुम मुझे स्मरण करते हो: और जो व्यवहार में ने तुम्हें सौंप दिए हैं, उन्हें धारण करते हो" (1 कुरिन्थियों 11:2)।

परन्तु *मनुष्यों की* परम्पराएं पापपूर्ण हो सकती हैं जब उन्हें परमेश्वर का वचन बताया जाए और वे उसकी जगह ले लें (मत्ती 15:1–9)। ये पुरानी मान्यताओं पर आधारित मनुष्यों की पुरानी परम्पराएं या नई धर्म शिक्षा के आधार पर नई परम्पराएं हो सकती हैं।

यह आवश्यक है कि हम सब परम्पराओं का मूल्यांकन बड़ी सावधानी से करें। हम उन्हीं ईश्वरीय परम्पराओं को थामे रखें जो वचन में बताई गई हैं और मनुष्यों की झूठी शिक्षाओं को नकार दें। वास्तव में प्रेरितों की और परमेश्वर के वचन की परम्पराओं से हमें आशीष ही मिलेगी।

परमेश्वर का सर्वशक्तिमान होना (1:15)

1:15 में पौलुस ने लिखा कि परमेश्वर ने "[उसकी] माता के गर्भ ही से [उसे] ठहराया और अपने अनुग्रह से बुला लिया" था। क्या इस में उसकी अपनी कोई पसन्द नहीं थी? क्या कोई व्यक्ति उसे न करना चुन सकता है जो परमेश्वर के मन में पहले से तय हो? क्या परमेश्वर ने इस व्यक्ति की अपनी पसंद चुनने की आज़ादी छीन ली? रोमियों 9:19 में पौलुस के तर्कपूर्ण शब्दों में "फिर तू मुझ से कहेगा, 'तो फिर भी वह क्यों दोष लगाता है? क्योंकि उसकी इच्छा का सामना कौन कर सकता है?' " (NRSV)। बहुतों के सामने परमेश्वर के पूर्वज्ञान, पहले से तय करने और पहले से ठहराने के रूप में ऐसी बौद्धिक समस्याएं आई हैं (देखें 3:8; प्रेरितों 2:31; रोमियों 8:29, 30; 9:18; इफिसियों 1:5, 11)। पौलुस ने ऐसे प्रश्नों के साथ उलझने में समय नहीं बिताया। रोमियों 9:20 में उसने केवल इतना उत्तर दिया, "हे मनुष्य, भला तू कौन है जो परमेश्वर का सामना करता है? क्या गढ़ी हुई वस्तु गढ़नेवाले से कह सकती है, 'तू ने मुझे ऐसा क्यों बनाया है?' " सार यह है कि पौलुस कह रहा था कि "परमेश्वर को परमेश्वर ही रहने दो!" परमेश्वर के सीमित जीवों के रूप में हमें "सर्वशक्तिमान प्रभु" शब्द के अर्थ पर विचार करना चाहिए।

यदि परमेश्वर को भविष्य का मालूम न होता तो भविष्यवाणी जैसी कोई चीज़ न होती, जिससे हमें ऐसी बहुमूल्य प्रतिज्ञाएं मिलती हैं जो हमें "उस सड़ाहट से छूटकर जो संसार में बुरी अभिलाषाओं से होती है, ईश्वरीय स्वभाव के सहभागी" होने के (2 पतरस 1:4) योग्य बनाती हैं। परमेश्वर की अपनी आत्मिक समझ में हम जितना भी बढ़ जाएं उसके बावजूद ऐसे सवाल रहेंगे जिनका उत्तर हम नहीं दे सकते। बेशक उसके लिए हमारी तड़प बनी रहनी चाहिए और हमें यह समझना आवश्यक है कि परमेश्वर सचमुच में परमेश्वर है और उसके विचार और उसके तरीकों को हम पूरी तरह से कभी भी समझ नहीं पाएंगे (यशायाह 55:8, 9)। हम इस पर संदेह नहीं कर सकते कि वह हम से प्रेम करता है और हमारा उद्धार चाहता है। हम जानते हैं कि उसकी इच्छा यह नहीं है कि किसी का भी नाश हो बल्कि यह है कि सभी मन फिराएं (2 पतरस 3:9)। उसने सुस्पष्टता से मसीह के क्रूस के द्वारा इस इच्छा को दिखा दिया है। एकमात्र खुला प्रश्न यह है कि हम उसके प्रेम को मानकर विनम्रतापूर्वक अधीन होकर उसके मसीह के शासन के सामने अपने घुटने टेकेंगे या नहीं। हमें इसकी चाहे जितनी अधिक या कम समझ हो, पर हमें चाहिए कि उसकी असीम और अथाह समझ का सम्मान करें।

परमेश्वर का अलग किया हुआ पौलुस (1:15, 16)

पौलुस जो कलीसिया का बल्कि मसीह का भी सताने वाला था (प्रेरितों 9:3, 4) उसे अन्यजातियों के लिए परमेश्वर का विशेष दूत बनने के लिए उसकी माता की कोख से ही परमेश्वर द्वारा ही चुना गया था। क्यों? पौलुस के अनुसार यह पसंद अनुग्रह का जबर्दस्त नाप था (1:15)। गम्भीरता कम करने वाली एक बात यह थी कि उसने मसीही लोगों को सताने के समय "अविश्वास में अज्ञानता से काम किया" था (1 तीमुथियुस 1:13)। एक और बात यह थी कि सबसे बड़े पापी के रूप में उसमें "यीशु मसीह अपनी पूरी सहनशीलता दिखाए, कि जो लोग उस पर अनन्त जीवन के लिए विश्वास करेंगे उन के लिए मैं एक नमूना" बने (1 तीमुथियुस 1:15, 16)। यदि उसे जो इतना बुरा व्यक्ति था, विश्वास के द्वारा उद्धार मिल सकता था, तो किसी को भी मिल सकता है।

पौलुस को संसार में सुसमाचार फैलाने में प्रमुख भूमिका निभाने के लिए बुलाया गया था। परमेश्वर ने उसे ही क्यों अलग किया किसी और को क्यों नहीं? परमेश्वर की सेवा में इस विशेष काम के लिए उसी को क्यों चुना गया?

उसकी पृष्ठभूमि और तैयारी। उसका पालन-पोषण तरसुस में हुआ था जो कि अपने यहां शिक्षा के अवसरों के कारण "प्रसिद्ध नगर" था (प्रेरितों 21:39)। इसमें उसे यहूदी प्रवासियों की तथा सब पढ़े लिखे यूनानियों और रोमियों की सामान्य भाषा कोयनि यूनानी में माहिर होने का अवसर मिला। इस पृष्ठभूमि ने उसे "अन्यजातियों और राजाओं, और इस्राएलियों के सामने [यीशु का] नाम प्रगट करने" के लिए तैयार किया (प्रेरितों 9:15)।

पौलुस जन्म से रोमी नागरिक था जिसे पहले से ही अत्याधिक उपयोगी रोमी पासपोर्ट प्राप्त था। अपने आप को किसी भी प्रकार के शारीरिक कष्ट से बचाने के लिए वह जब चाहे इसका इस्तेमाल कर सकता था, जैसा कि प्रेरितों 22:24-29 में उसने किया भी।

उस समय के सबसे प्रतिष्ठित रब्बियों के गमलीएल के चरणों में शिक्षा पाने के कारण पौलुस

पुराने नियम के मूल इब्रानी धर्मशास्त्र से भी अच्छी तरह परिचित था। इसके अलावा वह रब्बियों द्वारा अपनी कक्षाओं में पढ़ाने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले पारम्परिक साहित्यक भाषा के साथ-साथ पलश्तिीन के आराधनालयों की आराधना में बोली जाने वाली भाषा अरामी भी बोल सकता था (प्रेरितों 22:2, 3)।

उसका स्वभाव और आत्मिकता। अपने विश्वासों के सम्बन्ध में वह स्वाभाविक रूप में निश्चित था। उत्साही जोश को जिसके कारण वह मसीही लोगों को सताने के लिए उतावला था, मसीह का प्रचार करने के लिए दूसरी ओर लगाया जा सकता था। इतने सारे सताव, कैदें, मारें, जहाजों के टूटने और ठुकराए जाने को भला और कौन सहन कर सकता था? (देखें 2 कुरिन्थियों 11:23-27.)

कलीसिया को सताने का काम करते हुए भी पौलुस अपने विवेक से काम करता था (देखें प्रेरितों 7:58-60; 8:3; 22:20; 26:9-14)। जब पौलुस को यह समझ में आ गया कि वह परमेश्वर के विरुद्ध काम करता है और "पैने पर लात मार" रहा है (प्रेरितों 26:14), तो उसने दिल से तौबा कर ली।

प्रेरित में प्रेम और क्षमा करने की क्षमता थी। यह बात विशेष रूप में उसके साथी यहूदियों पर लागू होती है जिन्हें उसने बार बार "हे भाइयो" कहकर सम्बोधित किया। सच्चाई से प्रेम करने वाला होने के कारण वह ऐसी बातें कहने को विवश था जो यहूदी लोगों के लिए ठोकर का कारण रही होंगी। बेशक कई बार उन्होंने उसे मार डालने की कोशिश की पर इसके बावजूद वह मसीह का सुसमाचार लेकर उनके बीच जाने का प्रयास करता रहा (प्रेरितों 28:17-29; रोमियों 9:1-5; 10:1-4)। उसके कोमल पक्ष ने उसे उन मण्डलियों के लिए जिन्हें उस स्थापित किया था गहरी चिंता जताने और विश्वास में उनका पोषण करने के योग्य बनाया (2 कुरिन्थियों 11:28; फिलिप्पियों 1:8; 1 थिस्सलुनीकियों 2:7, 8)।

सारांश। प्रभु ने पौलुस में अपना "चुना हुआ पात्र" बनने के लिए महानता के कच्चे माल को देखा (प्रेरितों 9:15)। कलीसिया के विरुद्ध उसके बड़े सताव के कारण मसीही लोग पौलुस को निराशाजनक ढंग से दुष्ट के रूप में देखते थे जिससे डरा जाना आवश्यक था (प्रेरितों 8:1-3; 9:1, 2, 13, 14, 26)। परन्तु प्रभु ने जो कि मनों का जानने वाला है यह महसूस किया कि वह एक अनमोल हीरा है। वह गुमराह था जिसे अपनी पीढ़ी का सबसे पहला सुसमाचार प्रचारक बनने के लिए सच्चाई में ढालना आवश्यक था।

हमें धन्यवाद करना चाहिए कि प्रभु को उस व्यक्ति में पाई जाने वाली भलाई का पता था जो प्रेरित पौलुस के अंदर थी। इस व्यक्ति का इस्तेमाल तुर्की, यूनान, मकिदुनिया, रोम और सम्भवतया स्पेन में बेशुमार अन्यजातियों में सुसमाचार पहुंचाने के लिए किया गया। पौलुस के द्वारा ही हमें परमेश्वर की प्रेरणा से लिखे गए कई पत्रों की आशीष मिली है जिनसे हमें सुसमाचार, मसीह की कलीसिया के स्वभाव और मसीही लोगों के रूप में रहने के ढंग की शिक्षा मिलती है।

कुप्रुसियों की भूमिका (1:21)

प्रेरितों 10 में कुरनेलियुस और उसके घराने के मनपरिवर्तनों के बाद, अन्यजाति मिशन के

आरम्भ में कुप्रुसियों (कुप्रुस टापू के लोगों) द्वारा निभाई गई भूमिका महत्वपूर्ण है। बरनबास एक कुप्रुसी (या साइप्रस वासी) था (प्रेरितों 4:36) और अंताकिया में "यूनानियों" या हेलेनिस्टों (यूनानी रीतियों और संस्कृति के साथ रहने वालों) में सुसमाचार सबसे पहले सुनाने वाले कुप्रुसी (साइप्रस वासी) और कुरेनी लोग ही थे (प्रेरितों 11:20, 21)। यरूशलेम की कलीसिया ने जब इन सब के बारे में सुना तो उन्होंने स्थिति का जायज़ा लेने के लिए बरनबास जो साइप्रस का रहने वाला था, ही को भेजा (प्रेरितों 11:22)। जब उसने अंताकिया में चेलों की गिनती बढ़ने और उन्हें सिखाने की आवश्यकता को देखा (प्रेरितों 11:23, 24) तो वह तरसुस को गया और वहां शाऊल (पौलुस) को काम में अपनी सहायता के लिए चुना (प्रेरितों 11:25, 26)। यह एक साल तक चलता रहा और ऐसा लगता है कि पहली सदी में यहूदी-अन्यजातियों की मिली-जुली कलीसिया बनी और यहीं के सदस्य सबसे पहले "मसीही" कहलाए (प्रेरितों 11:26)। अंताकिया में ही बरनबास और शाऊल को पवित्र आत्मा की ओर से अन्यजाति मिशन के लिए बुलाया गया (प्रेरितों 13:1, 2)। अंताकिया से भेजे जाने के बाद साइप्रस वासी बरनबास और उसका सहकर्मी शाऊल सिलुकिया के रास्ते जाने के बाद अपनी पहली मिशनरी यात्रा पर साइप्रस में ही रुके (प्रेरितों 13:4)।

मिशनरियों के रूप में रहना (1:21)

यरूशलेम में जाकर आराधनालयों में प्रचार करने के बाद पौलुस "सीरिया और किलिकिया के प्रान्तों में आया" (1:21)। प्रेरितों 9:29, 30 में लूका ने समझाया कि यूनानी भाषा बोलने वाले यहूदी "उसे मार डालने का यत्न कर रहे हैं" तो भाई उसे "कैसरिया ले आए और तरसुस को भेज दिया" जो कि किलिकिया में था। पौलुस की गतिविधियों से मिशनरी लोग क्या सबक सीख सकते हैं ?

मिशन के क्षेत्र में जाने का एक समय होता है और इसे छोड़ देने का भी एक समय होता है। पौलुस को कई प्रकार से अलग अलग क्षेत्रों के लिए बुलाया गया था। हम उसे अन्यजातियों के बीच उसके सामान्य काम पर लगने के भविष्यवाणी के "कमीशन" के द्वारा बुलाए जाने (प्रेरितों 13:1-3) और कुछ खास इलाकों में जाने के लिए कमीशन दिए जाने को देखते हैं जैसा कि मकिदुनिया के मामले में हुआ (प्रेरितों 16:9, 10)। कुछ घटनाओं में आत्मा ने उसे उस योजना के अनुसार करने से मना किया जो उसने सोच रखा था (देखें प्रेरितों 16:6, 7)। इस आरम्भिक समय में जब पौलुस यरूशलेम में था (1:18; प्रेरितों 9:29, 30), उसे जाना आवश्यक था क्योंकि उसकी जान खतरे में थी।

कई बार स्थानीय भाइयों को स्थानीय समस्याओं की गम्भीरता की जानकारी मिशनरी से बेहतर हो सकती है। बाहर से आने वाला व्यक्ति, चाहे वह पौलुस के जैसा समझदार और अनुभवी ही क्यों न हो, हो सकता है कि वह खतरे को भांप न सके। प्रेरितों 9 के इस विशेष मामले में पौलुस के प्रति स्थानीय यहूदियों के मन में बैठी घृणा थी। स्थानीय भाइयों ने न सिर्फ इस बात को समझा कि पौलुस के लिए यह कितना खतरनाक है बल्कि यह भी समझ लिया कि सुसमाचार प्रचारक स्थानीय कलीसिया की क्षमता को कितना आघात पहुंचा सकता है।

जब कोई मिशनरी अपने वर्तमान परिश्रमों के क्षेत्र को छोड़ता है तो इसका अर्थ आवश्यक

नहीं कि यही हो कि वह मिशन कार्य के अपने जीवन के लक्ष्य को ही छोड़ रहा है। इसका यहां पर केवल पौलुस के उदाहरण से ही नहीं बल्कि हमारे अपने समय के कई व्यक्तिगत उदाहरणों से भी पता चल सकता है।

यदि हमें यकीन हो कि हमें आत्मा के द्वारा भेजा गया और अगुआई दी गई है तो हमें याद रखना आवश्यक है कि आत्मा हमारे भाइयों की अगुआई भी करता है। पौलुस के मामले में यह विशेषकर महत्वपूर्ण था क्योंकि वह ऐसा व्यक्ति था जो पूरी तरह से अपने प्रभु को समर्पित था और सब कुछ छोड़ छाड़ उसके पीछे चलने के लिए, यहां तक कि मरने के लिए भी तैयार था।

अपनी सेवकाई में बहुत बाद में पौलुस ने अपने विचारों का मूल्यांकन करके कहा, "इच्छा तो है कि कूच करके मसीह के पास जा रहूं, जो कि बहुत ही अच्छा है" (फिलिप्पियों 1:23; NIV)। परन्तु प्रेरित ने दूसरों की वर्तमान आवश्यकताओं पर विचार किया और नरम पड़ गया, "परन्तु शरीर में रहना तुम्हारे कारण और भी आवश्यक है। और इसलिए कि मुझे इस का भरोसा है सो मैं जानता हूं कि मैं जीवित रहूंगा, बरन तुम सब के साथ रहूंगा जिस से तुम विश्वास में दृढ़ होते जाओ और उस में आनन्दित रहो" (फिलिप्पियों 1:24, 25)। पौलुस की प्राथमिकता मरकर अपने प्रिय प्रभु और स्वामी यीशु के साथ एक हो जाने की थी; परन्तु उसके मिशनरी परिश्रमों की पृथ्वी पर अभी आवश्यकता थी।

टिप्पणियां

[1]प्रभु पौलुस के साथ उसकी पूरी सेवकाई के दौरान बाद के अवसरों पर भी बात करता रहा (प्रेरितों 18:9, 10; 22:17–21; 23:11)। [2]स्पष्टतया रब्बी लोग खूनी रिश्ते के नाते इस्राएलियों के लिए "भाई" शब्द का इस्तेमाल करते थे, जबकि यहूदी मत में आने वालों के लिए "पड़ोसी" शब्द का इस्तेमाल किया जाता था। द *इंटरनैशनल स्टैंडर्ड बाइबल इनसाइक्लोपीडिया,* संशो. संस्क., संपा. ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1979], 1:550) में ड्वाइट मैलरी प्रैट एंड एवरेट एफ. हैरीसन, "ब्रदर।" [3]मसीह में पौलुस के महिला सहकर्मियों के उदाहरणों में फीबी (रोमियों 16:1, 2), प्रिसकिल्ला (प्रेरितों 18:2, 3; रोमियों 16:3) और यूओदिया और सुन्तुखे (फिलिप्पियों 4:2, 3) शामिल हैं। [4]दूसरी मिशनरी यात्रा पर लूका के फिलिप्पी में रुकने की झलक प्रेरितों के काम में "हम" वाले वचनों में मिलती है। वह फिलिप्पी में पौलुस की मिशनरी टीम ("हम") के साथ था (प्रेरितों 16:10–40), परन्तु दूसरे लोग ("वे") छोड़ कर चले गए (प्रेरितों 16:40)। लूका बाद में तीसरी मिशनरी यात्रा के समय उनकी टीम ("हम") साथ हो लिया । और लोगों के उदाहरणों में जिन्हें पौलुस ने काम के लिए विशेष स्थान पर छोड़ा था क्रेते में तीतुस (तीतुस 1:5) और इफिसुस में तीमुथियुस (1 तीमुथियुस 1:3, 4) शामिल थे। [5]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक इंग्लिश-लैक्सिकन ऑफ द न्यू टैस्टामेंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर* तीसरा संस्क., संशो. व संपा., फ्रैडरिक विलियम डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रैस, 2000), 288. [6]कैनथ एल. बोल्स, *गलेशियंस एंड इफिसियंस,* द कॉलेज प्रैस NIV कमैंट्री (जॉप्लिन, मिजोरी: कॉलेज प्रैस पब्लिशिंग कं., 1993), 31. [7]इस संसार के लोगों के लिए *kosmos* शब्द का इस्तेमाल किया जाता है। इस शब्द का अर्थ भौतिक संसार के लिए या विशेष रूप में मसीही संदर्भ में उनके लिए भी हो सकता है जो मसीही में नहीं हैं। यूहन्ना 3:16 में जब हम "संसार" के लिए परमेश्वर के प्रेम की बात पढ़ते हैं तो बेशक यह उन्हीं लोगों की बात होती हैं। जब यूहन्ना ने लिखा, "तुम न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो" (1 यूहन्ना 2:15) तो वह भौतिक क्षेत्र और उसके लोगों की बात कर रहा था, जिनका इस सांसारिक जीवन के पार आशा से कोई संबंध नहीं है और उनका अंत विनाश है। [8]एफ. एफ. ब्रूस, द *एपिस्टल टू द गलेशियंस,* द न्यू इंटरनैशनल ग्रीक टैस्टामेंट कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1982), 76. [9]बोल्स, 31. [10]फिलिप्पियों 3:9 में यूनानी धर्मशास्त्र में "व्यवस्था" से पहले निश्चयवाचक उपपद "the" नहीं

मिलता। NASB में उपपद को तिरछा रखकर इसका संकेत दिया गया है: "Not having a righteousness of my own derived from *the* Law." सुसमाचार की आज्ञा मानने के कर्मकाण्डी ढंग सहित कुछ लोगों ने उपपद के न होने से यह तर्क दिया है कि पौलुस सामान्य अर्थ में व्यवस्था की बात कर रहा था। परन्तु यह तर्क चलता नहीं है। यह बात खासकर रोमियों के नाम पौलुस के पत्र से स्पष्ट है कि मसीही लोग अपने स्वयं के कामों के द्वारा किसी भी प्रकार से उद्धार को कमा नहीं सकते हैं। (तुलना करें इफिसियों 2:8–10; तीतुस 3:4–6.) फिर भी रोमियों का इस्तेमाल करने के बावजूद यूनानी भाषा में उपपद न होने पर "law" शब्द के सामान्य उपयोग को अधिक बल देना बड़ी सावधानी से हो; क्योंकि इसके न होने के बहुत से कारण (अधिकतर व्याकरणीय) हैं। "Law" अंतिम रूप में मूसा की व्यवस्था को कहा गया है या नहीं उस वचन के संदर्भ से तय होता है जिसमें यह कहा गया हो।

[11]ओ. पॉमर रॉबर्टसन, द क्राइस्ट ऑफ द कॉवेंनेट्स (फिलिप्सबर्ग, न्यू जर्सी: प्रैसबेटेरियन एंड रिफॉर्म्ड पब्लिशिंग कं., 1980), 58. [12]1 कुरिन्थियों 12:8–10 में *allos* छह बार और *heteros* दो बार आता है। [13]बाउर, 990. [14]यह बात इस तथ्य से पुष्ट हो जानी चाहिए कि बरनबास का व्यवहार कुछ समय तक यहूदी मत की शिक्षा देने वालों से प्रभावित हुआ था, जिस कारण वह "उनके कपट में पड़ गया" (2:13)। [15]तुलना करें रोमियों 9:3, जिसमें एक इच्छा शामिल है, परन्तु उस वचन में क्रिया के साधारण रूप *einai* का इस्तेमाल हुआ है। [16]प्रेरितों 11:18 में यूनानी क्रिया शब्द *hēsuchazō* के अनुवाद "चुप रहे" का अर्थ हमेशा बिल्कुल खामोश हो जाना नहीं होता। कुछ संदर्भों में यह विरोध या बहस बंद करने के विचार को दिखाता है (देखें प्रेरितों 21:12–14)। प्रेरितों 11:18 में इस शब्द को असल में बोलने के द्वारा लिया गया है जहां पर महिमा परमेश्वर को दी गई है। एफ. एफ. ब्रूस ने इस वचन पर यह टिप्पणी देने की पेशकाश की है: "उनकी आलोचना बंद हो गई; उनकी आराधना आरंभ हो गई। ... इसी प्रकार से हम अनुमान लगा सकते हैं कि पतरस के कार्य की स्वीकृति यरूशलेम की कलीसिया के उत्साही पद और सूची के बजाय पतरस के साथी-प्रेरितों की ओर से पूरे दिल से उसके काम को स्वीकृति था" (एफ. एफ. ब्रूस, *कमैंट्री ऑन द बुक ऑफ एक्ट्स,* द न्यू इंटरनैशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामेंट [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1954], 236)। [17]खतने पर दृष्टिकोण विशेषकर यूनानियों में आम था, जो इस प्रथा को शारीरिक सम्पूर्णता का अंगभंग मानते थे। [18]*Eti* का ऐसा ही एक इस्तेमाल 5:11 में मिलता है: "परन्तु हे भाइयो, यदि मैं *अब तक* खतना का प्रचार करता हूं तो क्यों *अब तक* सताया जाता हूं?" (जोर दिया गया है)। [19]अन्य संस्करणों में ये अनुवाद हैं:"मनुष्य का सुसमाचार नहीं" (RSV); "मनुष्य की ओर से नहीं" (NRSV); "केवल मानवीय तर्क के आधार पर नहीं" (NLT); और "कोई मानवीय हस्तक्षेप नहीं" (फिलिप्स)। [20]1 कुरिन्थियों 11:23 और 15:3 में पौलुस ने उस जानकारी के लिए जो उसे "पहुंची" थी और उसने आगे कलीसिया को पहुंचा दी *paralambanō* शब्द का इस्तेमाल किया। पहली नजर में उसने स्पष्ट कर दिया कि यह जानकारी "प्रभु से मिली थी।" दूसरी घटना की जानकारी के लिए भी स्रोत्र प्रभु को ही माना जाना चाहिए।

[21]बोल्स, 40. [22]मिशनाह *एबोथ* 2:8. [23]क्रिया शब्द *ioudaizō* जिसका अर्थ "यहूदी धार्मिक नियमों के अनुसार रहना" है नये नियम में ही केवल एक और बार मिलता है (2:14); इससे मेल खाता विशेषण शब्द (*ioudaikōs*, "यहूदियों का") केवल एक बार मिलता है (तीतुस 1:14)। क्रिया विशेषण (*ioudaikos*) जिसका अर्थ "एक यहूदी की तरह" या "यहूदी रीति के अनुसार" है, भी केवल एक और बार मिलता है (2:14)। [24]मिशनाह *एबोथ* 3:12. [25]"पात्र" के लिए शब्द (*skeuos*) का अनुवाद KJV "बर्तन" हुआ है और इस संदर्भ में "माध्यम" (NASB-अनुवादक) बेहतर अनुवाद है। इस शब्द का अर्थ जार या बर्तन ("पात्र") हो तो सकता है पर यहां यह किसी विशेष उद्देश्य के लिए किसी व्यक्ति के इस्तेमाल होने का संकेत देता है ("माध्यम")। [26]"अनुग्रह और प्रेरिताई" को हैंडियाडिस अर्थात अलंकार के रूप में समझा जाना चाहिए जिसमें दो शब्दों को किसी एक विचार को व्यक्त करने के लिए समुचय बोधक के द्वारा मिलाया जाता है। और सही अनुवाद होगा "प्रेरिताई का अनुग्रह।" [27]3:8 में *ethnos* दो बार मिलता है और इसका अनुवाद "अन्यजातियों" और "जातियां" दोनों हुआ है। [28]इफिसियों 4:17—6:20 लोगों के विशेष आचार सम्बन्धी व्यवहार को दिखाता है जिसकी उम्मीद "मसीह से सीखने" वालों से की जाती है। [29]प्रेरितों 8:35 में सुसमाचार प्रचारक फिलिप्पुस ने हब्शी खोजे को "यीशु का सुसमाचार सुनाया" और उस व्यक्ति ने बपतिस्मा दिया जाने को कहा। [30]अफ़सोस की बात है कि कुछ संस्करणों में "तुरन्त" शब्द का अनुवाद नहीं किया गया (NRSV; GNT; NCV; CEV), स्पष्टतया इसलिए कि अनुवादकों ने इसे अनावश्यक या फालतू जाना।

[31]अरब प्रायद्वीप का अधिकतर भाग चाहे रेगिस्तान ही है परन्तु हमें इसे पूरी तरह से बंजर या ऐसा नहीं मानना चाहिए जिसमें काफ़ी आबादी न रह सकती हो। पश्चिम (सीरिया, मिसर, और इथोपिया) और पूर्व (फारस और भारत) के बीच यह मुख्य व्यापार मार्ग पर स्थित था इसलिए इसे वहां से गुज़रने वाले कारोबार से लाभ होता था और कारोबार के लिए मेवों, खुशबूदार लकड़ी, धूप, मसालों तथा अन्य चीज़ों सहित इसके अपने कई उत्पाद थे। [32]रॉबर्ट एल. जॉनसन, *द लैटर ऑफ पॉल टू द गलेशियंस,* द लिविंग वर्ड कमैंट्री (आस्टिन, टैक्ससः आर. बी. स्वीट कं., 1969), 50. [33]मैरिल एफ. अंगर, *द न्यू अंगर'स बाइबल डिक्शनरी,* संपा. आर. के. हैरिसन (शिकागोः मूडी प्रैस, 1988), 91. [34]अरब के राजा "अरितास" के सम्बन्ध में सामान्य शीर्षक का इस्तेमाल किया जाता था, जैसे "कंदाके" (देखें प्रेरितों 8:27) इथोपिया की कई रानियों की उपाधि थी और "कैसर" या "सीजर" का इस्तेमाल रोम के कई शासकों के लिए किया जाता था। अरितास चतुर्थ गलील और पिरिया के चौथाई के हाकिम हेरोदेस अंतिपास (4 ई.पू.–39 ई.) का ससुर था। परन्तु अंतिपास ने हेरोदियास से शादी करने के लिए अरितास की बेटी को तलाक दे दिया था (देखें मरकुस 6:17)। विश्वासघात के इस कार्य से अति खेदित हुए अरितास ने अंत में अंतिपास पर हमला करके उसकी सेना को तबाह कर दिया। (जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 18.5.1.)। यह विवाद का विषय है कि अरितास ने कुछ समय के लिए वास्तव में दमिश्क पर नियन्त्रण कर लिया या अपने मतहित के माध्यम से नगर पर उसका प्रभाव था (2 कुरिन्थियों 11:32, 33)। कुछ लोगों का अनुमान है कि रोमी सम्राट कलिगुला (ई. 37–41) ने अरितास को दमिश्क उपहार स्वरूप दिया था। [35]आम तौर पर यह माना जाता है कि प्रेरितों 9:26–29 में लूका द्वारा बताया गया यरूशलेम में जाना गलातियों 1:18, 19 वाला ही है। [36]लियोन मौरिस ने लिखा है, "आरम्भिक विश्वासियों तथा उनके अगुओं के साथ किसी भी प्रकार के सम्पर्क का यह ज़ोरदार खण्डन इस बात को स्पष्ट करता है कि पौलुस ने मसीही संदेश की समझ अपने से पहले के किसी मसीही से नहीं पाई थी। विशेषकर उसने उन से जो उससे पहले प्रेरित थे न तो सीखा था और न ही कमीशन पाया था।" (लियोन मौरिस, *गलेशियंसः पॉल'स चार्टर ऑफ क्रिश्चियन फ्रीडम* [डाउनर्स ग्रोव, इलिनोयः इंटरवर्सिटी प्रैस, 1996], 57)। [37]इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए यह अनोखी बात है कि कुछ टीकाकारों का मानना है कि पौलुस को यह सुनिश्चित करने के लिए कि कहीं वह कुछ और तो प्रचार नहीं कर रहा पतरस तथा अन्य प्रेरितों के स्वीकृत प्रचार के साथ जिससे कोई तनाव या झगड़ा हो सके पतरस (कैफा) से सलाह लेना आवश्यक था। [38]इस पर और चर्चा के लिए कि पौलुस यरूशलेम में केवल पन्द्रह दिन क्यों रुका, 1:20 पर टिप्पणियां देखें। [39]कलीसिया की परम्परा के अनुसार पतरस की शिक्षा ने सुसमसाचार के मरकुस के विवरण के आधार का काम किया जिसमें यीशु की पृथ्वी की सेवकाई का विवरण है (यूसबियुस *एक्लेसियेस्टिकल हिस्ट्री* 2.15; 3.39; 5.8; 6.14, 25; टरटुलियन *अगेंस्ट मार्सियनस* 4.5.)। [40]बहुत से मामलों में पौलुस को प्रमुख नागरिकों, हाकिमों, राजाओं और यहां तक कि अंत में कैसर के सामने भी अपनी गवाही देने के लिए बुलाया गया (प्रेरितों 9:15; 13:7; 17:22; 19:31; 23:11; 24:1, 10, 24, 25; 25:9–12, 23; 27:23–25)।

[41]जे. बी. लाइटफुट ने पूछा, "क्या याकूब को यहां प्रेरित दिखाया गया कि नहीं? क्या हम यह अनुवाद करें, 'मैं याकूब के सिवाय किसी और प्रेरित से नहीं मिला,' या 'मैं केवल याकूब से ही मिला किसी अन्य प्रेरित से नहीं'?" चाहे लाइटफुट का मत था कि याकूब एक प्रेरित था परन्तु उसने माना कि और सम्भावना भी है और उसने आगे कहा, "इसका अर्थ यह हुआ कि ऐसा लगता है कि संत याकूब को यहां प्रेरित कहा गया, चाहे इसलिए इसका अर्थ यह नहीं है कि वह उन बारहों में से एक था" (जे. बी. लाइटफुट, *द एपिस्टल ऑफ़ सेंट पॉल टू द गलेशियंस,* क्लासिक कमैंट्री लाइब्रेरी [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1957], 84–85)। [42]और जानकारी के लिए, देखें *अतिरिक्त भागः नये नियम में प्रेरितों का रुतबा और भूमिका,* पृष्ठ 192–195। [43]ब्रूस, *एक्ट्स,* 206. [44]डेविड जे. विलियम्स, *एक्ट्स,* न्यू इंटरनैशनल बिब्लिकल कमैंट्री (पीबॉडी, मैसाचुसेट्सः हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1990), 176. [45]जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे, *ए न्यू कमैंट्री ऑन एक्ट्स ऑफ एपॉस्टल्स* (डिलाइट, आरकैंसाः गॉस्पल लाइट पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं), 1:189. [46]मत्ती 5:33–37 और 23:16–22 में यीशु ने शपथों के दुरुपयोग को गलत ठहराया। यहूदी लोग आम तौर पर ऐसी चीज़ों की शपथ खाते थे जो परमेश्वर से बड़ी नज़दीकी से जुड़ी होती थीं (मन्दिर, वेदी और स्वर्ग) और फिर इन शपथों को ऐसे मानते थे जैसे वे मान्य न हों। शायद "कभी शपथ न खाना" की आज्ञा में कुछ अत्युक्ति को समझा जाना चाहिए (मत्ती 5:34)। आखिर परमेश्वर की प्रेरणा से दिए गए पौलुस के सभी पत्रों में सच्चाई से खाई गई शपथों की फुहार मिलती है (रोमियों 1:9;

1 कुरिन्थियों 15:31; 2 कुरिन्थियों 1:23; गलातियों 1:20; फिलिप्पियों 1:8; 1 थिस्सलुनीकियों 5:27)। इसके अलावा यीशु ने महायाजक को उत्तर दिया जिसने उसे शपथ दी थी (मत्ती 26:63, 64), और परमेश्वर पिता को शपथ खाते हुए दिखाया गया है (इब्रानियों 6:17, 18)। [47]यदि गलातियों का पत्र पहले (लगभग 48-49 ई.) लिखा गया था, तो यह नये नियम की पुस्तकों में पहला हो सकता है। इसलिए उस समय उपलब्ध पवित्र शास्त्र में पुराने नियम की पुस्तकें थीं। [48]*द न्यू इंटरनैशनल डिक्शनरी ऑफ द बाइबल,* पिक्टोरियल संस्क., संपा. जे. डी. डग्लस एंड मैरिल सी. टैनी (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1987), 909-11 में स्टिवन बरबास, "सील।" मोहरों के इस्तेमाल के दस्तूर की बाइबल में पुष्टि की जाती है (1 राजाओं 21:8; नहेम्याह 9:38; 10:1; एस्तेर 3:12; 8:8; यिर्मयाह 32:11-14; दानिय्येल 6:17; मत्ती 27:66; प्रकाशितवाक्य 5:1)। किसी मोहर के ठप्पे का इस्तेमाल किसी चीज़ के सुरक्षित या स्वीकृत होने का संकेत देने के लिए भी किया जाता है (रोमियों 15:25-28; 1 कुरिन्थियों 9:1, 2; इफिसियों 1:13, 14; 4:30; प्रकाशितवाक्य 7:2-4)। [49]जॉन मैक्रे, *पॉल: हिज़ लाइफ एंड टीचिंग* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर अकैडमिक, 2003), 73-74, 94. [50]*Hellēnistēs* जैसा कि यहां प्रयुक्त हुआ है, यहूदी को कहा जाता था जिसने न केवल यूनानी भाषा को बल्कि यूनानी जीवन शैली को भी अपनाया हुआ होता था। यह खासतौर पर उन यहूदियों के लिए इस्तेमाल किया जाता था जो इस्राएल के बाहर अलग अलग देशों में रहते थे। इनमें से कई तो फलस्तीन की स्थानीय भाषा जो प्रभु की भाषा भी थी, अरामी इतनी इच्छी नहीं बोल पाते थे।

[51]नासरत का छोटा सा नगर उपेक्षा का शिकार ही रहता था (यूहन्ना 1:46)। "नासरी" शब्द चाहे कई बार यह संकेत देता है कि यीशु नासरत का रहने वाला था (प्रेरितों 2:22), पर यह भी हो सकता है कि मसीही लोगों को "घृणित नाम" के रूप में "नासरी" कहा जाता था (प्रेरितों 24:5) क्योंकि वे "यीशु को" मानते थे "जिसके नासरत से होने की परिकल्पना ने उस पर झूठे मसीहा होने का ठप्पा लगा दिया था" (अंगर, 906-7)। [52]"चलती" के लिए यूनानी शब्द (*poreuomai*) का अनुवाद प्रेरितों 9:31 "चलती" (KJV; NKJV) या "जीती" (NRSV; NIV) हुआ है। क्रिया शब्द में चाहे बार-बार "आने" या "जाने" विशेषकर पैदल चलने का विचार है पर यहां इसका इस्तेमाल किसी के आचरण या जीने के ढंग के लिए मुहावरे के रूप में हुआ है। [53]*द इंटरपरेटर'स डिक्शनरी ऑफ द बाइबल,* संपा. जॉर्ज ऑर्थर बटरिक (नैशविल्ल: अबिंग्डन प्रैस, 1962), 1:627-28 में मैशल्ड जे. मैलिंक, "सिलसिया।" [54]ब्रूस, *गलेशियंस,* 103. [55]रिचर्ड एन. लॉन्गनेकर, *गलेशियंस,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 41 (नैशविल्ले: थॉमस नेलसन पब्लिशर्स, 1990), 42. [56]कई प्रारम्भिक हस्तलेखों में चाहे लूका 22:43, 44 नहीं मिलता है परन्तु NKJV, NIV और NASB में अनुवादकों ने इन आयतों को शामिल करना उचित समझा। मत्ती 26:37, 38 से यह स्पष्ट है कि यीशु ने मन की अत्याधिक पीड़ा को सहा। हम इब्रानियों 5:7 के शब्दों की तुलना कर सकते हैं: "उसने अपनी देह में रहने के दिनों में ऊंचे शब्द से पुकार पुकारकर, और आंसू बहा बहाकर उससे जो उस को मृत्यु से बचा सकता था, प्रार्थनाएं और बिनती की और भक्ति के कारण उस की सुनी गई।" [57]यीशु के बलिदान में शामिल एक और अवधारणा "प्रायश्चित" (*hilastērion*), पाप से परमेश्वर की घृणा के कारण उसके क्रोध से दूर होने की प्रक्रिया है। इससे जुड़ा शब्द "पश्चाताप" (*hilasmos*) है जिससे मनुष्य के पाप का मिटाया जाना प्रभावी हुआ। पहला शब्द परमेश्वर के प्रति आदर है और दूसरा हमारे पाप के प्रति आदर। यीशु की मृत्यु हमारे पाप की समस्या को सुलझाने के लिए हुई जिसके द्वारा हम आत्मिक रूप में मरे हुए थे (इफिसियों 2:1-7)। अब हम आज्ञाकारी विश्वास में मसीह में बपतिस्मा लेकर "नये जीवन की चाल चलने" के लिए जी उठ सकते हैं (रोमियों 6:1-4)। [58]आइज़क वाट्स, "ओ गॉड, अवर हेल्प इन ऐज पास्ट," *सौंग्स ऑफ फेथ एंड प्रेज़,* कम्पो. एंड संपा. ऑल्टन एच. हावर्ड (वेस्ट मोनरो, लुइसियाना: हावर्ड पब्लिशिंग कं. 1994)। [59]KJV और NIV में इस शब्द का इस्तेमाल शैतान के लिए गया गया है (देखें यूहन्ना 12:31; 14:30; 16:11)। [60]चार्ल्स एच. गैब्रियेल, "आई स्टैंड अमेज्ड," *सौंग्स ऑफ फेथ एंड प्रेज़,* कम्पो. एंड संपा. ऑल्टन एच. हावर्ड (वेस्ट मोनरो, लुसियाना: हावर्ड पब्लिशिंग कं., 1994)।

[61]मैरिल सी. टैनी, *गलेशियंस, द चार्टर ऑफ क्रिश्चियन लिबर्टी* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1957)। [62]देखें निर्गमन 4:10-16; यिर्मयाह 1:4-9; मरकुस 13:11; यूहन्ना 11:49-51; 1 कुरिन्थियों 14:29, 30; 1 पतरस 1:10-12; 2 पतरस 1:19-21; प्रकाशितवाक्य 1:1-3.